प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध।

मिलनेका पता
जैन श्वेताम्बरी तेरापन्थी सभा।
११५ कैनिङ्ग ष्ट्रीट,
कलकत्ता।

❋ प्रस्तावना ❋

॥ श्री जिनाय नमः । श्रीसद्गुरुभ्योनमः ॥

इस संसार रूपी महा अरण्य में अनादि-काल से जीव श्रीजिन प्ररूपित मार्ग से विमुख होके कुगुरु दीक्षा धारियों की संगति से कुमार्ग अङ्गीकार कर परिभ्रमण कर रहा है, नरक निगोदादि के अनन्तानन्त दुःखों का उप भोगी हो अपनी पवित्रात्मा को पाप कर्मरूप अशुचि से अपवित्र करता है, ज्ञान दर्शन चारित्रादि निजगुणों को विसार पञ्च इन्द्रियों की विषय विकारों में लिप्त होके उन्हें ही अपना कर्त्तव्य समझ रहा है, जैसे कोई मनुष्य मदिरा पान के नशे में पागल होके अपने अच्छे स्थानादों की सुख सय्या को छोड़ महा दुर्गन्ध भूमिको ही सुख सय्या समझ किसी चतुर पुरुष का कहना न मान वहीं लोटना अपना परम कर्तव्य जानता है ऐसे ही जीव मोह मिथ्यात्व रूपी नशेकी मगरान्ध में मतवाला बन जिन कथित सुख सय्या को छोड़ इन्द्रियों के पाप भोगादि सय्या को ही सुख सय्या जान उसही में रङ्गरत्ता रहना परमावश्यकीय कार्य्य समझता है, यदि सत्य और स्वच्छ वीर मार्ग में चलने वाले महापुरुष शुद्ध निःस्पृही मोक्ष मार्ग बतावें तो उलटी उन्ही महात्माओं को न मान कर उन निरारम्भी निष्परिग्रहों की निन्दा करने को तत्पर बने रहते हैं, किन्तु जिन कथित मार्ग क्या है इस को पहचानने की कोशिश नहीं करते, हमारी मार्ग जिन कथित मार्ग से एकदम विरुद्ध है इसलिए चतुर्गति संसार अटवी में भ्रमण करने वालों को मुक्ति मार्ग अच्छा नहीं लगता है यदि कभी वीतराग मार्ग जानने की कोई लघु कर्मी जीव इच्छा करे तो- ह्लानाचारी

कुगुरू कुदृष्टान्त लगाके भोले भोलों को बहका देते हैं, परन्तु स्वार्थी और विद्वान पुरुष तो सत्या सत्य का निर्णय किये बिना नहीं रहते, जिन शुद्ध कन्या को संसार के सुखों से अरुचि हो गई है वे समझते हैं कि जितने जितने सावद्य योगों का त्याग किये सो धर्म और आगार रक्खा सो अधर्म है, जिस कार्य को साधु मुनिराज सावद्य जानके त्यागते हैं उस कार्य को करने कराने और अनुमोदने में पाप है, जिन आज्ञा में धर्म आज्ञा बाहर अधर्म श्रद्धना ही सम्यक्त्व है, जिस कार्य की जिन तथा मुनी आज्ञा देते नहीं, और अनुमोदना भी नहीं करते तथा अनुमोदना करने से साधु को प्रायश्चित्त आवे वो वही कार्य गृहस्थ करे करावे और भला जाने तो एकान्त पाप है, बस यही जिन मार्ग की कुञ्जी है इसे आप अच्छी तरह से जान लिया है उसी को निर्ग्रन्थ प्रवचन अर्थ और परमार्थ है।

सद्गुरुओं ने कृपा पूर्वक भव्य जीवों को संसार रूपी समुद्र से तैरने के लिये जिनागमानुसार अनेक ग्रन्थ रचित ऐसे महान उपकार किया है इनके लिये उन महापुरुषों को जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है निन्दक लोक भले ही उन जिनेन्द्रों की निन्दा करो परन्तु जो संसार मार्ग से विमुख और मोक्ष मार्ग के सन्मुख विचरते हैं सो तो उनका हृदय से आदर करते हैं, स्वामी श्री भीखनजी के चतुर्थ पाट श्रीमद्जयाचार्य (श्री जीतमलजी स्वामी नाम) महा बुद्धिमान और शास्त्र वेत्ता हुए हैं उन्होंने भगवती आदि कई सूत्रों की जोड़ ढाल बंध राग में भाषा में सूत्रों के जिन अर्थों को यथा तथ्य प्रगट किया है तथा अनेक ग्रन्थ बनाये हैं जिन्हें पढ़ने सुनने

में न्यायाश्रयीयों को तत्त्वा तत्त्व का सपष्ट ज्ञान होता है, यह हित शिक्षावली "प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध,, स्वामी का ही बनाया हुआ है

॥ प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध बनने का कारण ॥

सम्वत् १६११ की साल में अजीमगंज (मकसुदाबाद) शहर में साधु कालूरामजी १ प्रश्न पत्रि का ५२ दोहा में बनाके लाड नों के श्रावकों को स्वामी श्री जीतमलजी महाराज से मालुम करने को भेजा जिसकी नकल—

॥ प्रश्न पत्रिका ॥

॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ दोहा ॥

चरण कमल जिन राज का, जामें मुज मन लीन ।
मधु कर जिहां गुंजत रहे, ज्ञाना मृत रसपीन ॥१॥
नाभेयादिक जिनेश्वरा, तीर्थंकर चोवीश ।
गणधर पाठक साधु पद, यावत बिश्वा वीश ॥२॥
जिनवर भाषित शुद्ध नय, आगम उदधि अपार ।
भ्रमत इण कलि काल में जिन प्रतिमा आधार ॥३॥
स्वर्ग निवासी देवगण, वलि पाताल कुमार ।
शाश्वत जिन प्रतिमा भणी, नित प्रति करत जुहार ॥४॥
एहवी प्रतिमा जिन तणी, प्रणमी तेहना पाय ।
पत्र लिखु प्रीति प्रेम सुं, मुनिवर नां गुण गाय ॥५॥

क्रोध लोभ मद मोह सवे, त्यागी विषय विकार ।
जीत मल महाराज कूं, नमत सकल नरनार ॥६॥
दोष बैंयालीश टाल ते, लेते शुद्ध आहार ।
भवि जन कु प्रति बोधता, विचरे धरा मझार ॥७॥

॥ सोरठा ॥

तीन करण शिर धार, जीते बावीश परि सह ।
जपते दिल नवकार, शुद्ध करि संजम निर वहे ८

॥ दोहा ॥

सतावीश गुणे करी, पालो निज आचार ।
पच महाव्रत पालता, एहवा तुम अणगार ॥९॥
निर जित मद उनमाद पणो, वार्जित विषय विकार ।
तार्जित कर्मादिक अशुभ, गार्जित नाण उदार ॥१०॥
सहर लाडणुं अति भलो, विचरो तिहां धर नेह ।
अमति वच विहार करी, बेठा सम्बर गेह ॥११॥
तुम गुण गण मकरंद से, भविजन भमर लोभाय ।
देश विदेशे मानवी, कर जोडी गुण गाय ॥१२॥
में पिण गुण श्रवणे सुणी, भेटण की मन चाय ।
ते दिन सफल गीणिसहूं, वंदी तुम ग पाय ॥१३॥
कर्म ईंधन कूं जालवा, प्रत्यक्ष अग्नि समान ।
इन्द्रिय पांचु वश करी, एहवा तप की खान ॥१४॥

गुण सगला तुम अङ्ग में, दीखत है प्रत्यक्ष ।
आगम अर्थ विचार के, किम ताणो इक पक्ष ॥१५॥
पक्षा पक्ष कोइ मत करो, ज्ञान दृष्टि मनलाय ।
जिनवर प्रतिमा देखता, दुःख दोहग टलजाय ॥१६॥
च्यार निक्षेपा जिन कह्या, भाव थापना नाम ।
सप्त नये करी देखल्यो, वखाण ठामों ठाम ॥ १७ ॥
अम्बड श्रेणिक राय तिम, रावण प्रमुख अनेक ।
विवध पर भक्ति करी, पाम्या धर्म विवेक ॥१८॥
पंचम-अंगे भाखियो, प्रगट पणें अधिकार-।
सूर्याभे जिन वंदिया, राय प्रश्नेणी मजार ॥ १९ ॥
विजय देवता ये करी, जिन पूजा जिन राज ।
पक्ष पात कू छोडके सारो आतम काज ॥ २० ॥
छठे ज्ञाता अङ्ग में, द्रोपदी पांडव नार-।
मन वच काया वश करी, पूज्या जिन इकतार ॥२१॥
जंघा विद्या धारणा, मुनिवर गुण की खान-।
ते पिण प्रतिमा वंदिता, पंचम अङ्ग वखान ॥२२॥
जिन प्रतिमा जिन सारखी, भाख्यो श्री महावीर ।
कोई शङ्का मत आणज्यो, जिम पामो भवतीर ॥२३॥
जिनवर मत स्याद्वाद है, मत जाणो करी एक ।
दया दान मन धारल्यो, जड आवे विवेक ॥२४॥

जीव दया पाल्या थकां, निश्चै होय उपगार ।
दया धर्म को मूल है, एहयो आगम सार ॥२५॥
घात करता जीव की, छोडावे कोई जाय ।
अभय दान तेह नैं कह्यो, आगम में जिन राय ।२६।
ज्यो न छुडावो जीव कूं, तो अनु कपा नांय ।
अनु कंपा बिन जीव कूं, समकित पुष्टि न थाय ।२७।
गोशालो जलता थका, जिनजी दियो विचार ।
शीतल लेस्याये करी, तेजु लेस्या वार ॥ २८ ॥
ज्यानें कहता चूकिया, ते तो मिथ्या वात ।
कल्पातीत स्वभाव है, तीन लोक के नाथ ॥२९॥
नेम कुँवर तोरण चढ्यां, देखी जीव विनाश ।
अनु कपा मन लाय के, छोडाई पशु पाश ॥३०॥
आप बडे अणगार हो, पिण ए मोटी खोट ।
ज्यो नवि जीव दया करो, बधे पाप शिर पोट ।३१।
पच अधिक चालीशतो, कह्या सूत्र जिन राय ।
द्वात्रिंश तुम्ह मानता, कुण हेतु के न्याय ॥ ३२ ॥
भाखा नहिं सूत्र में सहु, आगम के नाम ।
ते बत्तीशां बीच है, देखो चित करी ठांव ॥ ३२ ॥
सांचा बत्तीश मानता, और न मानों सांच ।
के कोइ प्रगटयो ज्ञान तुम्ह, अथवा मन की खांच ।३४।

सत्य परुपणा ज्यों करो, तो मानो महाराज। गहन
अर्थ आगम तणा, भाख्या श्री जिन राज ॥३५॥
मुखपती मुख बाधता, कुण सूत्रें अनुसार ।
मनकी भ्रमता मिटी नहिं, ऐर विषम प्रकार ॥३६॥
स्तवसमाके संजोग सुं, उपजत जीव असख्य ।
जीव समूर्च्छिम इन्द्रियन, यामें नहिं को वक ।३७।
गण धर गोतम स्वाम कुं, मिया देवी कह्यो एम।
मुख बांधो वस्त्रें करी, गंध न आवें जेम ॥ ३८ ॥
ज्यों पहलां बंधी हुंती, वलि बंधन किम होय ।
एह व्यतिकर तुम जाण जो, सूत्र विपाके जोय ।३९।
जम्मा छिंक। कारणें, मुख ढांके मुनि राय ।
दशवें कालिक सूत्र में, देखो मन चितलाय ।४०।
सूत्र सभे तुम देखल्यो, वधण का नहिं पाठ ।
भगवती ज्ञाता आदि में, साख सूत्र की आठ ।४१।
इत्यादिक सूत्रा तणा, मानो नहिं वचन्न ।
आपं मते नहि मानता, कररयो लाख जतन्न ।४२।
लिख्या अजीमगंज सहर सुं, पत्र आधिक उच्छरंग ।
खमत खामणा मान ज्यो, करि तीन करण इक सग ४३
मुनि गुण अति सुंजं अपर्पार, कैसे लिखुं वणाय।
जैसें जल सव उदधि को, घट विच नाहिं समाय ।४४।

कुशल खेम वर्ते तिहां, धर्म थकी जय कार ।
इहां पिया सु गुरु पसाय थी, आणंद हरष अपार ।४५।
भक्ति पत्र भावे लिख्यो, धरज्यो चित्त अधिकाय ।
अधिको ओछो ज्यो हुवे, ते खम ज्यो मुनिराय ।४६।
लिखज्यो उत्तर एह नो, मत धरज्यो मन रीश ।
मुज मति सारू में लिख्यो, धरज्यो मन सु जगीश ४७
एहवि परूपणा ज्यो करो, तो होय लाभ अपार ।
मुग्ध जीव संसार का, उतरे पैले पार ॥ ४८ ॥
देखो बुटे रायजी, तिम वलि आतम राम ।
त्यागी मन भ्रम आपणो, सार्‍या भाविजन काम ४९
थावो ज्यो तुम एहवा, आगम अर्थ विचार ।
मारवाड ढुंढाड में, बहु जन पामे पार ॥ ५० ॥
सकल सङ्घ श्रावक सहु, वांचो धर ज्यो प्रीत ।
उत्तर पाछा आपाव ज्यो, ए पंडित जन रीत ।५१।
मुनिवर ना गुण गावता, होता चित आराम ।
मन तन कपट तजी करी, वदत कालूराम ॥५२॥

॥ कलश ॥

इम करी रचना अतिही सुंदर, वाचता मन उल्लसे ।
देवाधि देवतिलोय स्वामी अंतर जामी मन वसे ॥
संवत उगणी से साल तेतीस माग आश्विन सुद पखे।
मुनि विनय चंद पसाय करीनें गोपी चंद इम उपदिसे

पूर्वोक्त प्रश्न पत्रका अजीमगज से लोटना भाई तो वहां के श्रावकों ने महाराज से मालुम कराया स्वामी ने इस शिक्षावली प्रश्नोत्तर तत्वबोध बनाया जिसको श्रावकों ने कण्ठाग्र धार के लिखाकर अजीमगज बाबू पांचूरामजी के पास भेजा था।

यह प्रश्नोत्तर तत्वबोध सूत्रों के प्रमाणों सहित जिन प्रणीत वचनों को यथार्थ तत्त्व बताने वाला और आत्मार्थी भव्यों को लाभ दायक है इसको बांचने से भिन्नसी हलु कर्मी जीव जिन मारग को सहज में अच्छी तरह जान कर यथा शक्ति व्रत पच्चखाण अङ्गीकार करके अपनी आत्मा का कल्याण कर सके हैं; क्योंकि राग द्वेष रहित वीतराग कथित मार्ग है जिस आत्मार्थी को पुद्गलीक सुखों से अरुचि है उन्हों के लिए यह ग्रन्थ मानू अमृत समान सिद्ध है; इस में से कितनेक दोहा भाई श्री० रतनसी जीवराजने मुम्बई में एक पुस्तक में छपाए थे परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ यह आजतक छपा नहीं; अब शहर जयपुर में निम्न लिखित श्रावकों ने धारया जिन्हों के नाम।

गणेशीलालजी सींघड़, जोरावरमलजी बांठिया,
गुलाबचन्द लूणिया, सुजानमलजी लोढा,
चन्दनमलजी, दूगड़, नाथूलालजी सरावगी,

उपरोक्त पांचो श्रावकों के पास से पत्र लेकर मैंने संग्रह करके लिखा और सर्व साधारण को लाभ पहुंचने के निमित्त मेरी लघु बुद्धि प्रमाण शुद्ध करके छपाया है, यदि कोई अक्षर या लघु दीर्घादि मात्रा की गलती रहा होय उसका मुझे वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं है, पण्डित और गुणी जनों से मेरी यही प्रार्थना है कि कोई अशुद्धि रही हो उसके लिए क्षमा चाहता हूं।

आप का हितेच्छु और गुणवानों का दास
श्रा० चोरडि० गुलाबचन्द लूणिया जयपुर

॥ प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध ॥

॥ दोहा ॥

नमूं देव अरिहन्त नित, जिनाधिपति जिनराय ।
द्वादश गुणों सहित जे, वन्दूं मन वच काय ॥१॥
नमूं सिद्ध गुण अष्ट युत, आचार्य मुनिराज ।
गुन षट तीश संयुक्त जे, प्रणमूं भव दधि पाज ॥२॥
प्रणमूं पुन उवज्झाय अति, गुण पणवीश उदार ।
नमूं सर्व साधु निर्मल, सप्तवीश गुन सार ॥३॥
द्वादश अठ षटतीस पुन, वलि पणवीश प्रगट्ट ।
सप्तवीश ये सर्वही, गुणनर इकशय अट्ठ ॥४॥
नवकारवाली ना जिके, मणिया जगति मझार ।
एक एक जे गुण तणों, इक इक मणियों सार ॥५॥
इकशो अठगुण सहित ए, परमेष्ठी पद पंच ।
तेतो भाव निक्षेप है, हूं प्रणमुं तज संच ॥६॥
ए सहुनें प्रणमी करी, सखर समय रस सार ।
तत्त्व बोध अविरोध तस, आखूं अधिक उदार ॥७॥

॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

॥ अथ प्रथम विजयसुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे जे विजय सुर, वलि सुर्याभ विचार ।
प्रतिमानी पुजा करी, हिव तसु उत्तर सार ॥१॥
प्रतिमा पूजी विजय सुर, जीव अनन्ती वार ।
विजय पणे सहु ऊपना, पाम्या नहि भव पार ॥२॥
शक्र सामानिक सगमो, देवलोक स्थित हेत ।
पूजे जिन प्रतिमादिते, राज बेसतां तेथ ॥३॥
तिम हिज सुर्याभादि सुर, राज बेसता तेह ।
प्रतिमा पूतलियादि प्रति, बहु थाना पूजेह ॥४॥
सुर्याभे सुर लोकनीं, स्थितिनां वशथी जाण ।
पुजा जिन प्रतिमां तणीं, कीधी कही पिछाण ॥५॥
वृत्ति उंथ निर्युक्तनी, तेह विषे एख्यात ।
आचार्य गध हस्त कृत, छे तिहा बहु अवदात ॥६॥
मित्थ्याती ना समकती, विमान अवपति देव ।
देवलोकनी स्थित हुती, प्रतिमादि पूजेव ॥७॥
समदृष्टी पूजे तिमज, मित्थ्याती पूजत ।
देवलोकनी स्थित वशात, पिण धर्म कार्य नहीं हुन्त ॥८

सुर्याभे जिन वन्दिया, प्रभु पट वच आख्यात ।
एह पुराण आचार तुम्ह, जीत आचार सुजात॥९॥
यह तुम्हारो कार्य छे, वलि तुम्ह करवा योग ।
ए तुम्हने आचारण छे हे सुम्ह आण आरोग ॥१०॥
नाटकनीं पृछा करी, तिहां आदर न दियो साग ।
मनमें भलो न जाणियो, प्रगट पाठमें ताम ॥११॥
वलि मौन राखी प्रभु, देखो पाठ प्रसिद्ध ।
जे भाव निक्षेपे आगन्ने, नाटक आणा न दिद्ध ॥१२॥
वलि मनमें भलो न जाणियो, ए पिण पाठ मझार।
आज्ञा विन नहिं धर्म पुराय, देखो आंख उघार ॥१३॥
तो तास स्थापन आवले, आज्ञा किम दे वीर ।
यह न्यायछे पाधरो, धारो उर चित धीर ॥१४॥

॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय द्रोपदी अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे समकित छता, द्रुपदसुता अवलोय ।
प्रतिमानी पूजा करी, तसु उत्तर हिवे जोय ॥१॥
वृत्ति ऊंच निर्युक्तनीं, गधहस्त कृत माहि ।
जे इक पुत्र थया पछे, द्रोपदी समकित पाय ॥२॥

पूर्व कृत निदान करि, प्रेरी छती सु आय ।
पाच पागडव त्यां द्रोपदी, कह्यो सुज्ञाता मांय ॥२॥
तीव्र भोग अभिलाष तसु, निदान बिन पूरेह ।
समकित किम पामेतिका, देखो वर चित देह ॥४॥
दशा श्रुत स्कंध सूत्रमें, केइक जेह निदान ।
पून्यां समकित नवि लहे, दुर्लभ बोधी कह्या जान ५
निदान दोय प्रकार है, न्याय थकी अवलोय ।
द्रव्य प्रते धुर भेदहै, भव प्रत्येय फुन जोय ॥६॥
निदान द्रव्य प्रत्ये तणा, दोय भेद पहिछाण ।
प्रथम भेद जे मंदरश, द्वितीय तीव्र रस जाण ॥७॥
द्रव्य प्रत्येय मन्दरश तणु, पून्या थकांजु तेह ।
समकित चारित बेहु लहे, द्रोपदी नीपरे एह ॥८॥
द्रव्य प्रते तीव्ररश तणों, समकित चर्ण न पाय ।
दशा श्रुतस्कंध विषेजवे, दुर्लभ बोधिया थाय ॥६॥
भव प्रत्येय ना भेद बे, धुर मंदरशनू होय ।
द्वितीय तीव्र रशनु वली, न्याय विचारी जोय॥१०॥
भव प्रत्येय मंद रश तणों, समकित प्रति पामेह ।
विण चारित पामे नहीं, वासुदेव जिम यह ॥११॥
भव प्रत्येय तीव्ररश तणा, समकित नहिं पामंत ।
वलिं चारित पामे नहीं, ब्रह्मदत्त जिम हुन्त ॥१२॥

द्रव्य प्रत्येयनें भव प्रत्येय, मंद तीव्राश रुयात ।
तेह न्यायथी संभवे, वलि जाणें जगनाथ ॥१३॥
ते माटे ये द्रोपदी, निदान विन पूछेह ।
प्रतिमा पूजी तिण समें, समकित किम पामेह ॥१४॥
ज्ञाता वृत्ती विषे कह्यु, येक वाचना माहि ।
द्रोपदी जिन प्रतिमा तणी, अरचा कीधी ताहि ॥१५॥
दीसे ये तो हिव इम कह्यो, तेह वृत्तिमें माहि ।
नमुत्थुणं नुं पाठ त्या, आख्यो दीसे नाहि ॥१६॥

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहे द्रोपदी समकित धारणी प्रतिमा क्यू पूजी । तेह नुं उत्तर ॥ पंचाशकनिर्युक्ती ग्रन्थनें अभिप्राय द्रोपदी प्रतिमा पूजी तिण वेरया सम्यक्त धारणी नहीं ते देखाडे छे, "दव्व पि जिणहरा" इति व्याख्या ॥ अथ निर्युक्ति रव्याख्येय ॥ द्रव्यलिङ्गि परिग्रहितानि चैत्यानि किं सम्यग्दष्टीनं समाश्रितानि इति कस्माद् द्रव्यलिङ्गी मिथ्यादृष्टीत्वाद् ॥ यथव तर्हि जिन स्यार सवधीनां चैत्यानि किं सम्यक दष्टी न समाश्रितानि एव ररास पचे तरमस तर्हि स्वर्गलोकेषु शास्वतानि चैत्यानि सूर्याभाद्यादेवा. सम्यक दष्टय मपुजयते तथैसानि सगपवत् मभव्य देवा. मदीय भिवि बहुमानात् मपुज्यति पूर्वी पर विरुद्ध न स्याद् ननुसुर्याभाद्यादेवा तत्कल्पस्थिति समानुरोध व भव एव विरुद्धे न समथति यद्येव तर्हि द्रोपद्या सम्यक्त धारयया यानि चैत्यानि नमस्कृतानि किं द्रव्यलिङ्गी परिग्रहितानि न

भवतीसाह द्रौपदी न सम्यक्त्व धारणी स्यात् ॥ उंघनियुक्तया- इत्युक्त ॥ इत्थी जेण सघट्ट तिविह तिवहेण वज्ज ए साहु इति वचनात् ॥ स्त्री जनस्पर्शो त्रिविध त्रिवधेन साधूनां वर्जनीय साधोश्च अकल्पनीय कर्माधारत सम्यक्त्वधानात् द्रौपदी आग मेषु श्रूयते ॥ लोमहत्थय परामुसई ॥ लामहस्तेन परामृशति परामार्जयतीत्यर्थे तत् परमार्जनेन जिनस्पर्शो जात जिनस्य स्त्री जनस्पर्शेन आशातनास्यात् आशातनात्सम्यक्त्वभाव अत. एवं द्रौपदी न सम्यक्त्व धारणी समाख्यते पुन उंघनिर्युक्ति चिरतन टीकायां गंधहस्त्याचार्येण उक्त द्रौपद्या नृप पुत्रिका निदान कृति भर्तार पंचस्वेच्छता निदान भोजितधाम जातुक पुत्र, पुन. पश्चात्साधू सकाशमाप्य मवर सम्यक्त्व मार्गो धरते ॥ इति ॥

॥ एहनु अर्थ वार्त्तिका करी कहे छे ॥

इहा कहो द्रव्य लिङ्गी परिगृहीत चैत्यपति प्रतिमा ते स्यु सम्यक् दृष्टी संभावित नहीं ते किस कारण थकी इमो कोई प्रश्न पूछे तेहनु उत्तर द्रव्य लिङ्गी मिथ्या दृष्टी छे त कारण थकी जो इम छे तो दिगम्बर संबन्धी चैत्य प्रतिमा स्यू सम्यक् दृष्टी संभावित नहीं ए सत्य जो ए सत्य तो स्वर्ग लोक नें विषे सास्वता चैत्य सुर्याभादि देवता समदृष्टी पूजे ते माटे ए पूर्वापर विरुद्ध नहीं हुवे काइ एहवातर्क करीयें छै हिव एहनु उत्तर कहे छे, सूर्याभादि देव स्वर्ग लोक नें विषे सास्वता चैत्य पूजे ते कल्प देव लोकनी स्थित थस अनुरोध, थकी इण कारण थकी न विरुद्ध नहीं हुवे जो इम छे तो द्रौपदी समकित धारी चैत्य नें नमस्कार कियो ते स्यू द्रव्य-लिङ्गी परिगृहीत न हुई

काई एहवीतर्क कीधी छै। हवे एहनुं उत्तर कहै छै। द्रौपदी समकित धारणी न हुई इम कहे छो वलि पूछ्यो द्रौपदी समकित धारणी किम नहीं तेहनु उत्तर ओघनिर्युक्ति में विषे इस कह्यो स्त्रीजन ने स्पर्श साधु नें त्रीविध २ वरजवो साधु नें अकल्पनीय कर्म आचरवाथकी समकित नु अभाव हुवै ते कारण थकी साधु ने स्त्री जननु स्पर्श त्रीविध २ वरज्यू द्रौपदी आगम में रूप मामली पेछै " लोमहत्थ परामुसई " लामहस्त करिके फरसे पुंज इसर्थ, ते पूजने करी जिननु स्पर्श हुवै जिनने स्त्री जन स्पर्शे ते करी आशातना हुवै आशातना, करिवे करी समकितनु अभाव इण कारण थकी द्रौपदी समकित धारणी न सभावपे, वलि ओघ निर्युक्तनी चिरतन टीका नें विषे ग घहस्त आचार्य कह्यो द्रौपदी नृप पुत्री निदाणानी करणी हारी तिणे भर्तार पंच नै वरी नियाणो भोगवी गेक पुत्र थया पछै साधु समीपे समकित पामी एहवो ओघ निर्युक्तीनी टीका नै विषे गधहस्त आचार्य कह्यो ते मिथ्यात्वना वश थकी पुष्पादिकरी प्रतिमा पूजी।

॥ अथ तृतीय निक्षेपा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे बावीश जिन, तसु मुनि प्रतिक्रमणेह।
किस्युं करे चौबीस्यो, द्वितीय आवश्यक जेह ॥१॥
तसु कहिये महाविदेहना, मुनि प्रतिक्रमण विषेह।
द्वितीय आवश्यक स्यू करे, न्याय विचारी लेह ॥२॥

नहीं तिहां अवसर्पणी, उत्सर्पणी पिण नाहि ।
ते माटे नहिं पट अरा, सम अद्धा कहि वाहि ॥३॥
तिहां अनन्ता शिवगया, जासे मुक्ति अनन्त ।
मेल नहीं चोवीश नु, देखोजी बुद्धिवन्त ॥४॥
इक इक विजय विषे वली, येक येक जिनराज ।
वर्तमान काले हुवे, उत्कृष्ट पणे समाज ॥५॥
हिव ते क्षेत्र विदह ना, जिनथया सिद्ध अनन्त ।
तसु चादर्या चोवीशनीं, सख्या नथी रहन्त ॥६॥
थासे सिद्ध अनन्त जिन, तसु वंदे जे कोय ।
तो पिण जिन चोवीस नीं, संख्या न रहे सोय॥७॥
विजय विषे ज्यो वर्त्तता, वंदे इक जिन राय ।
तो पिण जे चोवीसत्थो, किण विध कहिये रहाय॥८॥
विदेह क्षेत्रनां मुनि करे, द्वितीय आवश्यक जेह ।
विचला जिन वा वीसना,मुनि पिण तिम हिज करेह९॥
बे टक नूं तसु नियम नहीं, पिण ज्यो निणहि रुवार ।
पडिकमणा में स्युं करे, द्वितीय आवश्यक सार ॥१०॥
ज्ञाता अध्ययने पच में, शेलक ऋषिनों पाय ।
पमक पडिकमणो करत, वाख्या आख्या ताय ॥११॥
ते माटे जे जिन हुये, तेह तणों ल्ये नाम ।
द्वितीय आवश्यक नु तदा नाम उत्कित्ता तांम ॥१२॥

जिन चौबीस तणों जिहा, नियम नहीं छै ताम ।
तिण सुं चोवीस्या तणों, स्थान उत्कीर्तन नाम ॥१३॥
अनुयोग द्वार विषे अमल, आवश्यक षट माय ।
अर्थ तणा अधिकारषट, आख्या श्री जिन राय ॥१४॥
द्वितीय आवश्यक ने विषे, उत्कीर्तन अख्यात ।
कह्यु अर्थ अधिकार ये, जिन गुन नाम विख्यात॥१५॥
विदेह क्षेत्र मे मुनि तणो, द्वितीय आवश्यक जान।
स्व स्व जिन गुन नाम ते, उत्कीर्त्तन अभिधान॥१६॥
जेह विजय नहीं जिन तदा, द्वितीय आवश्यक माहि।
पूर्व जिन गुन नाम ते, ह्यो सभवे ताहि ॥१७॥
तिनदा जिन चावीसना, मुनि नें स्वजिन नाम ।
उत्कीर्तन अभिधान तसु, द्वितीय आवश्यक ताम१८
धुर जिनना मुनि ले तिसज, स्वजिन गुन कुन नाम ।
द्वितीय आवश्यक सभवे, उत्कीर्त्तन अभिराम ॥१९॥
वा धुर जिनना मुनि तणा, चोवीस्यो किम होय ।
तो गत चौवीसी हुई, जाणे केवली सोय ॥२०॥
यथा नहीं चौवीस जिन, तसु वारे अवलोय ।
द्वितीय आवश्यक ते विषे, चोवीस्यो किम होय ।२१।
चौवीसमा शाशण तणी, तेहतणुं अपेक्षाय ।
आख्यु के चौवीस्यो द्वितीय आवश्यक माय॥२२॥

द्वितीय आवश्यक नों कह्या, उभयनाम अवलोय ।
उकीत्तन चोवीस्थो, तसु हेतु हिव जोय ॥२३॥
पचम् अङ्गे शुरकह्यं, इन्द्रभूती सुप्रसिद्ध ।
वृत्ति विषे कह्यो नाम ये, मात पिता नू दिद्ध ॥२४॥
गोतम गोत्र करि तसुं, गोतम नाम कहाय ।
उत्तराध्ययन तेवीस में, गाथा छठ्ठी मांय ॥२५॥
तिम जिनवर चोवीसमां, तसुं वारे अवलोय ।
गुणे नाम चोवीस जिन, ते चोवीस्थो होय ॥२६॥
ते चोवीस्था ने विषें, उत्कीत्तन अभिराम ।
अर्थ तणां अधिकार छे,पिण मुख्य चोवीस्थो नांम२७
विदेह क्षेत्र में बीस जिन, तसु मुनि स्व जिन नांम ।
अर्थ तणा अधिकार करि, ते उत्कीर्तन ताम ।२८।
सूत्र उववाई नें विषे, तपनां द्वादश भेद ।
तृतीय भेद भिक्षाचरी, वारु नाम सवेद ॥२९॥
समवायंग विषे कह्या, वारे भेद अभिराम ।
भिक्षाचरी नें स्थान जे, वृत्ति सचेप सु नांग ॥३०॥
भिक्षाचरीनां नाम वे, द्वितीय आवश्यक तेम ।
उत्कीर्तन चोवीस्थो, उभय नाम तसु एम ॥३१॥
नवमां जिनना नांम वे, सुविध अनें पुफदन्त ।
आख्या लोगस में प्रगट, देखोजी बुद्धिवन्त ॥३२॥

पुष्प सरिसा दन्त तसु, पुष्प दन्त अभिराम ।
इम अर्थ तणां अधिकार करि,उत्कीर्त्तन पिण नाम३३
कृष्ण अनें बलभद्र नों, केशव राम आख्यात ।
उत्तराध्ययन बावीसमें,तिम द्वितीय आवश्यक ख्यात।३४।
किहा च्यार महा व्रत कह्या,तास कह्या विहु याम ।
उत्तराध्ययन तेवीस में, केशी मुनि गुण धाम ॥३५॥
द्वितीय आवश्यकनां तिमज,उभय नाम अवलोय ।
उत्कीर्त्तन चोवीस्थो, सहुभावे जिन जोय ॥३६॥
चोवीशम जिननां मुनी, करे चोवीस्थो तांम ।
विदेह तेवीस तणा मुनि, उत्कीर्त्तन जिन नाम ।३७।
सुध्र तें ष्यासे यहवो, बारू न्याय विचार ।
वलि केवली जे वदे, तेहिज सत्य उदार ॥३८॥
भाव निक्षेपे भरतनीं, चोवीसी वर्तमान ।
पाठ वदे वहु ठाम छे, लोगस मांहि सुजान ।३९।
भाव निक्षेपे ऐरवत, चोवीसी वर्तमान ।
पाठ वदे वहु ठाम छे, समवायंगे जान ॥४०॥
चोवीसी भरत ऐरवत, अनागत जिन नाम ।
द्रव्य निक्षेपो तुर्य अङ्ग, वदे पाठ न तांम ॥४१॥
अष्ट अनें चालीश ना, वर्तमान जिन नाम ।
भाव निक्षेपो ते भणीं, पाठ वदे वहु ठांम ॥४२॥

अष्ट अने चालीसना, अनागत जिन नाम ।
द्रव्य निक्षेपो ते भणी, वंदे ठाऱ्यो साम ॥४३॥
द्रव्य निक्षेपे यह निज, गणधर वंद्या नाहि ।
तो चोवीसी करता छतां, द्रव्य जिन किम वदाहि ॥४४॥
तीर्थंकर घर में छता, द्रव्य निक्षेपे जेह ।
तेहने मुनि वंदे नहीं, तुम्ह लेख पिण लेह ॥४५॥
तो होणहार जिनवर भणी, चोवीस्या निषेह ।
मुनिवर किम वंदे तसु, न्याय विचारी लेह ॥४६॥
वलि कह्यो अनुयोग द्वार में, जे आवश्यक नू जाण ।
होस्ये पिण न थयो हजी, ते द्रव्य आवश्यक पिछाण ॥४७॥
तिम जे कोई इक मुनि हुस्ये पिण हिवडा ग्रहस्थ पणेह ।
कहिये द्रव्य साधु तसु, आवश्यक वत येह ॥४८॥
जो वन्दो द्रव्य निक्षेपनें, तो तिण द्रव्य मुनींरा पाय ।
तुम्हे वदता क्यु नथी, तुम्ह श्रद्धारे न्याय ॥४९॥
चौवीसी वर्तमान नें, वन्दे वहु ठामेय ।
अनागत वांद्या नथी, देखो तुर्य अंगेय ॥५०॥
तृतीय निक्षेपो द्रव्य तसु, गणधर वंद्यो नाहि ।
तो द्वितीय निक्षेपो स्थापना, किम वंदी जे ताहि ॥५१॥
द्रव्य तीर्थंकर कृष्णाथा, दीवा नेम वताय ।
नेम तणां साधु साध्वा, त्यां क्युं नहीं वंद्या पाय ॥५२॥

उलटो कृष्ण भणी तिणा, दीधो पग लगाय ।
तो चोवीस्यो करता कृता, किम वंदे मुनिराय ॥५३॥
द्रव्य जिन श्रेणिक नृप हुतो, दीधो बीर बताय ।
वीर तणा साधु साध्विया, त्या क्यु नहिं वंद्यापाय ५४
तीर्थंकर वदन तणु, तसु राख्यारे चाहि ।
तो कृष्ण अनें श्रेणिक तणा, त्या क्यु नहि पधा पाहि ५५
उलटी करी विडम्बना, जाणी ने भरतार ।
तो चोवीस्यो करता कर्ता किम वंदे अणगार ॥५६॥
जिन वंदे तिहु कालना, नमोत्थुणंरे अंत ।
किणी सूत्र में ते नहीं, देखोजी बुद्धिवंत ॥५७॥
जे कोई जीव अजीव नू, नाम आवश्यक देह ।
ते आवश्यक नों प्रभु, नाम निक्षेप कहेह ॥५८॥
अनुयोग द्वार विषे इसो, प्रगट पाठ पहिछाण ।
तिम जिन तीर्थंकर तणा, नाम निक्षेपो जाण ॥५९॥
जिम कोई जीव अजीव नू, ऋषभ नाम छे जेह ।
ऋषभ देव भगवान नों, नाम निक्षेपो नेह ॥६०॥
जो वादी नाम निक्षेप ने, तो तिण ऋषभारा पाय ।
क्यु नहि वादो छो तुम्हे, तुम्ह श्रद्धारे न्याय ॥६१॥
किणरो नाम दियो वली, अरिहंत नें भगवान ।
नाम अरिहंत वंदो तुम्हे, तो क्यु नहि वंदो जान ।६२।

सिद्ध निरंजन नाम पिण, दीसे बहु जग माहि ।
नाम सिद्ध वंदो तुम्हे, तो क्यु नहिं वंदो पाहि ॥६३॥
केईक मनुष्यां रा कारटा,ते पिण बाजे आचार्य रहाय।
वंदो नाम आचार्य तुम्हे,तो क्युं नहि वंदो पाय।६४।
केईक ब्राह्मण लोक में, बाजे छै उपाध्याय ।
नांम उपाध्याय वंदो तुम्हे,तो क्यु नहिं वंदो पाय ६५
जोगी संन्यासी प्रमुख, साधू नांम कहाय ।
नांम साधु वांदो तुम्हे, तो क्यु नहिं वंदो पाय ॥६६॥
ज्ञान दर्शन चारित्र नां, गुण नहीं छे जे म्हाय ।
तेह वदवा योग किम,निमल विचारो न्याय ॥६७॥
कोई कहे, आचार्यनां, उपाध्यायना ताहि ।
उपग्रण नीं आशातना, कहि टालवी कांहि ॥६८॥
ज्ञान दर्शन, चारित तणां, तेह उपधिरे मांहि ।
केहवा गुन छे ते भणी, उपधि संघट्टुं नाहि ॥६९॥
नवमें दशमें कालिके, द्वितीय उद्देशे ख्यात ।
इम कहे उत्तर तेहनुं, साभल जो अवदात ॥७०॥
सूत्र विषे तो इम कह्यो, गुरु कायाइ करेह ।
तिण हिक्त गुरूना उपधि करि, संघट्टे थयें छतेह ।७१।
मुझ अपराध खमों तुम्हे, वलि न हूं करू कोय ।
इम भाषे सुविनीत शिष्य, तास न्याय हिव जोय ७२

आचार्य्यना उपधि ए, तउपधि विण रहाय
जन जनर्म्या सुग राय ।
जिम गुरु के सहवर्त्ती तनु, तेम न प्रदित्तणादे आय६३
भाव निक्षेपै गणपती, तास उपधि तनु जे ।
तासु मघट्टयया खामवु, आख्यु सूत्रे एम ॥७४॥
थयु वलि अपराध मुझ, खमुं तुम्हे अवलोय ।
ए वच प्रत्यक्ष गुरु तणो, न्याय विचारी जोय ॥७५॥
जो खमायो हुवे उपधिने, तो देखो चित देह ।
वदना करी खमायवे, उपग्रण स्युं जोगह ॥७६॥
येतो उपधि सहितजे, आचारजनी जोय ।
नहीं अशातना टालवी, न थी अन्यथा कोय॥७७॥
सयनाशन गणपति तणा, तास सघट्टवूं नाहि ।
ते हिज आचार्य्य विहार करिगया हुवे ओ ताहि७८
सयणाशण तेहिज तम, शिष्य सेवेके नाहि ।
भोगविया आशातना, लागे के नहिं ताहि ॥७९॥
जे पृथिवी शिल ऊपरे, बैठा श्री भगवान ।
कालान्तर गोयम सुधर्म, बैठके नहीं जान ॥८०॥
छायागणीनां तनु तणीं, शिष्य अक्रमीं तास ।
चाले के चाले नहीं, जोवो हिये विमास ॥८१॥
तुझ लेखे छाया भणीं, आकमवू पिण नाहि ।
सघटो पिण करवु नहीं, गुरु छायानुं ताहि ॥८२॥

...र्शन चारित तणा
सिद्ध निरंजन ... वंदन योग न होय ।
नाम सिद्ध वंदो तुम्हे, तो, तिणमें गुण नहिं कोय ८३
थ्क र आचार्य तणा, पगला तणा पिछाण ।
तुम्हे करोछो स्थापना, तेहनें वंदो जाण ॥८४॥
तो चालै गुरू केड शिष्य, गमन करता जोय ।
धरती ऊपर गुरु तणा, पगला मंडै सोय ॥८५॥
शिष्यना पगतें ऊपरै, पडिया दंड स्यु थाय ।
वन्दनीक पगला कहो, ते लेखे दंड पाय ॥८६॥
चारित सहित जे गुरू भणी, वंदे तीर्थ च्यार ।
काल किया तसु कायनै, भस्म करे तिह वार ॥८७॥
ज्ञान दर्शन चारित तणा, तिणमें गुण नहीं काय ।
तिणसुं दर्शन क्युं किया, अशातना नहिं होय ८८
करी स्थापना तेहनैं, वान्या कहोछो धर्म ।
तो ए सांगे तनु बालिया, लागे आशातना कर्म ८९
आवश्यकनों जाणशी, काल कियो तिहवार ।
द्रव्य आवश्यक तनु कह्यो, देखो अनुयोग द्वार ।९०।
तिम मुनि काल कियां छता, जीव रहित जे देह ।
द्रव्यसाधु कहिये तसु, न्याय विचारी रोह ॥९१॥
वंदनीक द्रव्य मुनि कहो, तो तुम्ह लेखे ल्हाय ।
द्रव्य साधु बाल्यां छता, अशातना किम थाय ।९२।

जम्बू द्वीप पन्नतीमें कह्यो, जिन जनम्या सुरराय।
जन्म भुवन जिनवर तणा, तसु प्रदक्षिणा दे आय ९३
जिनने वा जिनमात प्रति, प्रदक्षिणा त्रण वार।
देई कर जोडी करी, वंदे शक्र अपार ॥ ९४ ॥
हे रयण धारी रतन कुक्षिनी, थारो तुझ नमस्कार।
इह विध सुरपति उच्चरे, ए पिण जाण आधार ९५
इण लेखे मात देवी प्रति, इन्द्र किया नमस्कार।
पिण समकित किणरी नहीं, शास्त्र न्याय विचार ९६
ग्रहस्थ पणे जिन जन्मना, पद प्रणमे सुर लोय।
लौकिक हेते जाणवु, धर्म हेतु नहि कोय ॥९७॥
ज्ञाता अध्येयन आठमें, मल्लिनाथ भगवान।
लागी पगा पिता तणे, लौकिक हेतें जान ॥९८॥
मल्लिनाथ गया केवली, तदा पछे मा तात।
थाया सुणीं श्रावक थया, पाठ विषे अवदात ९९
इण लेखे मल्लिनो पिता, पहिला श्रावक नाहिं।
तस्म पाय प्रणम्या मल्ली, धर्म नहीं तिण मांहि॥१००॥
तिम द्विन द्रव्य जिनवर भणी, इन्द्र करे नमस्कार।
ए तसु जीत आचारछे, श्रीजिन आज्ञा बार ॥१०१॥
जीव रहित जिन देहने, द्रव्य जिन नाम कहेह।
ते वदनीक किसा विध कुने, न्याय विचारी लेह १०२

जो वंदनीक ते द्रव्य हुवे, तो तुझ लेखे कहेह ।
तसु प्रते द्रव्य क्रिया छता, आशातन लागेह १०३
ज्यों द्रव्य निक्षेप वंदो तुम्हे, तो जमाली आदि ।
द्रव्य साधु कहिये तसुं, वंदो क्यूं न सवाद ॥१०४॥
भावे जे साधू हुतो, सेव्यो तिण अणाचार ।
भाव निक्षेपो तसु गयो, के गयो द्रव्य जिवार १०५
मुनि वेसे सेव्यो तिणे, अणाचार अवधार ।
ते द्रव्य मुनि वंदा के नहिं, धर्म हेत नर प्यार ॥१०६॥
कृष्णादिक नरके पड्या, द्रव्य जिनवर कहि ताहि ।
भावे कहिए नेरिया, वंदनीक ते नाहि ॥१०७॥
तीर्थंकर जनम्या पछै, ते पिण द्रव्य जिनराय ।
भाव निक्षेपे तेहनें, ग्रहस्थी कहिये ताय ॥१०८॥
तीर्थंकर दीक्षा लिया, तसु द्रव्य जिन कहिवाय ।
भावे ते मोटा मुनी, वंदनीक तसु पाय ॥१०९॥
चौतीस अतिशय संपता, वाणी गुण पैंतीस ।
केवल ज्ञान थया पछे, भाव जिन जगदीश ।११०।
वंदनीक भावे मुनी, वलि भाव जिनराय ।
उत्तम नें जाणियां थका, पातिक दूर पुलाय ।१११।

॥ इति निक्षेपाधिकार ॥

॥ अथ चतुर्थम् अम्बडाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै अम्बड कह्यु, अरिहन्त तिण अवलोय ।
नहि अरिहन्तना चैत्य विन, नथी वन्दवा मोय ।१।
प्रथम उपाङ्ग विषे इसो, आख्यो श्री जिनराय ।
ते अरिहन्त ना चैत्य कुण, तसु उत्तर कहिवाय ।२।
अरिहंत तो धुरपद विषे, प्रतिमा चैत्य कहाय ।
तो मुनिवर नहीं वंदवा, अन्य तीर्थी तिण न्याय ३
मुनि पद तो है पंचमों, ते धुर पद में नहीं आय ।
तिण कारण अरिहन्तना, चैत्य मुनी कहिवाय ।४।
जिन प्रतिमा जिन सारखी, तुम्ह कहो तिण न्याय ।
प्रतिमा तो धुरपद हुई, मुनिं धुरपद नहीं अ प ५
अरिहन्त तो ए देव है, अरिहन्त चैत्य सु सत ।
तेह गुरु ए देव गुरु विना न अन्य वन्दत ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चम् आनन्दाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै आनन्द कह्यो, अन्यतीर्थिक संग्रहीत ।
अरिहन्तना जे चैत्य प्रते, वन्दु नहीं प्रतीत ॥१॥

एह सातमा अङ्गमें, दाख्यो गणधर देव ।
ते अरिहन्तना चैत्यकुण, उत्तर तासु कहेव ॥ २ ॥
आनन्द कह्यु अण तीर्थने, अणतीर्थक ना देव ।
अन्यतीर्थक परिग्रहीत जे, अरिहंत चैत्य कहेव ३
ए तीनूं नें वंदना, करणी कल्पे नाहि ।
नमस्कार करिवू नहीं, ए तीनू ने ताहि ॥ ४ ॥
पहिला बोलाव्या बिना, बोलूं नहीं इकवार ।
वार वार बोलू नहीं, नहीं आपू तस आहार ।५।
चैत्य इहां पतिमा हुवे, तो बोलावे केम ।
वलि आपे असणादि किम, न्याय विचारो एमह
कोई कहे तसु देवन, किम बोलावे ताय ।
वलि असणादिक किमदिये,निमल सुणो तसु न्याय
पुत्र सुजेष्टा नो कह्यो, महादेव तसु देव ।
नवमें ठाणें अर्थमें, ते नीर थया स्वय मेव ॥८॥
चेडाराजानीं सुता, तेह सुजेष्टा जांण ।
तिण कारण तसु देवते, नियणान पहिछाण ।६।
तेहने बोलावे नहीं, वलि नहीं आपे आहार ।
वलि चैत्य सुनी अरिहन्तना, भ्रष्ट थया तिण वार१०
ते अन्य तीर्थिकमें जई मिल्या,अन्य तीर्थि कापिण तास
ग्रहण कियानिजमत विषे अन्य तीर्थिकग्रहित तिमा११

नहीं बोलावू तेहने, वलि नहीं आपुं आहार।
अभिग्रह ए आनन्द लियो,बारू न्याय विचार ॥१२॥
॥ इति ॥

॥ अथ षष्टम् जघा विद्याचारणाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे मुनि लब्धिधर, जघा विद्याचार।
जावे रुचक नन्दीश्वरे, वन्दे चैत्य तिवार ॥ १ ॥
वीसम शतके भगवती, नवम उद्देश विषेह।
प्रभु आख्या ते चैत्य कुण उत्तर तास कहेह ॥२॥
जघा विद्या चारणा, रुचक नन्दीश्वर जाय।
तिहा वन्दे पाछे, पिण नमसई नाहि ॥ ३ ॥
मानुषोत्तर गिरि विषे कूट च्यार आख्यात।
नथी कह्यु सिद्धायतन, तुर्य ठाणा अवदात ॥ ४ ॥
वृत्ति विषे द्वादश कह्या, तिहा देवता वास।
आख्यापिण सिद्धायतन कूट कह्यो नहीं तास ॥५॥
तिहा चैत्य वन्दे किसा, तिणसू चैत्य सुज्ञान।
करे ताम गुन ग्राम अति, देखीने जे स्थान ॥६॥
अन भगवन्त नों ज्ञान ए, धन्य भगवन्तरो ज्ञान।
जेम कह्यु तिमहिज सहु इम करे स्तुती जान ॥७॥

नमसई तिहा पाठ नहीं, वन्दई पाठज येक ।
तेहनुंछे स्तुती अर्थ देखो धर सु विवेक ॥ ८ ॥
प्रश्न इजारा पूछिया, गोयम पञ्चम अङ्ग ।
तिहा वन्दई नमसई छे विहु पाठ सुचङ्ग ॥ ६ ॥
एतो छे अति अजब गति, रुचक द्वीप लग जाहि ।
तिहा नमसई पाठ नहीं, नमो त्थूण तिण नाहि ॥१०॥
श्रावक तुङ्गिया ना प्रवर, आया स्थिवरां पास ।
तिहा वन्दई नमसई, उभय पाठ गुण रास ॥११॥
जो प्रतिमा वन्दन गया, तो करता नमस्कार ।
नमोत्थूण गुणत, वलि, देखो हृदय विचार ॥१२॥
तथा चैत्यते जिन बहू, तेह तणा गुण गाय ।
धन्य प्रभू इम कहे तसुं, सत्य वचन सुख दाय ॥१३॥
कोई कहे प्रभूजी भणीं, चैत्य किहा आख्यात ।
उत्तर तेह नें आखिए, सुणज्यो सुगण सुजात ॥१४॥
सूर्याभे मन चिन्तव्यु, कल्याण कारी स्वाम ।
दूरितोपसम करि थकी, मंगलीक अभिराम ॥१५॥
तीन लोकना अधपति, तिणसु देवत नाथ ।
हेतु सुप्रसन्न मनतणा, तिणसु चैत्य आख्यात १६
राय प्रश्नणी वृत्तिमे, चैत्य अर्थ जिन रूयात ।
इत्यादिक इहां संभवे, बहु जिनगुण अवदात ॥१७॥

बहु जिनेन्द्र चा जिन कहे, रुचक नन्दीश्वर मांहि।
भाव कह्या तिमहिज सहू, देखि हिये हुलसाय १८
धन्य जिनेन्द्र धन्य केवली, गिरी कुटा दिक जेह।
जेम कह्या तिम हीज ए, इम तसु स्तुति करेह १९
तेमाटे इहा चैत्यते, बहु जिन कहिए सोय।
वन्दई तसु स्तुती करे, एह अर्थ पिण होय॥२०॥
बिन आलोयां ते मुनी, काल करे जो कोय।
तास विराधक प्रभु कह्यो, पाठ विषे अवलोय।२१।
जब को तर्क करे इमी, दिशा गोचरी जाय।
पाछा आवी पडिकमें, ईर्या वही मुनिराय॥२२॥
तिम ए पिण आवी करी, ईर्या वही गुणाय।
तासु उत्तर कहीजिये, सांभलज्यो चित देय॥२३॥
दिशा गोचरी मुनी जई, आवता क्रियोकाल।
तेह विराधक नहीं हुवे, जोवो नयण निहाल।२४।
जंघा विद्याचारणा, काल कियां अन्तराल।
तास विराधक प्रभु कह्या, नथी आराधक न्हाल, २५
तिण सु ईर्या वही तणा, नथी मिले ए न्याय।
लब्ध फोड़वी तेहनो, दण्ड कह्यो जिनराय।२६।

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहे जंघाविद्याचारणा लब्ध फोडी ने नन्दीश्वर द्वीपे जाय ते आलोया बिना मरे तो विराधक कह्यो ते आलो

यणा ईर्यावही नी कही छै ।दना गौचरी आप तहनी पिण ईर्या वही गुणों तिम ए पिण लाख फाडा नन्दीश्वर द्वीपगया तेहनी पिण ईर्या वही जाणणी इम कई तेहने काहणा इम ईर्यावही गुणया विना विराधक हुव ता गोचरी पिण जाणा नहीं कदा ठिकाणे आया बिना पाडला मरिजाय तो विराधक हुवे, थलिगाम बाहिर दिशा, जावो नहीं । विहार करवो नहीं । पाडिलहणा करणी नहीं । तथा मगर काया है तो ईर्या वही गुणिया विना पाहिला ही मरजाय ता विराधक होवणो पड़े ते माटे, साधु गोचरी गयो पाछा आवता बीच मे काल करै ईर्यावही पडिकमिया विना जब तो ओ पिण विराधक हुवे, इम विहार करता बिच ईयावही पडिकम्या बिना काल करे तो उणरी श्रद्धारे लेखे ओ पिण विराधक हुवे, इम तो पडि लेहणा किया पछे अथवा बिचे ईर्यावही पडिकमिया विना काल करे तो उणरी श्रद्धार लेखे ओ पिण विराधक हुवे, धर्म कारणों जाता धर्म कारणे आवता ईर्यावही पडिकमिया बिना काल करे तो उणरे लेखे ओ पिण विराधक हुवे, जद तो तीर्थंकर ने वादवा जाता आवता ईर्यावही पडिकमिया बिना काल करे ता उणरे लेखे ओ पिण विराधक, अरिहन्त गणधर आचार्य उपाध्याय महामोटा पुरुषां ने सारे साधु मा दिकया ने वादण जाता नें आवता ईर्यावही पडिकमिया विना काल करे तो उणरे लेखे ओ पिण विराधक, इम इत्यादिक अनेक कार्य किया ईर्यावही पडिकमणी छै, जद ते पिण कार्य करता ईर्यावही पडिकमिया बिना काल करे ता उणरे लेखे ओ पिण विराधक, इम ईर्यावही पडिकमिया बिना विरा धक हुवे छै ना साधु ने पहिला पिण ईर्यावही पडिकमणी

बालो कार्य्य करणो इज नहीं, तथा पडिलेहणा किया पछै अथवा विचै इर्यावही पडिकमियां विना काल करे तो उणारै लेखै आ पिण विराधक हुवै, इम विहार करतां विचै इर्यावही पडिकमिया विना मरै तो उणारै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, जो इम विराधक हुवै जद तो तीर्थंकर ने वन्दना जाता नें आवता विचै ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणारै लेखे ओ पिण विराधक हुवै, अरिहन्त गणधर आचार्य उपाध्याय महा मोटा पुरुषां नें वा साधु साध्वियां नें वन्दना जातां नें आवतां विचै काल करै तो उणारै लेखै ओ पिण विराधक छै, इम ईर्यावही पडिकमियां विना विराधक हुवै तो साधानें पहिलां इज ईर्यावही पडिकमणारो कार्य्य करणो इज नहीं, इण श्रद्धारै लेखै तो साधूनें हालवो चालवो इत्यादि कयुंही कार्य्य करणो नहीं, अरिहन्तनें भगवन्तनें तीर्थंकरनें गणधरनें आचार्य्य नें उपाध्याय नें महा मोटा पुरुषां नें साधा नें साध्वियां नें किणही नें वन्दना जाणो नहीं, कदा विचैही काल करै तो विराधक पणो पावछै आडम्बारो भरोसो छै नहीं तिणसूं, उणरी श्रद्धा रै लेखै तो धर्मरो कार्य्य करणो नें कठेही जाणो नहीं जाता नें आवता ईर्यावही पडिकमियां विना मरै तो विराधक पणो पावछै, इण श्रद्धारै लेखै तो शासन मर्व उठ जावै एहवी महा विपरीत श्रद्धा छै; अरिहन्त भगवन्त तो इम कह्यो छै साधु चारित्रवालें कर्मयोगें अनेक भारी कार्य्य कीधा छै मोटा मोटा दोष सेव्या छै पछै गुरु कनै अनेक दोसा री आलोयणा चाल्यो छै कदा गुरु पासै नहीं पूगा विचै ही आलोयां विना काल करै तो तिणांनें भगवन्त आराधक कह्यो छै, तो जंघा चारण नें विद्या चारणनी ईर्यावही पडिकमणारी

सरधा नहीं थी कांई ? ये विराधक किसे लेखे हुवे तो ऐसा ये कांई भोलाछा अनें थांरे थारे ईर्यावही पडिकमवारी सरधा न हुवे, तो गोचरी विहार प्रमुखनी गुरु कनैं आज्ञा मागै ते आज्ञा पिण देणी नहीं विचमैं मरिजायतो विराधक हुवे, थांरे नन्दी उतरवारी पिण आज्ञा मांगै तो आज्ञा देणी नहीं विचैं मरिजायतो विराधक हुवै ते थारे नीकलियां पहिलाही ईर्यावही तो न गुणी इणसूं विराधक हुवै तो नन्दी उतरतां मोक्ष किम जाय; सागारी संथारो पचख्यो नावामैं बैसे एहवु आचाराङ्ग अध्येयनें तीसरै कह्यो छै, जो ईर्यावही गुणियां बिना विराधक हुवै तो नावा मैं सागारी संथारो पचखो किम बैसै, थांरे नन्दी उतरवारी साधानें भगवान आज्ञा दीधी अनें गोचरी प्रमुखनीं पिण आज्ञा दीधी छै तिणसु नन्दी नावा उतरतां गोचरी प्रमुख पूर्वे कार्य कह्या ते करतां मरे तो अथवा गोचरी प्रमुख कार्य्य करी ठिकाणे आयां ईर्यावही गुणयां पहिलां मरैतो आराधक पिण विराधक नहीं।

॥ दोहा ॥

धर्म हेतु हिन्सा कियां, तुम्हे दोष कहो नाहिं ॥
पुष्पादिक आरंभ में, धर्म कहो क्यो ताहि ॥२७॥
तो यात्रा करवा भणी, लब्धि फोडनी जेह ॥
धर्म हेतु ए कार्य नों, किम प्रभु दण्ड कहेह ॥२८॥
यात्रा अर्थे लब्धि जे, फोडवियां दण्ड आय ॥
तो पुष्पादिक कार्य में, धर्म पुण्य किमथाय ॥२९॥

॥ इति ॥

॥ अथ सातमों धर्मार्थ हिन्सा न गिणों तेहना उत्तर नुं अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे धर्म कारणे, जीव हणों जो कोय ॥
पाप न लागे तेहनें, हिव तसु उत्तर जोय ॥ १ ॥
देवल प्रतिमा कारणें, हणे जु पृथिवी काय ॥
मन्द बुद्धि तेहनें कह्या, दशमां अङ्ग रे म्हांय ॥२॥
अर्थ धर्म नें हेते हणों, मन्द बुद्धि कह्या तास ॥
ए पिण दशमां अङ्ग में, प्रथम अध्येयन विमास ॥३॥
जन्म मर्ण मुकायवा, हणे जे पृथिवी काय ॥
कह्या अहेत अबोध तसुं, प्रथम अङ्गरे म्हांय ॥४॥
धर्म हेतु जंतु हणों, दोष इहां नहीं कोय ॥
ए अनार्य नूं वचन, आचाराङ्गे जोय ॥ ५ ॥
जिनाज्ञा सावद्य सहु, वचन मात्र पिण सोय ॥
सुक्ष्म नें आचरवा नहीं, प्ररुपवा नहीं कोय ॥६॥
महानिशीथरे पंच में, कमल प्रभा इम ख्यात ॥
सावद्य पाप सहित में, धर्म पुण्य किम थात ॥७॥
ग्रन्थ संघ पट्टक कियों, जिन बल्लभ सुरेण ॥
जिन प्रतिमां यात्रा भणीं, किस्यूं कह्यो छे तेण ॥८॥

सरधा नहीं थी काई ? ये विराधक किसे लेखे हुवे तो ऐसा ये काई भोलाछा अनें वलि थारे ईर्यावही पडिकमवारी सरधा न हुवे, तो गोचरी दिशा विहार प्रमुखनी गुरु कनें आज्ञा मांगे तो आज्ञा पिण देणी नहीं विचमें मरिजावतो विराधक हुवे, वलि नन्दी उतरवारी पिण आज्ञा मांगे तो आज्ञा देणी नहीं विचे मरिजावतो विराधक हुवे ते थारे नीकलियां पहिलांही ईर्यावही तो न गुणी इणजो विराधक हुवे तो नन्दी उतरतो मोक्ष किम जाय, सागारी संथारो पचखी नावामें बैसे एहतु आचाराङ्ग अध्ययनें तीसरे कह्यो छै, जो ईर्यावही गुणियां विना विराधक हुवे तो नावा में सागारी संथारो पचखी किम बैसे, वलि नन्दी उतरवारी साधांनें भगवान आज्ञा दीधी अनें गोचरी प्रमुखनीं पिण आज्ञा दीधी छै तिवारे नन्दी नावा उतरतां गोचरी प्रमुख पूर्वे कार्य कण्ठा ने करतां मरे तो अथवा गोचरी प्रमुख कार्य करी ठिकाणें आयां ईर्यावही गुणयां पहिलां मरेतो आराधक पिण विराधक नहीं ।

॥ दोहा ॥

धर्म हेतु हिन्सा किया, तुम्हे दोष कहो नांहि ॥
पुष्पादिक आरम्भ में, धर्म कहो छो ताहि ॥२७॥
तो यात्रा करवा भणी, लब्धि फोडवी जेह ॥
धर्म हेतु ए कार्य नों, किम प्रभु दण्ड कहेह ॥२८॥
यात्रा अर्थे लब्धि ले, फोडविया दण्ड आय ॥
तो पुष्पादिक कार्य में, धर्म पुण्य किम थाय ॥२९॥

॥ इति ॥

॥ अथ सातमों धर्मार्थ हिन्सा न गिणें तेहना उत्तर नु अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै धर्म कारणें, जीव हणें जो कोय ॥
पाप न लागे तेहनें, हिव तसु उत्तर जोय ॥ १ ॥
देवल प्रतिमा कारणें, हणे जु पृथिवी काय ॥
मन्द बुद्धि तेहने कह्या, दशमां अङ्गरे म्हांय ॥२॥
अर्थ धर्म नैं हेतै हणें, मन्द बुद्धि कह्या तास ॥
ए पिण दशमां अङ्ग मैं, प्रथम अध्ययन विमास ॥३॥
जन्म मर्ण मुकायवा, हणै जे पृथिवी काय ॥
कह्या अहेत अबोध तसु, प्रथम अङ्गरे म्हांय ॥४॥
धर्म हेतु जंतू हणें, दोष इहां नहीं कोय ॥
ए अनार्य नु वचन, आचाराङ्गे जोय ॥ ५ ॥
जिनाला सावद्य सहु, वचन मात्र पिण सोय ॥
मुझ नें आचरवा नही, प्ररुपवा नहीं कोय ॥६॥
महानिशीथरे पच मैं, कमल प्रभा इम ख्यात ॥
सावद्य पाप सहित मैं, धर्म पुण्य किम थात ॥७॥
ग्रन्थ संघ पट्टक कियो, जिन वल्लभ सुरेण ॥
जिन प्रतिमा यात्रा भणीं, किस्युं कह्यो छै तेण ॥८॥

लोहना काटा ऊपरे, मान्स डली प्रति ताहि ॥
मूकी पकडे मीननें, धीवर नर जग, मांहि ॥९॥
तिम जिन बिम्भ जिन नाम करि,मुग्ध लोक जेमीन।
जिन यात्रादि उपाय करि,कुगुरू ठगत मत हीन।१०।

॥ काव्य ॥

अत्र जिन वल्लभ सूरिकृत सघ पट्टानों काव्य ॥
आकृष्टु , मुग्धमीनान् ; बडिशपिशितवद्बिम्बमादर्श्य जैन ॥ तन्नाम्ना रम्यरूपान प्रवर क्मठान् स्वेष्ट सिद्धये विवाप्य ॥ यात्रा स्नात्रोद्युपाये नेमसितक निशा जागराद्ये श्छलेश्च । श्रद्धालुर्नामजैने श्छलित इव शठै वंच्यतेह्यजनोऽयम् ॥२१॥

॥ दोहा ॥

भस्म ग्रह ,करिके, चली, दशम् अछेर करेह ॥
मिथ्या मत कह्यु सघपट्टे, जिन बल्लभ सूरेह ॥११॥
इन्दू बिम्भ प्रतिवाल विन, ग्रहवू कुण वछेह ॥
तृतीय,काव्य भक्तामरे, न्याय विचारी लेह॥१२॥
तिम हिज जे जिन बिम्भ प्रति,जिन आणी नें नेह ॥
बाल अजाण विना केवण, अङ्गीकृत करेह ॥१३॥
द्रव्य पूजा सावद्य छे, के निरवद्य आख्यात ॥
उत्तर हिये विचारिये, छोडी नें पक्षपात ॥१४॥

निरवद्य छे तो मुनि करै, गृही सामाईक म्हाय ॥
ते पिण द्रव्य पूजा करै, तुम्ह श्रद्धा रै न्याय ॥१५॥
जो सावद्य द्रव्य पूजा हुवे, तिण सू मुनि न करेह॥
तो सावद्य माही धर्म पुन्य, केम कही जे तेह ॥१६॥
आरंभ जे छकाय नूं, पचण पचावण जास ॥
निज वा पर अर्थे किया, निन्दू गरहू तास ॥१७॥
इम कह्यु वन्देतु विषै, सप्तम गाथा जोय ॥
तो साहम्मी वच्छल विषै, धर्म पुण्य किम होय ॥१८॥

॥ इति ॥

॥अत्र वन्देतु नीं गाथा॥ छकाय समारंभे पयण पयावण ने दोसा ॥ अत्तट्ठा परट्ठा ए, उभयट्ठा चेव तं निन्दे ॥

॥ इति ॥

॥ अथ आठमों सुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे सुर्याभसुर, प्रतिमा पूजी ताम ॥
तिहा हित सुखम पाठ है, निसेस्सा ए अनुगाम ॥१॥
ते निसेस्सा नूं अर्थतो, मोक्ष अमर पद होय ॥
ते माटे शिव हेतु ए, तसु उत्तर हिव जोय ॥२॥
राय प्रसेणी में कह्यु, जे सुर्याभ सु देव ॥
ऊपनियो तब चिन्त व्युं, मन माही स्वय मेव ॥३॥

स्यु मुज ने करिवो हिवे, पाहिलां पछे ज काज ॥
स्युं मुज पाहिला श्रेय जे,श्रेय फुन पछे समाज ॥४॥
स्युं मुज पाहिलां ने पछे,हित सुख्खम निस्सेसाहि॥
अनुगामी केडे हुई,इम चिन्तव्यो मन मांहि ॥५॥
सामानिक परिषध सुरे,जाणी ए अध्यवं साय ॥
कर जोडी सुर्याभ प्रति, बोल्या एम बवाय ॥६॥
जिन प्रतिमा दाढां प्रते, आप भणी अवलोय ॥
अन्य बहु वैमानीक सुरा सुरी,प्रते फुन जोय ॥७॥
अरचण जोगज जाव फुन,सेवा जोगज जेह ॥
ते माटे पाहिलां पछे, तुम नें करिवु एह ॥८॥
पाहिलां पछेज ए श्रेय, पूर्व पच्छा पिण जोय ॥
हित सुखम निस्सेसाए हैं,अनुगामिक अवलोय॥९॥
इम सांभल सुर्याभसुर, हृष्ट तुष्ट सलहीज ॥
यावत विकस्यो हृदय फुन,ऊठ्यो सेज्ज थकीज ॥१०॥
पवर सभा उप पातथी, निकली द्रह विपेह ॥
आवी नें ते द्रह प्रते, तथा प्रदत्तरा देह ॥११॥
द्रह में ऊतर स्नानकरे, जिहां सभा अभिषेक ॥
तिहां आवी, सिंघासणे, बैठो पूर्व सम्पेख ॥१२॥
सामानिक प्रषद प्रमुख, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
अष्ट सहस्र नें चोसठ फुन,जल भरिया कलशेह ॥१३॥

इन्द्राविषेक करी कहे, सुरगण में जिम इन्द ॥
तारा गण में चन्द जिम, असुर विषे चमरिन्द ॥१४॥
नाग विषे धणिन्द जिम, भरत चक्री मनु मांहि ॥
बहु पल्योपम लग तुम्हे, बहु सागरोपम तांहि ॥१५॥
च्यार सहस्र सामानिका, यावत सोलहजार ॥
आतम रत्तक देवता, तेह तणों अवधार ॥१६॥
अधपती कुलस्वामी पणों, करता सकाज सोय ॥
पालता विचरो तुम्हे, इम कहे सुर अवलोय ॥१७॥
अलंकार सभातिहां, आवी करे अलंकार ॥
आवी व्यवसाए सभा, पुस्तक वांच तिवार ॥१८॥
पछे आय सिद्धायतन, प्रतिमादिक पूजेह ॥
सूत्रे विस्तार छे बहू, इहां कह्यु संक्षेपेह ॥१९॥
इम प्रतिमा दाढा पनग, पूतलिया दिक पेख ॥
बहु वाना पूजा तिणें, स्वर्ग स्थित थी देख ॥२०॥
ऊपजियो सुर्याभ तब, चिन्तवियो मन जेय ॥
पूर्व पछें करिवु किस्यु, मुफ पूर्व पछे स्यु श्रेय ॥२१॥
जेह कार्य कीयें छतें, पूर्वे पछे, स्युं मोय ॥
हित सुख प्रमुख भणी हुइ, इम चिन्तवीयो सोय ॥२१॥
धर्म कार्य तो जाणतो, सम दृष्टी थो जेह ॥
तेह तणो स्यू चिन्तवे, किम तसु अमर वदेह ॥२२॥

पिण राज बैसतां कृत्य जे, करितु पूर्व पछेह ॥
तेह कार्य संसार नों, मङ्गल हेतु कहेह ॥२४॥
तेह रीत नवी जाणतो, नवो ऊपनो एह ॥
तिण स्यूं चिंतवो सुज किस्युं, करिवो पूर्व पछेह ।२५।
एह भाव सुर्याभना, सामानिक सुर धार ॥
वलि परिषदनां देवता, जाण लिया तिण वार२६।
ए जूना था ते भणीं, राज बैसतां ताय ॥
कारज करवो तेहनां, जांण हूंता आविकाय ॥२७॥
ते माटे सुर स्थिती हुंती, ते दीधी तिणें बताय ॥
जिन प्रतिमां दाढा भणी, कह्यो पूजवु ताय ॥२८॥
स्वर्ग रीत जाणी वेहु, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
पूजा हित सुख प्रमुख पिण, प्रभु न कह्या वच एह२९
पुव्वी पच्छा पाठ त्यां, पाहिला पछे सुजोय ॥
हित सुख आदि कह्यो सुरे, पिण पेचा पाठ न कोय३०
पूर्व पछां ते इह भवे, द्रव्य मङ्गल कहिवाय ॥
विघ्नोपशम अर्थे किया, राज बैसतां ताय ॥३१॥
श्रावक तुंगिया नां स्थिवर, वन्दन जाता कीध ॥
सरिशव द्रोबाक्षत दही, द्रव्य मङ्गलीक प्रसिद्ध ॥३२॥
उत्तराध्ययन बावीस में, द्रव्य मङ्गल संवाद ॥
तोरण जातां नेम कृत, दधी अक्षत द्रोबादि ॥३३॥

तिमहिज,सुर्याभे करी, मसारिक मगलीक ,॥
पूजा जिन प्रतिमादि नीं,स्वर्ग स्थिती तद तीक ३४
प्रभू वन्दन अवशर कह्यु, पेचा हित,सुख आदि ॥
पेचा ते पर भव विषे, देखो वज असमाधि ॥३५॥
प्रतिमां त्या पूजी पच्छा,फुन वन्दन जिन राय ॥
पेचा पाठ कह्यो तिहा, राय प्रश्रेणी म्हॉय ॥३६॥
पचमा अङ्ग दुजे शतक,प्रथम उद्देसक पेख ॥
खन्दक दिक्षा अवशर, इह विध कह्युं विशेख ॥३७॥
धन काढे ग्रही लायथी, पच्छा पुराए ताय ॥
अग्नित काल थकी पछि,फुन पहिला काहिवाय ।३८।
ते ग्रही जाये,सुक्ष हुसे, ए धन ,हित सुख काज, ॥
त्तम समरथ निस्सेसाय जे फुन अनुगामिकसाज ३९
तिम जरा मरणरी लायथी,स्वातम काढया तास ॥
पर लोके हित सुख भणी,वलि सुज त्तम निस्सेसाए
मेय कह्यु धन लायथी, काढया पूर्व पश्चात ॥
हित सुचत्तम निस्मेसाय फुन,पिणपेचा पाठ त्रख्यात ४१
तिम जरा मर्णारी लायथी, स्वातम काढया सोय ॥
हुसे विरुद्ध ससारनू, ज्ञाता प्रथम सु जोय ॥४२॥
प्रतिमानीं पूजा तिहा, लायथकी धन बार, ॥
काढे तिहां पच्छा प्रथम, ते हव भव्यो नाम ॥४३॥

जिन वन्दन पेचा कह्यु, चारित गृहा परलोग ॥
ते परभव हित सुख प्रमुख, देखो दे उपियोग ॥४४॥
कोई कहे प्रतिमां तणीं, पूजा छे निरदोख ॥
हित सुखखम निस्सेसाए कह्यु, निस्सेसाय ते मोख४५
तसु कहिए धन लायथी, काढे तसुं पिण सोय ॥
हित सुखखम निस्सेसाए कह्युं, इहा मोख स्यूं होय४६
धन काढे जे लायथी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
दारिद्रथी मूकायवो, ते मोख दारिद्रनीं ख्यात ॥४७॥
तिम पूजा मंगलिक अरथ, इह भव पूर्व पश्चात ॥
विघ्नथकी मूकायवो, ते मोख विघ्ननीं ख्यात ॥४८॥
शतक पन्नर में भगवती, आणंद थिवर प्रतेह ॥
गोशाले जे वणिक नू, आख्युं दृष्टान्त देह ॥४९॥
चौथो वल्मू फोडता, वृद्ध पुरुष तिहवार ॥
फोडक हाला पुरुष नें, हित सुख वंछणा हार ॥५०॥
पथ्य आनन्द कारण तणा, वछणा हारो तेह ॥
अनुकम्पा कारक तिको, निश्चय यश वन्छेह ॥५१॥
निस्सेसाए नू अर्थ जे, आख्यो वृत्ति विषेह ॥
वंछे मोखज विपतनीं, विपत मूकाय वू जेह ॥५२॥
तिम प्रतिमा पूजे तिहां, निस्सेसाय आख्यात ॥
विघ्नतणी ए मोख है, विघ्न मूकाय वू ख्यात ॥५३॥

ए द्रव्य मंगल राज बैसतां, जे जग माहि गिखेह ॥
विघ्नपडे नहीं राज में, दधी अच्चत जिम जेह ॥५४॥
कोई कहे प्रतिमा तणीं, पूजाथी कहिवाय ॥
अनुगामिया ए कह्यो, फल तसु केडे आय ॥५५॥
तसु कहिये धन लायथी, कोढे तसु पिया सोय ॥
अणुगामिया ए इसो, पाठ सरीसो जोय ॥५६॥
जे धन कादे लायथी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
तसु फल धन कोढण तणा, जिहा जाय तिहा आत५७
विमान अधपती अभव्यथा, स्वर्ग तणी स्थिती मंत ॥
सहु सुर्याभ तणीं परें, प्रतिमा दिक पूजंत ॥५८॥
तिम पूजा प्रतिमा तणीं, ए भव पूर्व पश्चात ॥
तसु फल द्रव्य मगल तणा, जिहा जाय तिहा आत५९
शुभ सूचक ससार में, दधी अच्चत द्रोवादि ॥
तिम पिया ए सुरलोक में, शुभ सूचक सेवाद ॥६०॥
भाषा श्री जिनराय नीं, गावे विवाह विपेह ॥
तिम पूजा प्रतिमा तणीं, वलि णमोत्थूण गुणेह ।६१।
राज बैसतां कार्य्य जे, सहु ससारिक हेत ॥
स्वर्ग स्थिती माटे किया, धर्म पुण्य नहीं तेथ ॥६२॥
कोई कहे पूजा किया, ए भव विघ्न मिटेह ॥
पुण्य बध किम नवि कह्यो, हिव तसु उत्तर लेह ॥६३॥

चढयो शूर संग्राम में, कर बहु जन संहार ॥
आव्यू जीत फते करी, सुयस करे नर नार ॥६४॥
सावद्य युद्ध तिणें करी, अशुभ कर्म बधाय ॥
ते अशुभ कर्में करी, सुयस हुवे किम त्हाय ॥६५॥
नाम कर्मनी प्रकृत्ती, यसो कीर्त्ती पुन्य जेह ॥
तें तो पाछल भव बधी, वर शुभ योग करेह ॥६६॥
ते यसो कीर्त्ति पुराय प्रकृत्ती, युद्ध समय सुविचार॥
उदय आवी तिण कारणें, सुयस करै नर नार ॥६७॥
जन बहु जाणें युद्धथी, सुजस थयो जग माहि ॥
पण नहीं जाणें पूर्व बध, पुराय थकी जस पाय ।६८।
लुगियाना श्रावक किया, विघ्न हरण रे काज ॥
दधी अत्तत द्रोबादि जे, इण हिज नेम समाज ॥६६॥
दधी अत्तत द्रोवादि करी, अशुभ कर्म बंधाय ॥
निघ्न मिटे किम तेहथी, किम सुख सम्पति पाय ।७०।
विघ्न मिटे अरिजन हटे, सुख सम्पति पामेह ॥
ते पुराय प्रकृत्ति पूर्व भवे, बधी शुभ जोगेह ॥७१॥
ते पुराय प्रकृत्ती कदा, मङ्गल कियां पछेह ॥
उदय आया सुख सम्पजे, वलि बहु विघ्न मिटेह ।७२।
जन जाणें मङ्गल थकी, हित सुख प्रमुख जे पाय॥
पण नहीं जाणें पूर्व बंध, पुराय थकी ए थाय ॥७३॥

पुत्रादिक परणायवे, आरा मोसर आदि ॥
सुयस हुवे ते पूर्व बध, पुराये करी सम्वाद ॥७४॥
ब्रह्मा विष्णु महेश फुन, देवी पूजा आदि ॥
कीधा सुख सम्पती मिले, ते पूर्व पुराय प्रमाद ॥७५॥
महा आरम्भ महा परग्रही, करे पंचेन्द्री घात ॥
मास भक्षण ए चिहुं थकी, नरकायु बधात ॥७६॥
नरके पचेन्द्रीय पणों, पुराय प्रकृती छे जेह ॥
ते तो छे पूर्व बंध्यो, वर शुभ जोग करेह ॥७७॥
पण महा आरम्भ आदिजे, चिहुं कारण करि जोय ॥
पचेन्द्री पण नहीं बधे, न्याय हिये अवलोय ॥७८॥
तिम प्रतिमा पूज्या छता, हित सुख प्रमुख न थाय ॥
पूर्व बधे पुराये हुवे, हित सुखक्षम निस्सेसाय ॥७९॥
वर सुर्याभ विमाननों अवपती देव किवार ॥
मित्थ्या दृष्टी पिण हुओ, भव्याभव्य विचार ॥८०॥
जे सुर्याभे सांचवी, तेहिज रीत तिवार ॥
राज बेसता सांचवे, विमान अधपती धार ॥८१॥
प्रतिमा दिक पूजे तिके, वलि नमोत्थुणं गुणेह ॥
तिण सू ए स्थिती स्वर्ग नीं, मङ्गलीक हेतेह ॥८२॥
बहु सागर सुर सुरी तणा, अवपती पणों करेह ॥
ए पिण वच है देव नृ, देखो पाठ विषेह ॥८३॥

आयू जे सुर्याभनूं, च्यार पल्योपम ख्यात ॥
बहु सागर लग किम रहैं, पेखो तज पखपात ॥८४॥

॥ गीतक छन्द ॥

प्रतिमा तणी पूजा तिहां सुर्याभनें सुरआखियो पुव्वी अनें पच्छा हीयाए । आदि पाठ सुभाखियो पुव्वी पच्छा ते इह भवे संसार नां मंगलीक ही । तुन्नियादि ना जिम विघ्न हरवा । द्रोव सरसव तिम वही ॥ १ ॥ सुर्याभ जिन वन्दन तणी मन माहि धारी छै तिहां । पेचा हियाए पाठ आदज प्रगट अन्तर ए जिहां । पेचा तिको पर भव विषे हित सुख प्रमुख पहिछाया चू । पच्छा अनें पेचा उभय तु अर्थ दिल में आणिये वू ॥ २ ॥ खन्धक कह्यो धन लायथी काढे तिको चिन्ते सही । पच्छा पूराए हिया सुहाए आदि पाठ सु प्रगट ही । तिम जरा मरणाज लाय थी निज आतम प्रति काढयां थकें । मुझ हुसे परलोके हियाए । प्रमुख पाठ कह्या तिकें ॥ ३ ॥ प्रतिमा तणी पूजा अनें धन लायथी काढे वही । पच्छा हियाए पाठ छे पिण पेचा वा परभव नहीं । सुर्याभ जिन वन्दन अनें

जे खन्धकें दीत्ता ग्रही । पेचा तथा परभवे यह
वु पाठ पिण पच्छा नहीं ॥ ४ ॥ चंपा तणा जन
वृन्द जिन वन्दन समय ए विध कही । प्रभु
वन्दता फल पेचा भव वा इह भव हित सुखप्रमुख
ही । फुन तु गियाना श्रावकें पिण स्थिवर वन्दन
समयहा । फल वन्दना नू इह भवे वा परभवे होसे
सही ॥ ५ ॥ शिवराज ऋषी फुन ऋषभ दत्त
कह्यु प्रभू वन्दन तणू । फल इह भवे वा पर भवे
हित सुख प्रमुख हुसे घणू । इम जिन मुनी प्रते
वन्द वे फल पेचा वा परभव वही । पिण पाठ
पच्छा शब्द किहा ही सूत्र में दाख्यो नहीं ॥६॥

॥ इति ॥

॥ अथ नवभू चेइट्टो निज्भराट्टी शब्दार्थ अधिकार ॥ प्रारम्यते ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे प्रातिमा तणों व्यावच करवी सार ॥
आखी दशमां अङ्ग में, तीजे सवर द्वार ॥ १ ॥
उत्तर तसु निसुणो हिवे तिण ठामों इमवाय ॥
आराधे ए तृतीय व्रत, ते केहवुं मुनिराय ॥२॥

सूत्र भगवती में कह्यो, सीहो मुनी सुजाण ।
पाक बीजोरा वीर प्रति, बहरी आप्या आंणि ॥२३॥
अन्य केवली तेहनें, उपवादिक दे आणि ।
आराधे इण तृतीय व्रत, महा मुनी गुण खान ॥२४॥
राय प्रश्रेणी में कह्या, वीर तणा चिहुं नाम ।
कल्याण मंगल चालि, देवत चैत्य सु ताम ॥२५॥
मलियागिरि कृत वृत्ति में, अर्थ इसो आख्यात ।
कल्याणकारी ते भणी, कल्याणिक जग नाथ ।२६।
दुर्त विध्नज तेहना, उपशम कारी स्वाम ।
ते माटे जगनाथ ने, कह्यो मंगल ताम ॥२७॥
तीन लोकना अधपती, तिणसु देवत ख्यात ।
हेतु सुप्रश्न मन तणां, तिणसु चैत्य भजात ।२८।
चैत्य शब्द नूं अर्थ इम, आख्यो छै तिण स्थान।
ते माटे ए चैत्य जिन, तास वेयावच जान ॥२९॥
मुनि ना ए पिण नाम चिहुं आख्या छै बहु ठाम।
कल्याणकारी ते भणी, मुनि कल्याणिक नाम ३०
दुर्तोपसम कारी पणे, मंगल मुनि कहिवाय ।
च्यार मंगल में देखल्यो, तीजो मंगल थाय ॥३१॥
देवत कहता देव ए, पंच देवमें ताहि ।
धर्म देव मुनि ने कह्या, सूत्र भगवती मांहि ॥३२॥

भवद्रव्य देव भवान्तरे, देव हुसे ते रहाय ।
चक्री ते नर देव हैं, धर्म देव मुनिराय ॥३३॥
देवाधि देव तीर्थंकरा, तिणसु दैवत वीर ।
तीन लोकना अधपती, युग केवल गुण हीर ।३४।
भाव देव चिहु जातिना, भवन पत्यादिक जेह ।
बारम शतकें भगवती, नवम उद्देश विषेह ।३५।
ते मांटे ए चैत्य जिन ।तास वेयावच ताम ।
निरजरानू अर्थी छतो, करे मुनी गुण धाम ॥३६॥
कोई कहे ए चैत्य नू, अर्थ इहा जिन होय ।
तो छेहडे ए किम कह्यु, तसु उत्तर हिव जोय ।३७।
चैत्य तुम्हे प्रतिमा कहो, तो छेहडे किम स्यात ।
तुम लेखे तो धुर कही, पछे अन्य मुनी आत ३८
जिन प्रतिमा जिन सारषी, तुम्हे कहोछो सोय ।
ते मांटे ए आदि में, कहिवु चैत्य सु जोय ॥३९॥
इहां बाल अत्यन्त धुर, दुर्बल ग्लान पश्चात ।
स्थिवर प्रवर्तक धुर कही, पछे आचारज स्यात ४०
आचार्य्य पदतो प्रथम, कहिवु धुर अहलाद ।
ठाम ठाम व्यावच विषे, आचारज पद आदि ।४१।
इहा प्रथम बालादि कही, पछे आचारज जोय ।
तेहनु कारण को नहीं, देखो दिल अवलोय ।४२।

तिगहिज अंते चैत्य जिन, इहा आख्यु छै सोय।
तेहनु पिण कारण नहीं, हिये विचारी जोय ।४३।
मुनि सहचारी पणा थकी, प्रथम कह्या अणगार ।
पछे चैत्य ते जिन कह्या, तसु नहीं दोष लगार ।४४।
गिण अनुपूर्वी तुम्हें पद तसु इकशय वीस ।
पच्छानु पूर्वी विषे पहलां मुनी जगीस ॥४५॥
उवझाया आचार्य सिद्ध अरिहन्त अन्त कहेह ।
अनानुपूर्वी विषे आघा पाछा लेह ॥ ४६ ॥
अनुयोग द्वारे आखीओ पूर्वानुपूर्वी जान ॥
पच्छानु पूर्वी वलि अनानु पूर्वी आन ॥ ४७ ॥
पूर्वानुपूर्वी तिहां ऋषभ जाव वर्ध मान ।
महावीर यावत ऋषभ पश्चानु पूर्वी जानि ॥४८॥
आघा पाछा नाम ले, अनानुपूर्वी तेह ।
ए त्रहु अनु पूर्वी कही देखोजी चित देह ।४६।
सामाचारी दश विध कही अनुयोग द्वार विषेह ।
इच्छा मिच्छा धुर अखी पूर्वानु पूर्वी एह ॥५०॥
उत्तराध्ययन छव्वीस में, आवासिया धुर जोय ।
अनानु पूर्वी यह छै तसु दोषण नहीं कोय ।५१।
ज्ञान दर्शन चारित्र तप, शिवमग ए चिहुं सार ।
उत्तराध्ययन अट्ठवीस में, प्रथम ज्ञान सुविचार ।५२।

तिण हिज अध्ययनें कृयां, रुचि दर्शन ज्ञान चारित्त ।
इहा दर्शन धुर आखियो, तसु कारण न कथित्त ।५३।
अभिणि बोधिक धुर कही, पछे कहो श्रुत ज्ञान ।
भगवती आदि विषे प्रभु, प्रगट पाठ पहिछान ।।५४।।
उत्तराध्ययण अट्ठ बीस मे, कह्यो प्रथम श्रुत ज्ञान ।
अभिणि बोध कह्यो पछे, तसु दोषण नहीं जान।५५।
पूर्वानु पूर्वी किहा, किहा-द्वितीया अवलोय ।
अनानु पूर्वी कही किहा, तसु दोषण नहिं कोय ।५६।
पंच ज्ञान में देखलो, छेहडे केवल ज्ञान ।
छहडे दर्शन च्यार में, केवल दर्शन जान ।।५७।।
च्यार ध्यान माही वलि, छेहडे शुक्ल ध्यान ।
छेहडे गुण ठाणा मभे, अजोगी गुण स्थान ।।५८।।
छेहडे, चिहु विध देव, में, वैमानिक सुरख्यात ।
चारित्र में छेहडे कह्यु, यथा ख्यात जगनाथ ।।५६।।
वलि पट नियट्ठानें विषे, छेहडे स्नातक जान ।।
इत्यादिक बहु सूत्र में, भाख्या श्री भगवान ।।६०।।
अनानु पूर्वी करी, इहा चैत्य जिन अन्त ।
उपधि भात पाणी करी, तसु व्यावच मुनी करंत।६१।
आगवे, इम, तृतीय व्रत, महा मोटा मुनीराय- ।
द्वितीय अर्थ ए आखीयो, निमल विचारो न्याय६२

चैत्य ज्ञान धुर अर्थ कह्यु, द्वितीय अर्थ जिन जोय ।
वलि केवल ज्ञानी वदे, तेहिज सत्य सुहोय ।६३।

॥ इति ॥

॥ अथ दशमू चमर सुधर्मांगत अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे असुरेन्द्र जे, स्वर्ग सुधर्में जाय ।
त्यां प्रतिमां नु शरणा कह्यु, तसु उत्तर कहिवाय ।१।
सूत्र भगवती तृतीय शत, द्वितीय उद्देशा मांय ।
चमर वीर नू शरणा ले, स्वर्ग सुधर्में जाय ॥ २ ॥
जई सुधर्में शक्र प्रति, बोल्यो विरुई वान ।
शक्र कोप कर मूकीयो, वज्र सु ज्वाजल मान ॥३॥
पछे इन्द्र विचारियो, विन नेश्राय सुजोय ।
आवे चमर सुधर्म ए, इसी शक्ति नहि होय ॥४॥
अरिहंत अरिहंतचैत्य फुन, भावितात्म अण गार ।
आवे ए तिहुं शरणा ले, चमर सुधर्म वार ॥५॥
ते माटे महा दुःख ए, अरिहंतनीं अवलोय ।
भगवन्त नें अणगार नीं, अति आशातन होय ।६।
इम चिन्तव अवधें करी, प्रभु कहे मुज प्रति देख ।
शीघ्र गमन कर संग्रह्यो, वज्र प्रते सुविसेख ॥७॥

इहा तिहुं शरणा में प्रथम, अरिहंत केवल धार ।
अरिहंत चैत्य छद्मस्थ जिन, चिहुं ज्ञानी सुविचार ।८।
भावितात्म अणगार फुन, यह तिहु शरणे मत ।
इहा चैत्य ते ज्ञान मत, चिहु ज्ञानी भगवन्त ॥६॥
वलि मन शक्र विचारियो, अरिहन्त नों अवलोय ।
भगवन्त नें अणगार नीं, अति आशातन होय ।१०।
चैत्य स्थान भग शब्द कह्यो, भग नु अर्थ सुज्ञान ।
चिहु ज्ञानी अरिहन्त ए, पिण प्रतिमा नहि जान।११।
कोई शरण तो त्रण कहे, आशातन कहे दोय ।
'परिहन्त नें प्रतिमां तणीं, येक कहे छै सोय।१२।
शरण विषे तो पाठ त्रण, आशातन में जोय ।
दोय पाठ दाख्या हुता, तो आशातन बे होय।१३।
शरण विषे तो पाठ त्रण, आसातन में जोय ।
तीन पाठ छै ते भणी, आशातना त्रण होय ॥१४॥
प्रत्यक्ष सूत्रें शरणा तिहु, कही आशातना तीन ।
अरिहत नें भगवतनीं, वलि मुनि तणी कथीन ।१५।
तीन आशातन ने विषे, चैत्य शब्द नहीं ख्यात ।
चैत्य ठिकाणे भग कह्यु, देखो तज पखपात ॥१६॥
अरिहंत नें प्रतिमा तणो, मुनिनों शरण जु थाय ।
तो छद्म जिन नु शरण ग्रह्यु, ते किण शरणा माय।१७।

अरिहंत तो केवल धरा, तेह विषे सुविचार ।
जिन छद्मस्थ तणों शरण, आवे किण विध सार ॥१८॥
जिन प्रतिमा नू शरण कहे, तिण में पिण नहीं आय ।
तृतीय शरण जिन जिन मुनी, किम तिण विषे कहाय॥
तिण सु छद्म जिन तणु, द्वितीय शरण ए होय ।
जो प्रतिमां नु शरण हुवे, तो किम आवे मनु लोय २०
सभा सुधर्मा थी निकट, सिद्ध आयतन जाय ।
जिन प्रतिमा नु शरण तो, ग्रहण करतो त्हाय ॥२१॥
ते माटे इहा चैत्य नु, अर्थ ज्ञान अवलोय ।
अन्य ठाम पिण चैत्य नु, अर्थ ज्ञान कह्यु सोय ॥२२॥
चोवीस, तीर्थंकर तणां, चैत्य रूख, चोवीस ।
समवायङ्ग, विषे कह्या, ए ज्ञान रूंख सु जगीस ॥२३॥
चैत्य ज्ञान केवल, लह्यु, जिण तरु तल जिनराय ।
चैत्य वृक्ष ए जाणवा, ए ज्ञान वृक्ष कहिवाय ॥२४॥
तिमहिज अरिहंत चैत्य प्रति, चिहु ज्ञानी अरिहंत ।
द्वितीय शरण, ए जाणवो, देखोजी मतिवंत ॥२५॥
द्वितीय आशातन नें विषे, चैत्य स्थान भगवंत ।
इहा अर्थ जे भग तणों, कहिए ज्ञान सुतंत ॥२६॥
ते माटे, अरिहंतनो, प्रतिमांनो अवलोय ।
शरण करे न ते इहा, नथी समजे मोय ॥ २७ ॥

॥ अथ इग्यारमू वली कम्मा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे रलीकम्म शब्द, सूत्र विषे बहु स्थान ।
तेह तणुं स्यु अर्थ है, हिव तसु उत्तर जान ॥१॥
पंचमुद्देशे द्वितीय शत, तुङ्गिया तणां विचार ।
श्रावक स्थिवर सु वादवा, त्यार थया तिह वार ॥२॥
स्नान करी वली कर्म कृत, तास अर्थ वृत्ती कार ।
कीधो छै ग्रह देवता, देखो हिये विचार ॥३॥
इमहीं उववाई में कह्यो, प्रवृत्ति वादुक कीध ।
वलि कर्म स्वग्रह देवता वृत्ती विषे सु प्रसिद्ध ॥४॥
केइक इहा ग्रह देवता, जिन प्रतिमा कहै हेव ।
पिण इतलो जाणें नहीं, ए किम घरना देव ॥५॥
तीर्थंकरतो छै सही, तीन लोकना देव ।
ते किम जिन प्रतिमा भणीं, घरनां देव कहेव ॥६॥
जिन प्रतिमा जिन सारषी, इम पिण कहता जाय ।
वलि स्थापे घर देवता, ए किण विध मिलसे न्याय ७
कदापि कुल देवी प्रते, कहिये घरनां देव ।
लोकीक, हेतें पूजता, श्रावक पिण स्वमेव ॥८॥

जेह देवता शब्द नित, स्त्री लिङ्ग वाची होय ।
कह्युं अमर में ते भणी, न्याय हिये अवलोय ॥९॥
नवम उद्देशे सप्तशत, वर्णा कीय वलीकर्म ।
अर्थ देवता नूं कियो, वृत्ति विषे ए मर्म ॥ १० ॥
वली कर्म नुं अर्थ धर्मसी, स्नान तणो ज विसेस ।
कीधो वलि कर्म शब्द करी, आया कारज सेस ॥११॥
ज्ञाताध्येयनें दूसरे, सुत वन्छा नें हेत ।
नाग भूत यत्त पूजवा, गई सुभद्रा तेथ ॥१२॥
पुष्करणी में स्नान कर, कीधा वलीकर्म जोय ।
ए वाव मधे किया देवनों, प्रतिमा पूजी सोय ॥१३॥
भीनी साडी उढणी, एहवी छतीज तेह ।
कमल वहु ग्रही नीकली, पुष्करणी थी जेह ॥१४॥
बहु पुस्प गन्ध धूपणों, माल्य प्रमुख अवलोय ।
काढे जे मूक्या प्रथम, तेह ग्रहीं ने सोय ॥१५॥
पछे नाग घर आय नें, प्रतिमा पूजी आम ।
जाव वैश्रमण नी वलि, पूजी आसी ताम ॥१६॥
वलीकर्म पुष्करणी विषे, कीधो धुर आख्यात ।
ते पुष्करणी नें विषे, किया देवनीं जात ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

मल्ली पिता नें पासरे, आवता न्हाया कह्या। जाव
शब्द मे तासरे, वली कम्मा ए पाठ छे ॥१८॥
वलि मल्ली पट राजानरे, समझावा आवी तदा।
जाव शब्द में जानरे, वली कम्मा ए पाठ छे ॥१६॥
देखो मल्ली भगवानरे, प्रतिमा पूजी केहनी।
अध्ययन अष्टम् जानरे, आख्यो ज्ञाता नें विषे ।२०।
वलीकम्मा नू जांगरे, अर्थ कहे पूजा तणों।
ए जिन प्रतिमा नीं मांगरे, क पूजा कुल देवनीं ।२१।
जो स्थापे जिन बिम्बरे, तो मल्ली तीर्थंकर छना।
पूजे तेह अचम्भरे, वलि प्रतिमा किण जिन तणी २२
जिन प्रतिमा नीं तायरे, मल्ली नांय पूजा करी।
तो भावे मुनि पायरे, देखी प्रणमें के नहीं ।२३।
वलि अढी द्वीपरे म्हायरे, भावे जिन उत्कृष्ट थी।
इक सो सित्तर थायरे, जघन्य वीस थी नवि घटे॥२४॥
त्यां द्रव्ये जिन घर मांयरे, भावे जिन वंदे के नहीं।
वलि तसु दाख सुहायरे, तसु लेखे किम नहिं सुणों२५
मल्लिनाथ घर माहिरे, जिन प्रतिमां पूजीकहे।
तो द्रव्ये जिन पिण ताहिरे, भावे जिन वन्दे नं किम२६

जो स्थापे कुल देवरे, मल्लिनाथ पूजा करी ।
सुर सहाय स्वयमेवरे, किम न करे श्रावक समकती २७
स्नान तणु ज विसेसरे, अर्थ कहे वली कर्म नू ।
तो टालियो क्लेश असेपरे, सहु ठाम वसेल स्नान नू २८

॥ दोहा ॥

भगवती नवमा शतक में, तेतीस में उद्देश ।
जमाली मंजन घरे, स्नान वलीं कर्म सेप ॥२६॥
अलकार कर नींकल्यो, मंजन घर थी हेव ।
इण न्हावा नां घर विषे, केहवो पूज्यो देव ॥३०॥
देवा नन्दा ब्राह्मणी, वलीकर्म मंजन गेह ।
तिण न्हावा नें घर किसो, पूज्यो देव कहेव ॥३१॥
द्वितीय उपाङ्ग प्रदेशी नृप, देव पूजवा जाय ।
पहिला न्हावा घर विपे, वली कर्म कीयो ताय ।३२।
इण न्हावा नां घर विपे, किसो पूजीयो देव ।
देव पूजवा तो हिवे, जावे छे स्वय मेव ॥ ३३ ॥
ज्ञाताध्ययने सोल में, द्रोपदी मजन गेह ।
स्नान वलीकर्म कौतुक, पवर वस्त्र पहरेह ॥३४॥
मजन घर सु नींकली, आवी जिन घर मांय ।
इतरा सुधी पाठ छे, देख विचारो न्याय ॥ ३५ ॥

पहला तो न्हावो कह्यो, पछे कह्युं वलिकर्म्म ।
पछे वस्त्र पहरया कह्या, हिव जोवो ए मर्म्म ।३६।
स्त्री जाति सुभाव नम, थई न्हावा बैठी जेह ।
त्यां न्हावा ना घर विषे, केहवो पूज्यो देव ॥३७॥
वलीकर्म कर जिन घर विषे, प्रतिमा पूजी आय ।
तो वली कर्म मंजन घरे, ते केहनी प्रतिमा थाय ।३८।

॥ सोरठो ॥

अपात चिलाती न्हायरे, कय वलि कम्मा पाठ त्यां ।
जम्बू द्वीप पन्नती मांयरे, किसो देव त्यां पूजीयो ३६

॥ दोहा ॥

कोणिक जिन वन्दन गयो, कह्यो स्नान विस्तार ।
वली कम्म शब्दजमूलगो, नथी तिहां अवधार ।४०।

॥ अथ कोणिक जिन वंदवा गयो त्यां न्हावा नूं पाठ उववाई सूत्र में कह्यो ते लिखीये छे॥

जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ गच्छइत्ता मज्जन घरं अणुपविसइ२त्ता समुत्ताजाला उलाभिरामे विचित्त मणिरयण कुट्टिमतले रमणिज्जे न्हाण मडव सि णाणामणिरयण भत्ति चित्त सि न्हाण पीडंसि सुहाणिसणे सुद्धोदगेहिं गंधोदगेहिं पुप्फोदगेहिं सुभोदगेहिं पुणो२कल्लाणग पवरमज्जण वि-

हिए मज्झणघरं तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरं मज्झ णावसाणे पम्हल सुकुमालगंध कासाइय लूहियंगे सरस सुरहि गोसीस चंदणाणु लित्तगाए अहय सु महग्घ दूसरयण सु संवुए सुइ माला वण्णग विलेवण आविद्ध मणि सुवण्णे कप्पिय हार-द्धहार तिसरय पालंब पलंबमाणे कडिसुत्त सुकय सोहे पिणद्धगे विज्जे अंगुलिज्जे कल लियगय आभिर्य कया भरणे वरकडग तुडिय थंभियभुए अहिय रूवसस्सिरीए मुद्दिया पिंगलंगुलिय कुंडल उज्जोवियाणणे मउड दित्त सिरए हारोत्थय सुकयरइय वच्छे पालंब पलंबमाणे पडसुकय उत्तरिज्जे णाणामणि कणग रयण विमलमहरिह णिउणोविय मिसिमिसंत विरइय सु सिलिट्ठ विसिट्ठ लट्ठ आविद्ध वीर वलये किं बहुणा कप्परुक्खए चेव अलंकिय विभूसिए णरवई सकोरंट मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज माणेणं चउ चामर वालवीजयंगे मंगल जय सद्द कयालोए म-ज्जण घराउ पडिणिक्खमइ २ त्ता ॥ इति ॥

॥ सोरठा ॥

वली कर्म शब्द जेहरे, पूजा जिन प्रतिमा तणी तो कौशिक अधिकारेहरे जिन वदन समय ए न किम ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप पन्नती एमरे, भरतेश्वर नां स्नान नुं, विस्तार कौशिक जेमरे, त्यां वली कम्मा पाठ नहीं ॥ ४२ ॥ स्नान तणो जिण स्थानरे, विस्तार पणो नवि वरणव्यू, त्यां वली कम्मा जानरे पाठ देख निरणय करो ॥ ४३ ॥

जलाजली प्रमुखेरे, स्नान करतां जे करे, कुशला
दिक प्रतखेरे, स्नान विपेसण यह छे ॥ ४४ ॥ ते माटे
अवलोयेरे, वली कम्मा जे पाठ नु, स्नान विपसण
सोयेरे, अर्थ धर्म सी इम कियो ॥ ४५ ॥ वृत्तिकार
कह्यु सोयेरे वली कर्म्म ते ग्रह देवता, तसु पूजा
अवलोयेरे, इहा कुल देवी सम्भवे ॥४६॥ स्नान
विपेसण होयरे, वा पूजी ग्रह देवता, उभय अर्थ
अवलोयेरे सत्य सर्वग्य वदे तिको ॥ ४७ ॥

॥ अथ असहेजाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

वलि कहे श्रावक समकती, च्यार जाति ना देव ।
तास साम्फ वंछे नहीं, सूत्र विषे ए भेव ॥ ४८ ॥
ते माटे वली कर्म्म ते, जिन प्रतिमा पूजत ।
पिण कुलदेवी अर्थ नहि, हिव तसु उत्तर मत ।४६।

॥ सोरठा ॥

असहेज्जा पाठ नू जाणरे अर्थ दोय हे वृत्ति में ।
आपद पडयें सुजाणरे साम्फ न वंछे देव नू ।५०।

पोते कीधा पापरे, ते पोतेहीज भोगवे ।
अदीन मनो वृत्ति स्थापरे, एक अर्थ तो इम कियो ५१
वलि पाखडी आयरे, चलावें समकित आदि थी ।
तो नहीं वछे सहायरे, शमर्थ स्वयमेव हटायवा ।५२।
वालि जिन शासन मांयरे, अत्यन्त भावित आशता ।
ते माटे असहायरे, अर्थ दूजो इम वृत्ती में ॥५३॥
तुन्गिया नें अधिकाररे, उभय अर्थ ये आखीया ।
तास न्याय सुविचाररे, चित्त लगाई सांभलो ।५४।
दूजो अर्थ पहिछाणरे, समकित व्रत सैंठा पणो ।
प्रवर मूल गुण जांणरे, यह अवश्य गुण चाहिजे ।५५।
ए गुण खण्डित थायरे, तो हुवे विराधक पांति में ।
शुद्ध हुआं सुं तायरे, आराधक पद आखीयो ॥५६॥
जो पाखडी नें जेहरे, जाव देवा समर्थ नहीं ।
पर सहाय विन तेहरे, तासु चलायो नवि चले ।५७।
तो पिण मूल गुण तासरे, तेहनु न गयु सर्वथा ।
समकित व्रत नीं राशरे, अखड पणो रांखी तिणें ।५८।
आपद पडिया आयरे, सुर सहाय वछे नहीं ।
ए धुर अर्थ कहायरे, उत्तर गुण ते जांणवु ।५९।
मुनि धुर पहिर सम्फायरे, द्वितीय पहिर में ध्यान वर ।
तृतीय गोचरी जायरे, चौथे पहिर सम्फाय फुन ।६०।

उत्तर गुण ए च्यारे, कह्या विचक्षण मुनि तणो ।
ज्यो नकरे अणागारे, तो संयम में भंग नहीं ।६१।
तिम श्रावको यहो, उत्तर गुण असहायता ।
सुर सहाय वंछेहर, तो समकित में भंग नहीं ।६२।
सूत्र उववाई माहिरे, अम्बड नें अधिकार विण ।
जार शब्द में ताहिरे, असहेज्झा ए पाठ है ।६३।
तास अर्थ वृत्ति मायरे, एक इज कीधो अछे ।
आपद सुर असहायरे, ए अर्थ कीधो नथी ।।६४।।
कु तीर्थक पेरित्तरे, समकित में अविचल पणों ।
पर सहाय नवि चित्तरे, उववाई वृत्ति में कह्यो ।६५।
रायपसेणी वृत्तिरे, असहेज्झा नूं अर्थ जे ।
कीधो अधिक पवित्तरे, चित्त लगाई सांभलो ।६६।
कु तीर्थक प्रेरितरे, समकित से अविचल पणों ।
पर सहाय नवि चित्तरे, यह अर्थ इक हिज तिहा ।६७।
आपद सुर असहायरे, यह अर्थ कीधो नथी ।
कु तीर्थक यो ताहिरे, न चले एहिज अर्थ त्यां ।६८।
आनन्दा दिक सारे, असहेज्झा पाठ कह्यो तिहां ।
छ छडी आगारे, देवाभिउगे पाठ में ।। ६६ ।।
अन्य तीर्थी नें धारे, तथा देव जे तेहना ।
श्रद्धा भृष्ट अणगारे, अन्य तीर्थी ग्रह्या तेहनें ७०

नकरूं वन्दना ताहिरे, नमस्कार पिण नहिं करू
पहला बोलूं नाहिरे, अशणा दिक देवूं नहीं ।७१
अभिग्रह यह विसेषरे, छ छडी आगारत्यां
राजाने आदेशरे, तथा कुटम्ब आदेशथी ।।७२
बलवत तणां प्रयोगरे, देव तणो परवश पणीं
कुटम्ब वडांने योगरे, अटवी विषेजे कारणे ।।७३
ए खट तणे प्रकाररे, अन्य तीर्था दिक बहु भणीं
वन्दे करि नमस्काररे, अशणादिक दे तेहनें ।७४
आपद उपजे आयो, अथवा तेहनां भय थकी
वांन्छे देव सहायरे जाणे सावद्य तेहने ।।७५।
तसु समकित किम जायरे, समकिततो श्रद्धा अछे
हिवे निचोण न्यायरे, श्रद्धा कार्ये जुवा जुवा ७६
छ छडी विन त्यागरे, ए पिण पुण्य अधिकार्थ छे ।
अधकेरो वेरागरे, व्रत सांकडा जेहना ।।७७।।
इक अशनां पच्चखाणरे कीधां से श्रावक हुवे ।
शतक सतर में जांणरे, द्वितीय उद्देशे भगवती ७८
अनर्थ, दंड परिहाररे, ए आठमूं व्रत है ।
अर्थ तणां आगाररे, न्याय हिवे तेहनुं सुणो ।८६।
अर्थ दंडणे यहरे आठ आगारज आखिया ।
द्वितीय सुयगडांगेहरे द्वितीय उद्देशे देखल्यो। ८०

आरम ज्ञात घर तेथरे, परिवारनें मित्र कारणों ।
नाग भूत यक्ष हेतरे, हिन्सादिक आरभ करै ।८१।
अर्थ दडे माहिरे, ए आठुंही आलोपा ।
नाग भूत यक्ष व्हायरे, श्रावकरे आगळे ॥८२॥
धारणीनों तिहवारेरे, अकाले घन डोहला अर्थ ।
देखो अभय कुमाररे, ज्ञाता सुर आराधियो ॥८३॥
कृष्णे पिश सुपिसेखेरे, लघु बधवरे कारणे ।
देव आराध्यो देखरे, अतगड मांही कह्यो ॥८४॥
चकी भर्त सु सोयरे, देवी देव भणीं तिणे ।
जम्बू द्वीप पन्नत्ती जोयरे, अट्ठम करि आराधियो ८५
वलि मुक्या छ बांणरे, नमस्कार सुरनें लिख्यो ।
ए प्रत्यक्षही पहिछाणरे, बन्छ्यो सहाय देवनूं ८६
वलि चक्री भर्तेशरे, चक्रतणी पूजा करी ।
इम हिक सुर सम्पेखरे, पूजे स्वार्थ कारणे ॥८७॥
शान्ति कुंथु अरि जाणरे, चक्र रतन पूज्यो के नां ।
खट खंड साधत पांणरे, अट्ठम् तेर कियाके नां ८८
लवण सुठियो देवरे, कृष्णे पिण आराधियो ।
ज्ञाता सोलम भेवरे, सुर सहाय बछ्यो तिणे ।८९।
पूर्वोक्त पहिछाणरे, देव सहायज बान्छवे ।
सम्यक् दृष्टी जाणरे, सावद्य लोकिक कृत करै ६०

समकित तास न जायरे नहीं जाय श्रावक पणों ।
जो सुर पूजे नांहिरे, तो गुण धर्मकेरो अछे ।९१।
नारद केरा पायरे, द्रुपद सुता प्रणम्या नथी ।
ए गुणछे अविकायरे, पिण पट्ट प्रणमत करी ९२
जाव शब्दरे माहिरे, कृष्णे पिण नारद भणी ।
प्रणमत कीधीं ताहिरे,पिण तसु समकित नवि गई ९३
प्रत्यक्षही पहिछाणरे, सम दृष्टी श्रावक तिके ।
शीश नमावे जांणरे, म्लेछ ना राजा प्रते ॥९४॥
तिमहिज डरतां तायरे, अथवा स्वार्थ कारणे ।
प्रणमें सुरना पायरे, ते मार्ग लौकीकछे ॥९५॥
तें माटे पहिछाणरे, पाखंडी थी नवि चले ।
दृढ शासता जांणरे, मूल अर्थ अमहेज्मनू ।९६।
वलि जे कहे इम वाणिरे, सुर सहाय नहीं वंछणा ।
तो चौवीश जिननां जाणरे चौवीस जन जखणी कहे ९७
शासण देव सहायरे, तसु थुई पडिकमणें पढे ।
वलि शेत्रुंजे त्हायरे पूजे केम चकेश्वरी ॥९८॥
तथा यती यक्ष प्रत्यक्षरे, काला गोरा भैरवे ।
मणिभद्र दिक यक्षरे, आराधे रक्षा भणी ॥९९॥
ए लेखे तो जोयरे, सहाय देवनों वछेने ।
निज श्रद्धा अवलोयरे,तुम गुरू पिण नहीं समझ्यां १००

पूजे भैरव आदिरे, श्रावक परणी जे तदा ।
शीतला दिक अहल्लादरे,तुम लेखे नहीं श्रावक पणों १०१
तिणसू देवसहायरे, लौकीक खाते वहता ।
सम्यक तास न जायरे, नहीं जावै श्रावक पणों १०२

॥ इति ॥

॥ अथ १२ मूं यात्रा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

यात्रा शेत्रुंजादिनीं, करवी केइक ख्यात ।
पिण ए यात्रा सुत्रमें, कही नथी जग नाथ ॥१॥
शतक अठारमें भगवती, दशमें उद्देशे सार ।
सोमल पूछ्या वीर प्रते, प्रश्न यात्रादि प्रकार ।२।
हेभगवत स्यूं थांहिरे, यात्रा अधिक उदार ।
इम सोमल पूछ्यां थकें, उत्तर दे जगतार ॥३॥
जिन भांपे सुण सोमिला, छै मांहरे सुखकार ।
तप अणशणा दिक नियम, तेह अभिग्रह सार ।४।
संयम वलि सज्झायते, धर्म कथा दिक जाण ।
ध्यान आवश्यक आदि वर, जाग विमल पहिछाण५
ए पूर्वे कह्या तेहनें विषे, जयणा प्रते राखे जेह ।
ते मांहरे यात्रा अछे, कह्या पवर वच यह ॥६॥

पिण शत्रुंजय दिक तणीं, जिन यात्रा कही नांहि ।
देखोजी देखो तुम्हे देखो, हियड़ा माहि ॥७॥

॥ सोरठा ॥

वृत्ती विषे इम वायरे, यद्यपि प्रभू केवल पर्यों ।
आवश्यकादि तायरे, बोल केइक नहीं छे तसु ।८।
तथापि तप नियमादिरे, तसुफलनां सदभावथी ।
तप नियमादि संचाहिरे, कहियें फल ते आशरी ६

॥ दोहा ॥

इमहिज पुप्फिया उपाङ्गमें, तृतीय अध्येयन मझार ।
पार्श्वनाथ भगवत प्रते, सोमल विप्र जिवार ॥१०॥
प्रश्न यात्रा दिक पूछिया, तप नियमादि प्रवृत्ति ।
पार्श्व प्रभू यात्रा कही, पिण गिरीनीं न कथित्त ११
ज्ञाताध्ययनें पंचमें, मुनि स्थावरचा पूत ।
तेह प्रते शुक पूछिया, प्रश्न यात्रादि प्रभूत ॥१२॥
हे भदंत यात्रा किसी, शुक पूछे ए सार ।
कह्युं थावरचा पुत्र इम, जे मुझ ज्ञान उदार ॥१३॥
दर्शन चारित्र तप वलि, संयम आदि विचार ।
योगें यत्नी जीवतीं, ए मुझ यात्रा धार ॥ १४ ॥

इहां पिण यात्रा यहहो, ज्ञाना दिकनीं जोय ।
पिण शेत्रुजा आदिनीं, यात्रा न कही कोय ॥१५॥
उत्ताराध्यन सु बारमें, हरकेशी प्रति सार ।
विप्र पूछियो थाहिरे, कुण दह तीर्थ उदार ॥१६॥
धर्म रूप मुनि द्रह कह्यो, ब्रह्मचर्य अवलोय ।
तीर्थ शान्ति कारी कह्यो, पिण गिरनें न कह्यो कोय १७
शेत्रुंज्जे पव्वए सिद्धे, सूत्रमें इम गिरि ख्यात ।
पिण शत्रुंज तीर्थ सिध, इम न कह्यो गणि नाथ १८
जागा अलाहदी जोणिनें, कीधा तिहां संथार ।
बन्दनीक तो गुण अछे, जोवो हिय विचार ॥१९॥
जीव रहित तनु तेहनु, ते पिण नहिं बन्दनीक ।
तो जागा बदनीक किम, न्याय विचारो ठीक ॥२०॥
नाज खला थी ले करी, चाल्यो जे कोठार ।
सूना खला लार रह्या, चावे तेह गिमार ॥२१॥
हुराडी जे लाखा तणीं, सिकार ता ने स्थान ।
काल केतले शेठजी, छोडी तेह दुकान ॥ २२ ॥
हिव हुराडी सिकै नहीं, तेह दुकानें जोय ।
तिम शेत्रुजा दिक विषे, जिन मुनि सिद्धा सोय ।२३।
हिव ते पर्वत नें विषे, हुराडी तणू ज सोय ।
सिकारण वालो नहीं रह्यो, बन्दनीक किम होय।२४।

बन्दनीक जो गिर-हुअे, तो लिखा ऊपर त्हाय ।
पगदीधा आशातना, हुअे तुम्ह श्रद्धा न्याय ।२४।
द्वीप अढाई नें विषे, दोय- समुद्र विषेह ।
सहुठामें सीधा मुनी, पन्नवणा सोलम यह ।२५।
जिहा येक सीधा तिहा, सीधा मुनी अनन्त ।
सूत्र उववाई नें विषे, भाख्यो श्री भगवन्त ॥२६॥
इण लेखे तुम्ह वदवा, अदी द्वीप अवधार ।
फुन वे दधि प्रति बदवा, त्यां सीधा अण गार ।२७।
ते माटे वन्दनीक छे, जिन मुनि मेहा गुण धार ।
पिण स्थानक वंदनीक नही, या छ न्याय विचार।२८।

॥ इति ॥

॥ अथ १३ मू इकीशहजार वर्ष तीर्थ रहसी ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

सुत्र भगवती में कह्यो, वीसम् शतक विषेह ।
अष्टमुद्देशक वीर प्रति, गोयम प्रश्न करेह ॥ १ ॥
जम्बू द्वीपना भरत में, ए अवशर्पिणी मांहि ।
काल केतलु आपरो, तीर्थ रहिस्ये ताहि ॥ २ ॥

जिन कहे जम्बू भरत में, एह अवसर्पिणी मत ।
वर्ष सहस्र इक बीश सुण, तीर्थ रहिस्ये तत ॥३॥
तीर्थ कहिजे केहनें, इम को प्रश्न करेह ।
तसुं उत्तर तीर्थ तीजो, आगम सूत्र कहेह ॥ ४ ॥
वर्ष सहस्र इक बीश लग, रहिस्ये सूत्र उदार ।
बहु ठामें ज तीर्थ नु, सूत्र अर्थ सुविचार ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ आगम वारे, अमर कोष में आखियो ।
तीजा काण्ड मझारे, वात तरंगे जाणजो ॥६॥
निपान आगम जेहरे, ऋषि सेव्यो जल गुरु विषे ।
ए चिहु अर्थ गिणेहरे, तीर्थ शब्द कह्यो तिहां ॥७॥

॥ श्लोक ॥

निपानाऽऽगमयो तीर्थ मृषि जुष्ट जले गुरौ ॥
इत्यमर तृतीय काण्ड वाततरंगे ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ शास्त्र अवधारे, हेम अनेकार्थ अख्यू ।
द्वादश नाम मझारे, प्रथम नाम ए आखीयो ।८।

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रे १ गुरौ २ यज्ञे ३, पुण्य क्षेत्रा ४ वतार यो ५ । ऋषि जुष्ट ६ जले मन्त्रिणु ७, पाये ८, स्त्रीरज-स्यापि ९ ॥ योनौ १० पात्रे ११ दर्शनेषु १२ ॥

॥ इति हेम अनेकार्थे ॥

॥ सोरठा ॥

विश्व कोषेरे मांहिरे, तीर्थ नाम कह्यु शास्त्र तुं । नव नामा में ताहिरे प्रथम नाम ए वेखी ये ॥९॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रा १ ध्वर २ क्षेत्रो ३ पायो ४ पा याय ५ मन्त्रिषु ६ अवता ऋषि ७ जुष्टाभ ८ स्त्री रज ९ सु च वि श्रुत ।

॥ त्रिभे पात तत्त्व ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ शास्त्र इम लेखरे कह्यो मेदनी कोष में । दश नामा में देखरे प्रथम नाम ए परखरो ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रा १ ध्वर २ क्षेत्रो ३ पाय ४ नारीरज ५ सु च । अवता ऋषि ६ जुष्टाम्बु ७ पात्रो ८ पा-ध्याय ९ मंत्रिसु १०

॥ इति मेदनी याम तवर्ग ॥

॥ सोरठा ॥

गुण तीसम उत्तराज्भयणरे, बोल गुनीसम वृत्ति में ।
तीर्थ शब्दे बयसारे, गणधर वा प्रवचन श्रुत ॥११॥
भगवई वृत्ति मभ्कारे, तित्थ गणरा नों अर्थ ।
तीर्थं प्रवचन सारे, इमहिज समवा यग वृत्ती॥१२॥
तीर्थं प्रवचन, सारे, तेहना अव्यति रेक थी ।
सघ तीर्थं सु विचारे, तसु कर्ता तीर्थंकरा ॥१३॥

॥ अत्र टीका ॥

तरति येन संसार सागरमिति तीर्थं प्रवचन तदऽव्यतिरे काथेद सघ तीर्थं तत करण शीलत्वा तीर्थकर ।

॥ एहनों अर्थ वार्तिका करि कहे छे ॥

तिरै तिणकरी संसार सागर इति तीर्थ ते तीर्थ नें करिवानों शील पणा थकी तीर्थंकर कहिये, इम भगवती नीं वृत्ति में नमो

त्थुणं में तित्थगराणं अर्थ कीधो, इमहिज समवायंग नी वृत्ति में तिथं जाणवो, इहां तीर्थ नाम प्रवचन सूत्र नुं कह्यु ते पाठ अर्थ रूप सूत्र साधु साध्वी आधार रह्यो छै अनें अर्थ रूप सूत्र श्रावक श्राविका नें आधारे रह्यो छै ते सूत्र तीर्थ तो आधेय छै अनें चतुर्विध संघ आधार छै ते आधेय नें आधार मा किण ही प्रकारे करी अभेदोपचार थकी सूत्र नें तीर्थ कह्यु तेह नें करिवा नुं शील ते माटें तीर्थंकर कहिये।

इहां मुख्य अर्थ प्रवचन नें तीर्थ कह्यु ते प्रवचन रूप तीर्थ बहुल पणे प्रवचनें विषे रह्यु छ जिण सुं संघ। तीर्थ कह्यु ते प्रवचन रूपी तीर्थ थी संघ जुदो नथी ते माटे।

॥ सोरठा ॥

तीर्थ प्रवचन सार, तसु करण शील तीर्थंकर।
नमोत्थुणं में धार, राय प्रश्रेणी वृत्ति में ॥१४॥

॥ अथ टीका ॥

तीर्थ ते प्रकार समुद्रोऽनेनेति तीर्थ प्रवचन तत् करण शीला स्तीर्थ करा १२५ ॥ इति ॥

॥ एहनुं अर्थ वार्तिका करीइ कहै छै ॥

तीरीये संसार समुद्र इण करी इति तीर्थ प्रवचन सूत्र ते रूप तीर्थ करिवा नो शील थको तीर्थंकर कहिये, इहां राय प्रश्रेणी नी वृत्ति में प्रवचन ते आगम नें तीर्थ कह्यु ते आगम

रूपी तीर्थ ना कर्त्ता तीर्थंकर छै ते माटे तीरथपदे नों अर्थ तीर्थंकर कियो ।

॥ सोरठा ॥

पन्नवणा वृत्ति मझाररे, पनर भेद में तिरथ सिद्धा ।
प्रथम पदे अनगाररे, दाख्यो छे ते सांभलो ॥१५॥
सत्य प्ररूपक सोयरे, परम गुरू छै तेहना ।
वचन विमल अवलोयरे, तीर्थ कहिये तेह नें ॥१६॥
ते निराधार नहिं होयरे, तसु आधारज संघ प्रति ।
तीर्थ कहिये जोयरे, वा धुर गणधर तिहां कह्यु ॥१७॥

॥ अत्र टीका ॥

"तीर्यते संसार सागरो अनेनेति तीर्थं यथावस्थित सकल जीवाजीवादि पदार्थ प्ररूपक परमगुरु प्रणीत प्रवचनं तच्च निराधार न भवति इति तदाधारः संघः प्रथम गणधरो वा तस्मिन् उत्पन्नाये सिद्धास्ते तीर्थ सिद्धा ।"

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करीने कहेछे ॥

तिराये संसार सागर इण करी इति तीर्थ यथावस्थित सकल जीव अजीवादिक पदार्थांना प्ररूपक परमगुरुना कह्या वचन तेहने तीर्थ कहिये अनें ते परम गुरुना वचन रूप तीर्थ ते आधार विना न हुवे इण ते संघ नें आधारछै ते भणी संघ नें तीर्थ कहिजे, अथवा प्रथम गणधर नें तीर्थ कहिये ते संघरूप

तीर्थनैं विषे स्थपना के सिद्ध थया ते तीर्थ सिद्ध इहां पिण परमगुरु ते तीर्थंकर तेहनां वचन ते आगम तेहनैं तीर्थ कह्यो, ते आगम आधार विना न हुवे ते आधार माटे संघनैं तथा प्रथम गणधरनैं तीर्थ कह्यो।

॥ सोरठा ॥

आवश्यक निर्युक्तिरे, तास अर्थ में भाखथी ।
तीर्थ प्रवचन उक्तरे, समर्थ क्रोधादि जीपवा ।१८।

॥ अत्र टीका ॥

इह भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन मेव गृहते।

॥ एहनु अर्थ ॥

इहां भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन सूत्र हीज ग्रहण करिये, इहां पिण प्रवचन सूत्रनैं तीर्थ कह्यो।

॥ सोरठा ॥

इत्यादिक बहु ठामरे, तीर्थ सूत्र भण्यां कह्यु ।
ते तीर्थ प्रवचन तामरे, रहिस्ये इक वीश सहस्र वर्ष १९
प्रवचन तीर्थ सोयरे, संघ आधारे हुवे कदा ।
किण हिक वेलां जोयरे, द्रव्य लिंगी आधार हुवे ।२०।
जद को प्रश्न करंतरे, मुनिना गुण विन जेहनु ।
भण्यूं सूत्र किम हुन्तरे, तसु उत्तर हिव साभलो २१

धुर उद्देश ववहारे, बहु श्रुत बहु आगम भएयु ।
द्रव्य लिङ्गी जे धारे, मुनि प्रायश्चितले तिण कर्ने २२
इहा द्रव्य लिङ्गी आधारे, सूत्रागम थी जिन कह्या ॥
तसु श्रद्धा आचारे, विरूद्ध हुवे ते तो जुदो ॥२३॥

॥ वार्तिका ॥

ववहार उद्देशे पहले कह्यो साधूनो रूप नहिन भेष धारी बहुश्रुत बहु आगम नू जाण ते कने साधु आलोवणा करे एहवु कह्यु ए भेषधारीने आधार बहु श्रुत बहु आगम कह्यो छे ते माट तेहनु जाणपणु भएयु शास्त्रना अपनू शुद्ध आधार कह्यो ते श्रुत आगम रूप तीर्थ नू नाम लागवे ते माटे जिण हेक काले चतुर्विध संघ न हुवे तो लिंगसाचारी ने आधारे प्रवचन रूप तीर्थ माँ मत हुवे एहवुं सभाविये छे ।

॥ सोरठा ॥

वलि ववहार पवित्ते, बहु श्रुत आगम भएयूं ।
श्रावक पश्चात्कृत्यरे मुनी आलोवे तिणकनें ।२४।
इहा ग्रहस्थ आधारे, बहुश्रुत आगम जिन कह्या ।
तसु सावद्य व्यापारे, ए तो एहवी छे जुदो ॥२५॥
अर्थ रूप अवलोयरे, जाण पणु छे जेहनुं ।
ते निर्वन्धे सोयरे, सूत्र तीर्थ छे जे भण्यौ ॥२६॥

मिथ्या दृष्टी देखरे, देश ऊणा दश पूर्व धर ।
उत्कृष्टा सपेखरे, नंदी माहि निहाल ज्यो ॥२७॥
मिथ्याती आचारेरे, इहा भस्म पूर्व आखीया ।
श्रद्धा तास असारेरे, ते तो धुर आश्रव अछै ।२८।
इम हिम्फ पंचम आरेरे, किया वेरयां मुनि नहि थया ।
द्रव्य लिंग्याद्या थारेरे, सूत्र रूप तीर्थ हुई ॥२९॥
सघ आधारे जेहरे, सूत्र रूप जे तीर्थ ते ।
निरतर नहीं दीसेहरे, वर्ष सहस्र इकवीश लग ३०।
कदही सघ आधारेरे, कदही अन्य आधार हुवे ।
सूत्र तीर्थ सुखकारेरे, वर्ष इकवीश हजार लग. ३१
कोई कहे चिहु विध सघेरे, तेह भणी तीर्थ कह्यु ।
तसु आचार सु चगरे, प्रवच तीर्थ ते भणी ॥३२॥
पिण प्रवचन सु प्रशंसरे, द्रव्य लिङ्गी आधार तसु ।
तीर्थ तणोज अंशरे, किम कहियै? उत्तर तसु ॥३३॥
पण्डित मरण विख्यातरे, शत दूजे उद्देश धुर ।
पाउवगमन सुजातरे, भत्त पचखाण ज दूसरो ।३४।
मुख बचनें करिन्हालरे मरण पण्डित बे आखीया ।
मुनि अणशण विन कालरे करे तिको पण्डित मृत्यु॥
बाल मरण फुन वारेरे, मुख्य वचन करि नें कह्या ।
बाल मरण बिन धारेरे, असंयती नों बाल मृत्यु ।३५।

पूरण तापस ताहिरे, वालि जमाली तामली ।
बार मरण में नाहिरे, पिण वाल मरण ते जाणवो ३७
मुख्य वचन करि वारे, बाल मरण आख्या प्रभू ।
तिम तीर्थ संघ च्यारे, मुख्य वचन करि जाणवा ३८
पण्डित मरण पिण दोयरे, मुख वचनें करिनें कह्या ।
तिम चिहु तीर्थ जोयरे, मुख्य वचन करि जाणवा ३९

॥ एहिज अर्थ वार्तिका करिई कहे छे ॥

जिम भगवती शतक दूसरे उद्देशे पहले मुख्य वचनें करी, बाल मरण बारा प्रकार नों कह्यो अनें असयती अविरती बारा प्रकार विना चालतोही मरजाय ते पिण बाल मरण हीज छै, तथा तापसी जमाली प्रमुख नों बाल मरण हीज छै पिण ते बारा में नथी कह्यो ते माटे ये बार प्रकार बाल मरण मुख्य वचनें करी जाणवो, वा वलि पण्डित मरण बे प्रकार कह्या, एक तो पादोपगमन दूजो भत्तपच्चखाण ए पिण मुख वचनें करी कह्या, जे साधु संथारा विना आराधक पद पायो तेह पिण पण्डित मरण हिज जिम श्रवानुभूति तथा नक्षत्र मुनी नों संथारो चाल्यो नथी तो भणी भत्त प्रत्याख्यान पादोपगमन तो नथी पिण पण्डित मरण हिज छै अनें पादोपगमन भत्त पच्चखाण ए बे भेदें पण्डित मरण कह्या ते मुख्य वचनें करी जाणवा, तथा आराधना ज्ञान दर्शन चारित्र ए तीन प्रकारनीं भगवती शतक आठ में उद्देशे दशमें कही ते पिण मुख्य वचनें करी जाणवी अनें वलि तिणहिज उद्देशे श्रुत ते समकित रहित

अनें शील क्रिया सहित नें देश आराधक कह्या तिहां वृत्तिकार कह्यो ए बाल तपस्वी थोड़ो अश मुक्ति मार्ग नौं आराधे एह वा अर्थ कियो छै जिम ज्ञान रहित शील सहित बाल तपस्वी मोक्ष मार्ग नौं अश आराधै ते देश आराधक छै पिण तीन आराधना में नथी तिम द्रव्य लिङ्गी नें आधार प्रवचन सूत्र ते तीर्थ नौं अश सभवे पिण ते च्यार तीर्थ में नथी।

॥ सोरठा ॥

वर्ष इकीस हजाररे, तीर्थ रहिस्यै न्याय तसुं।
एम सभवे साररे, फुन वहु श्रुत कहे तेह सत्य ४०
वर्ष इक वीस हजाररे, तीर्थ रहिस्ये इम कह्यो।
पिण चिहु तीर्थ साररे, रहिस्ये इम आख्यो नथी४१
तें मांटे अवधाररे, तीर्थ प्रवचन सूत्र छे।
कदहि सघ आधाररे, द्रव्य लिङ्गी आचार कादि ४२

॥ दोहा ॥

सूत्र भगवती नौं पवर, मम कृत जोड विपेह।
वलि कर्म तीर्थ न्याय कह्य, ते इहा ग्रहण करेह४३

॥ इति ॥

॥ अथ चौदम् आगमा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

पन्न अनें चालीस में, जे विहु शरणा विचार१ ।
नाग भक्त परिज्ञा२ वलि, फुन पइन्नो मंथार३ ॥१॥
जीत कल्प४ पिंड निर्युक्ती५ पचखाण कल्प अवलोय।
ए छट नां नन्दी विषे, साग नहीं छै कोय ॥ २ ॥
महा निशीथ विषे कह्युं द्वितीय अध्ययन मभार ।
कु लिखत दोष देनो नहीं, तसु कारण अवधार ॥३॥
गहिभ्म महा निशीथ में, किहायक अर्द्ध शीलोग ।
किहां श्लोक किहा अक्षर नीं, पक्ती उंली प्रयोग ।४।
किहायक पानों अर्द्ध ही, किहा पत्र बे तीन ।
गयो ग्रंथ इम आदि बहु, इह विध कह्युं सुचीन ।५।
वलि कह्यु तृतीय अध्ययन में, ए पुस्तकरे माहि ।
चिंट्ठा इक पानायकी । बीजो पानो ताहि ॥ ६ ॥
तेमाटे ए सूत्रना आलावा न पामेह ।
तिहां भगण हार सूत्रातणां, सा पशुद्ध लिख्यु छै जेह ।७।
दोष न देवो तेहनो, खड खड थई एह ।
पत्र सड्या साथा वलि, जीव उदेहि जेह ॥ ८ ॥

हरी भद्र निज मतिकरी, सांधी लिख्युंज ताम ।
इमकह्यु महा निशीथ में, वलि अन्य आचार्य नाम ९
तिणसूं महा निशीथ पिण, डोहलाणो छै एह ।
सर्व मूलगो नहि रह्यो, निपुण विचारी लेह ॥१०॥
सेपरह्या खट तेह में, काइक काइक थाय ।
अङ्गसूं न मिले तेहवच, किम मानीं जे ताहि ॥११॥
टीका, चूरणि दीपिका, भाष्य निर्युक्ती जाण ।
किणही करी दीसैनथी, तिणसूंएह अप्रमाण ॥१२॥
एकादशजे अगथी, मिलता वचन सुजाण ।
सर्व मानवा योग्यमुक्त, पइन्ना प्रमुख पिछाण ॥१३॥
धुर वे अंग नीं वृत्ति जे, शीलाचार्ये किद्ध ।
अभय देव सूरें करी, नव अग वृत्ति प्रसिद्ध ॥१४॥
फुन अभय देव सुरे रची, प्रथम उपाङ्ग प्रबंध ।
चंद सूरि विरचित वृत्ति निरावलिया श्रुतस्कंध १५
शेष उपाङ्ग अरु छेदनी, मलया गिरिकृत जोय ।
हेमाचार्य वृत्तिकरी, अनुयोग द्वारनीसोय ॥ १६ ॥
हरी भद्र सूरे करी, दशवै कालिक वृत्ति ।
भाष्य अनें वलि चूर्णिपिण, पूर्वाचार्यकृत्त ॥ १७ ॥
तिम ए खटनीं नविकरी, पूर्वा चार्ये जोय ।
तिणस तिणें नमानीया, एहवु दीसे सोय ॥ १८ ॥

शेप रह्या बत्तीसजे, मानवा योग आरोग्य ।
एहथी मिलता अन्यपिण,छे सुक्त मानवायोग्य १६

॥ इति पैंतालीस बत्तीस आगमाधिकार ॥

॥अथ पनरम मुख वस्त्रिका अधिकार॥

॥ दोहा ॥

इंद्रभूति नें आखियो, मृगा राणी ताहि ।
मुहपोत्तिया इ करी, मुख बांधो मुनिराय ॥ १ ॥
तेमुखकहिये केहनें, उत्तर तसु अवलोय ।
नाकतणों ए नाम मुख, न्याय विचारी जोय ॥२॥
दुर्गन्ध आवें नाकनें, तेमाटे सुविचार ।
नाक बांधवा नी कही, राणी मृगा जिवार ॥ ३ ॥
ज्ञाता अध्ययन आठमें, दुर्गन्ध व्याप्या ताहि ।
खट राजा मुख ढांकीया, ते दुर्गन्ध नाके आय ।
ज्ञाता नवम अध्येनमें, दुर्गन्ध व्याप्या न्हाल ।
मुख ढांक्या आख्यातिहा, जिनऋपनें जिन पाल।५
ज्ञाता अध्ययन बारमें, जे जित शत्रूराय ।
मुख ढांके इम आखीया, दुर्गन्ध व्यापे त्हाय ।६।
मुखनों अवयव नाकछे, तेनाक भणी मुखख्यात।
वारुन्याय विचार नें, समझो सुगुण सुजात ।७।

होट हडवडी नाक फुन, चक्षु गाल, निलार।
मुखना अवयव ते भणी, मुख कहिये सु विचार॥८॥
धुरअङ्ग प्रथम अज्झयण में, द्वितीय उद्देश उद्दन्त।
पृथिवी वेदन ऊपरे, अथ पुरुष दृष्टन्त। ६।
पगसूं लेई शिरलगे, तनु द्वात्रिंशत् स्थान।
भालाम्बू भेदे वलि, खडगे छेदे जान॥ १०॥
तिहां होटहडवडी नाक फुन, आंखजीभ नें दन्त।
गाल निलारअरु कर्ण फुन, जू जूआ नाम कथन्त११
ए मुखनां अवयव कह्या, पिण मुख नों नकह्यो नाम।
ते माटे ए सहु भणी, मुख कहिये छे ताम॥१२॥
द्वादश आंगुल मुख कह्यो, नव मुख नौसहु देह।
अनुयोग द्वारे आखियो, देखो पाठ विपेह॥ १३॥
ललाटथी लेई करी, द्वादश आंगुल जाण।
नाक होट नें हडवटी, ए मुख तणु प्रमाण॥१४॥
गर्गाचार्य ना कुशिष्य, मुखनें विषे विकार।
भृकुटी करे कह्या प्रभु, उत्तरा ध्ययन मझार॥ १५॥
मुख नों देश निलाड छे, ते निलाड नें मुख रुयात।
भृकुटी ललाट नें विषे, प्रत्यक्ष ही देखात॥१६॥
ठाम ठाम सूत्रे कह्यु, त्रिवलि भृकुटी ललाट।
निरावलिया दिक नें विषे, प्रभुजी आख्या पाठ॥१७॥

तिमज मृगा राखी तदा, नाक भणी मुख ख्यात ।
ते दुर्गन्ध प्रति टालवा, पेखो तज पख पात ॥ १८ ॥
कर राखे मुख वस्त्रिका, जसु तीखो उपयोग ।
तो पिण नहि अटकावतसुं, नाहि सुक्ष्म सूत्र प्रयोग १६
तीखो नहिं उपयोग तसु, जतना काज सुजोय ।
मुख बांधे मुख वस्त्रिका, तो पिण दोषन होय ॥२०॥
मुख बांधे दोरे करी, कोई कहे किहां ख्यात ।
सांचूंजी सांच कह्यु, सांच प्रश्न सुजात ॥ २१ ॥
नहि तीखो उपियोग तसु, मुख बांधे सुविचार ।
वायु नी जतना भणी, पिण नहिं छे श्रृङ्गार ॥२२॥
सूत्र तणो जे गांठियो, गणी देवार्द्धि सवाद ।
भोगवणो भूली गया, तदा आयो याद ॥ २३ ॥
जाणयो बुद्धि हीणी पड़ी, लिख्या सूत्र सुख राश ।
वीर निर्वाण गया पछे, नवसय अस्सी वाश ॥ २४ ॥
तिम तीखो उपयोग प्रति, रहतो जाणे नांहि ।
दोरा सू मुख वास्त्रिका, बांधे छे मुनिराय ॥ २५ ॥
अगणा दिक प्रति बहिरतां, पांती करतां सोय ।
अन्य साधु प्रति वांमता, चरचा करतां जोय ॥२६॥
मुनि नें कार्य्य भलावतां, इत्यादिक सु प्रयोग ।
मुख बांध्या विन किमरहे, अति तीखो उपियोग

तिण, सु यतना कारणे, डोरो घाली सोय ।
मुख बांधे मुख वस्त्रिका और कारण नाहिं कोय २८
जदि कहे डोरो किहां कह्यो, तसु कहिये इम वाय ।
कान विषे घाले तिका, किसा सूत्रे मांहि ॥ २६ ॥
मुख बांधे डोरे करी, तसु करे निन्दा तात ।
कान वधावे प्रगट ए, आ किसा सूत्र नीं बात ३०
तर्क करे डोरा तणी, कहे किसा सूत्रे ख्यात ।
कान बधावे तेहनी, क्यूं नहिं पूछे बात ॥ ३१ ॥
मोर पुच्छनां देश प्रति, घाली कर्ण मझार ।
उदक थकी छांटया थकां, फूले तेह तिवार ॥३२॥
इम नित प्रति बहु खपकरी, करण वधाय विशेख ।
इम घाले मुख वस्त्रिका, किसा सूत्र में लेख ॥३३॥
कहे वचन शुद्ध यतना अर्थ, घाला कर्ण मझार ।
तो डोरो पिण यतना अर्थ, न्याय सरिषो धार ॥३४॥
उदक तणां घट नें विषे, डोरी बांधे तेह ।
किसा सूत्र में ते कह्युं, देखोजी चित देह ॥३५॥
तथा तर्पणी प्रमुख जे, डोरी बांधे तास ।
ते किण सूत्रे आखीयो, जोवो हिये विमास ॥३६॥
कम्बर दिछाणा नीं करे, तसु डोरी बांधेय ।
ते पिण किण सूत्रे कह्युं, न्याय विचारी लेह ॥३७॥

वलि सीराणा - बांधता, डोरी यर्कोज जोय ।
ते पिण किण सूत्रें कह्या, उत्तर आपो मोय ॥३८॥
वलि चिरमली सूत्र में, आखी श्री भगवान ।
तसु डोरी बांधे तिका, किसा सूत्र में जान ॥३६॥
पुस्तक नें पूठा तणों, पहलारे पाडिआण ।
डोरी बांधे छै तिका, किसा सूत्र में वाण ॥ ४० ॥
वलि लेखणा राखणा, कलम दान कहिवाय ।
डोरी बांधे तह नें, किसा सूत्रेंर म्हाय ॥ ४१ ॥
लिखवारी पाटी तणें, डोरी प्रति, बांधेह ।
किसा सूत्र में ते कह्या, देखो, तसु लेखेह ॥ ४२ ॥
तथा लीक पाना तणें, डोरी थी पाडेह ।
फाटया नी पाटी करे, किसा सूत्र में तेह ॥ ४३ ॥
कारण में पग प्रमुखे, पाटो बांधे, देख ।
डोरी बांधे तेह नें, किसा सूत्र में लेख ॥ ४४ ॥
गोछारे डोरया थकी, पात्रा बांधे तह ।
किसा सूत्र मांहीं कह्या, उत्तर आपो एह ॥ ४५ ॥
डोरा सूं मुह पोतिया, बांधे जयणा काज ।
तर्क करे तसु पूछि ए, इतला बोल समाज ॥ ४६ ॥
कहे अष्ट पहिर बाध्या रहे, त किण सूत्रें ख्यात ।
तो एक पहिर बांधे तिका, किण सूत्र अवदात ।४७।

चरांश में इक पहिर लग, कर्ण घाल बाधंत ।
ते पिण किणी सिद्धान्त में, भाष्यो नहिं भगवन्त४८
अष्ट पहोर बांध्यां थकां, दोष घणों जो होय ।
तो एक पहोर बाध्यां थकां, दूषण थोडो जोय ॥४६॥
जो एक पोहर बांध्या थकां, दोष नहिं छै कोय ।
तो आठ पहर बांधै तसु, दोषण किण विध होय ।५०।
डोरो घाले कर्ण में, तेहनो दोषण होय ।
तो कर्ण विषे मुखवस्त्रिका, घाल्या दोषण जोय ।५१।
जो कर्ण विषे मुख वस्त्रिका, घाल्यां दोष न कोय ।
तो डोरो घाले कर्ण में, तो पिण दोष न होय ॥५२॥
कोई कहे मुख वस्त्रिका, अष्ट पहिर लग एह ।
बाध्या कफ में ऊपजे, जीव असंखित जेह ॥ ५३ ॥
तो मुनि अज्भा तनु विषे, थयो गुम्बडो कोय ।
राधि रुधिरे ऊपरे, पाटो बांधे सोय ॥ ५४ ॥
जीव समुच्छिम ते विषे, उपजे तिणरे लेख ।
पाटारे लागा रहे, रुधिर राधि सपेख ॥ ५५ ॥
जब कहे तनुनीं गर्म थी, जीव न उपजे आय ।
तो कफ में किम ऊपजे, एक सरिपो न्याय ॥५६॥
पाटे जीव न ऊपजे, तो कफनीं क्यू ताण ।
समभ्कोजी समभ्को तुम्हे, समभ्को चतुर सुजाण ।५७।

तनु असज्झाई मुनि तणों, इक विध त्रण संबेद ।
रतुश्वला नें त्रण फुन, अज्झा नें बे भेद ॥५८॥
ए तनु असज्झाइ विषे, मुनि अज्झा नें त्हाय ।
निज निज स्थानक नें विषे, करवी नहिं सज्झाय ५९
ए तनु असज्झाई विषे, मुनि अज्झा नें ताहि ।
देवी लेवी वांचणी, कल्पे माहो माहि ॥ ६० ॥
ववहार उद्देशे सात में, इम भाषी प्रभु वाणि ।
राखो जिन वच आस्था, चमको मती सुजाण ॥६१॥
तनु सलम वस्त्र नें विषे, जो जतु उपजेह ।
तो माहों माहीं वांचणी, तसु आज्ञा किम देह ॥६२॥
जो उघाडे मुख बोलिया, न मरे वायु काय ।
तो बखाण में मुह वस्त्रिका, ते बांधे किण न्याय ६३
फुक देणी वरजी प्रभू, वायु नें अधिकार ।
दशवैकालिक देखलो, तुर्य अध्येन मझार ॥६४॥
मुख नें वायु करि मरे, वायु जीव विचार ।
दशमें अङ्गे देखलो, पहिलें आश्रव द्वार ॥ ६५ ॥
सूत्र भगवती नें विषे, सोलम शतक मझार ।
द्वितीय उद्देशे भाखीयो, कहिए ते अधिकार ॥६६॥
शक्र उघाडे मुख लवे, भाषा सावद्य सोय ।
हस्त वस्त्र मुख दे वदे, निरवद्य भाषा होय ॥ ६७ ॥

वृत्तिकार इम आखीयो, जीव सेरत्तणा सोय ।
निरवध भाषा जाणवी, अन्या सावद्य होय ॥६८॥
विक्रेन्द्री ना पन्नत्तणा, तेहना स्थानक जेह ।
ते सुरलोक विषे नथी, पन्नवणा द्वितीय पदेह ॥६९॥
धर्म सम्बन्धी वार्त्ता, करे शक्र जेहवार ।
बोले मुख ढांकी तदा, ते निरवद्य वच सार ॥७०॥
ससारिक जे वार्त्ता, करे शक्र जेहवार ।
वदे उघाडे मुख तदा, ते सावद्य वच धार ॥७१॥
तिण कारण वायु तणी, दया अर्थ सुने राज ।
मुख बांधे मुह पोत्तिया, पिण अवर नहिं छे काज ७२

॥ इति ॥

॥ अथ सतरमू स्याद्वाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे भगवंत नों, स्याद्वाद मत जोय ।
एकान्तिक कहिवू नहीं, तसु उत्तर अवलोय ॥ १ ॥
स्याद कथचित जाणवू, किण ही प्रकार करेह ।
वदवू कहिवू वादते, स्याद्वाद छे एह ॥ २ ॥
कहिये किणी प्रकार करि, ते स्याद्वाद कहिवाय ।
न्याय कहु छु तेह नों, सांभलजो चितल्याय ॥३॥

सूत्र भगवती नें विषे, शतक सात में सोय ।
द्वितीय उद्देशे भाखीयो, जीव प्रश्न अव लोय ॥ ४ ॥
किणी प्रकार करि प्रभू जीव सास्वता ख्यात ।
किण ही प्रकार असास्वता, आख्या श्री जगनाथ ॥ ५ ॥
द्रव्य थकी तो सास्वता, भाव थकी सु विचार ।
असास्वता प्रभूजी कह्या, ए स्याद्वाद मत सार ॥६॥
सूत्र भगवती नें विषे, शतक चौद में सार ।
तुर्य उद्देशे भाखियो, परमाणु अधिकार ॥ ७ ॥
कह्यो परमाणू सास्वतो, किणी प्रकार करेह ।
किणी प्रकार असास्वतो, हिव तसु न्याय कहेह ॥८॥
द्रव्य थकी तो सास्वतो, परमाणु प्रति ख्यात ।
न मिटे परम अणु पणों, किण ही काल विख्यात ॥९॥
वर्णादिक नें पज्जव करि, असास्वता अवलोय ।
स्याद्वाद वच एह छै, न्याय दृष्टि करि जोय ॥ १० ॥
वृहत्कल्प माहि कह्यु, पचमुद्देश मझार ।
प्रथम पोहर अशणादि प्रति, ग्रहिसी नें अणगार ॥११॥
तुर्य पोहिर राखी करी, ते अशणादि प्रतेह ।
भोगवणो कल्पै नहीं, सुखे समाधे एह ॥ १२ ॥
गाढा गाढ आतंक करि, तुर्य पोहिर में तेह ।
भोगवणो कल्पै तसु, स्याद्वाद वच एह ॥ १३ ॥

प्रथम पहिर वहिरी करी, कारण पडियां ताहि ।
रात्री विषे जे भोगवै, ए स्याद्वाद वच नाहि ।१४।
तुर्य पहिर आज्ञा कही, निश नीं आज्ञा नांहि ।
तिण सु निश नहिं भोगवै, कारण पडियां ताहि ।१५।
द्वितीय उद्देशे नें विषे, बृहत्कल्परे माहि ।
जल वा मदना घट तिहां, रहिवु कल्पे नाहि ।।१६।।
अन्य स्थान न मिलै कदा, तो इक बे निशि जाण ।
रहिवू कल्पे प्रभू कह्यो, ए स्याद्वाद पहि छाण ।।१७।।
तिण हिज उद्देशे आखियो, जे आखी निशि माहि ।
दीपक वा अग्नि बले, तिहा नहिं रहि वू ताहि ।१८।
जो अन्य जागा नहिं मिले, तो इक बे निशि तणस्थान
रहिवूं कल्पे प्रभू कह्यो, ए स्याद्वाद वच जान ।।१६।।
मुनि नें संघट्टो स्त्री तणों, करिवो वरज्यु स्वाम ।
सोलमा उत्तराध्ययन में, गलि बहु सूत्रे ताम ।।२०।।
बृहत्कल्प छट्टे कह्यु, नदी प्रमुख थी वार ।
अज्झा प्रति काढे मुनी, ए स्याद्वाद मत सार ।।२१।।
ग्रहस्थ पुरुष वा स्त्री भणी, नदी प्रमुख थी जोय ।
काढे मुनि वच एह वू, स्याद्वाद नहिं कोय ।। २२ ।।
दशवै कालिक देखल्यो, तुर्य अध्ययन मझार ।
सचित उदक नहिं सघटे, ए जिन आज्ञा सार ।।२३।।

बृहत्कल्प तीजे कह्यु, विहार कारण थी जोय ।
नदी उतरणी प्रभु कही, ए स्याद्वाद वच होय ॥२४॥
मरणान्त कष्टे मुनि भर्णी, सचितोदक अवलोय ।
भोगवणा प्रभु एहवु, स्याद्वाद नहिं होय ॥२५॥
उत्तराध्ययन कथा विषे, परिशह द्वितीय प्रसिद्ध ।
मर्णान्त कष्टे क्षुलक शिष्य, सचितोदक नहिं पिद्ध २६
शत अष्टादश भगवती, दशम उद्देशे देख ।
पूछ्यो सोमिल प्रभु प्रति, जे स्यु छो तुम्ह एक ॥२७॥
तथा तुम्हे स्यूं दोय छो, वा अक्षय तुम्ह होय ।
फुन स्यू अव्यय छो तुम्हे, अव स्थित तुम्ह जोय २८
के तुम्ह अनेक भूत फुन, भाव भविक अव धार ।
वीर भर्णी खट प्रश्न ए, सोमल पूछ्या सार ॥२९॥
वृत्ति मांग कह्यो तव प्रभु, स्याद्वाद प्रति ठाय ।
सर्व दोष गोचर रहित, अति लची काहिवाय ॥ ३० ॥
इक पिण हु छू सो मिला, यावत वलि अनेक ।
भूत भाव भावी अपि, हुछू इम कह्यु पेख ॥ ३१ ॥
किणा अर्थे प्रभु इम कह्यु, जाव भविक हू सोय ।
प्रभु कहै द्रव्यार्थ करी, इक पिण छू अवलोय ॥ ३२ ॥
ज्ञान दर्शन करि दोय हू, प्रदेशार्थ करि ठाय ।
अक्षय हू अव्यय अपि, अव स्थित पिण

अनेक भूत भावी अपि, हू उपियोग करेह ।
न्याय सहित उत्तर छवू स्याद्वाद वच एह ॥३४॥
इमज थावरचा सुक प्रते, ज्ञाता पंचम लेह ।
इमज पार्श्व सोमिल प्रते, पुष्फिया विषे कहेह ॥३५॥
सहु दोषण करि रहित छै, स्याद्वाद वच एह ।
विण दोषण कर सहित वच, स्याद्वाद न कहेह ॥३६॥
पूर्वापर अविरुद्ध वच, स्याद्वाद मति माहिं ।
विण पूर्वापर विरुद्ध वच, स्याद्वाद वच नाहिं ॥३७॥
इत्यादिक प्रभू आखिया, किण ही प्रकार करेह ।
नित्य अनित्यादिक जिके, स्याद्वाद वच तेह ॥३८॥
विण ज्यां किण ही प्रकार करि, कुशील में नहिं धर्म्म ।
वलि नहिं किण ही प्रकार करि, शील विषे अघ कर्म्म ॥३९॥
अज हिन्सादिक में नहीं, किण ही प्रकारे धर्म ।
किण ही प्रकार बंधे नहीं, संवर थी अघ कर्म ॥४०॥
किण ही प्रकार हुवे नहीं, सावद्य माहीं धर्म ।
किण ही प्रकार बंधे नहीं, निरवद्य थी अघ कर्म ॥४१॥
किण ही प्रकार हुवे नहीं, जिन आज्ञा विन धर्म ।
किण ही प्रकार नहीं बंधे, आज्ञा थी अघ कर्म ॥४२॥

॥ अथ १७ मूं विपवाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै विपवाद मत, प्रभु नां समय विपेह ।
किण सूत्रे वच जे कह्यु, किहा अन्यथा तेह ॥ १ ॥
किण सूत्र वच जे कह्यु, ते वच अन्य सूत्रेह ।
मिलै ते विपवाद कहै, उत्तर तास सुणेह ॥ २ ॥
अखर सप्त भङ्गी कही, जिन वाणी सुखदाय ।
सप्त नये करि सत्य वच, तसु विपवाद न कहाय ।३।
किण ही सूत्र विषे प्रभू, आख्या वयण विख्यात ।
मिलै जे अन्य सूत्र थी, ते विपवाद वच थात ॥४॥
विपवाद वच एह तो, प्रभू नां नहिं छै कोय ।
वच केवल ज्ञानी तणां, व्यभचारिक नहि होय ।५।
विपवाद जोगे करी, अशुभ नाम कर्म वंध ।
अष्टम शतके भगवती, नवमें उद्देशे सव ॥ ६ ॥
विपवाद ए अशुभ छै, तिण थी अशुभज वध ।
तो किम हुवे प्रभूजी तणां, विपवाद वच मंद ॥७॥
अ विपवाद जोगे करी, नाम कर्म शुभ वंध ।
अष्टम शतके भगवती, नवम उद्देशे संध ॥ ८ ॥

दशमा अङ्ग में देखलो, सप्तमध्येनें मांहि ।
सत्यवादी छे तेह नु, विषवाद वच नाहिं ॥ ९ ॥
सत्यवादी ससार का, तसु विषवाद वच नाहिं ।
तो प्रभूजी नां वयण ते, विषवाद किम थाय ॥१०॥
पूर्वापर अविरुद्ध वच, प्रभू ना समवाङ्ग ।
वच अतिशय पेंतीस में, अतिशय नवम सुचङ्ग ।११।
उत्सर्ग में आज्ञा किहा, किहा आज्ञा अपवाद ।
इकसूं इक विगटे न ते, पिण नहिं छे विषवाद ॥१२॥
उत्सर्गे आज्ञा नथी, ते कार्य्ये नीं जान ।
अपवादे आज्ञा कही ने विषवाद मत मान ॥१३॥
विषवाद रे ऊपरे, कहिये हेतु सार ।
निपुण न्याय वच साभलो, द्वेष हिये मत धार ।१४।
बार मास हें वर्ष ना, तेह विषे सुविधान ।
अधिक धर्म करिवा तणु, मासभाद्रवो जान ।१५।
तेह विषे पण प्रगट हें, अधिक धर्म ना दीह ।
पर्व पर्युषण प्रसिद्ध ही, पोसह प्रमुख सु लीह ॥१६॥
ते पर्युषण नें विषे, कल्प सूत्र व्याख्यान ।
तेह विषे गतका कही, सुण ज्यो सुगण सुजान ।१७।
प्रभू दशमा सुर लोक थी, भव स्थित भोगव तेह ।
चवियां पहला नें पछे, जाणयु अवधि करेह ।१८।

चवन समय नवि जाणीयों, सूक्षम काल विशेख ।
इम हिफपनरमज्झयरा में, द्वितीय आचाराङ्ग लेख१९
कल्प अनें धुर अङ्ग में, चवन काल त्रहु धार ।
एक सरिखा आखीया, हिव साहरण विचार ॥२०॥
गर्भ साहरण कियो तिहा, कल्प सूत्र में ख्यात ।
सहरिया पहिला पछे, जाणयु श्री जगनाथ॥२१॥
सहरता वेला प्रभु, वर्त्तमान कालह ।
जाणयु नहिं एहतु कह्यु, कल्प सूत्र वच एह ।२२।
आचाराङ्ग पन्नर मे कहो, साहरण प्रथम पश्चात ।
चालि साहरना वार विण, जाणयु श्री जगनाथ ।२३।
चवन काल तो समय इक, छद्मस्थ नों उपयोग ।
असंख समय नुं ते भणी, चवन न जाणयू जोग २४
सुर कार्य्य साहरण ते, समय असंख सुजाण ।
तिण सु साहरता प्रभु, जाणयु अवधि प्रमाण ।२५।
साहरतां जाणयुं नहीं, कल्प सूत्र में ख्यात ।
साहरता जाणयुं कह्यु, धुर अंगे जगनाथ ॥२६॥
कल्प सूत्र धुर अङ्ग में, ए बिहु वच आख्यात ।
वच साचो झूटो किसो, देखो तज पख पात ॥२७॥
वीर प्रभु तो एक छे, जाणयू धुर अंग ख्यात ।
नवि जाणयू कल्प कह्यु, बिहु साचा किम थात ।२८।

उभय मांहिलो एकतो, मिथ्या वचन विशाल ।
देखोजी देखो तुम्हे, देखो तज मत टेक ॥ २६ ॥
जाणपा धुर शङ्क कह्या, तेह सत्य वच जाण ।
नवि जाणयु कर्‌ये कह्यु, ते वयण अप्रमाण ॥३०॥
बृहत्करपे पच में, तनु कारण थी ताय ।
सूर्य ऊगो जाणी ने, आहार लियो मुनिराय ॥३१॥
भोगवता शङ्का पड़ी, रवि ऊगो के नाहिं ।
अथवा सूर्य आथम्यों, तथा आथम्यों नाहिं ॥३२॥
शक सहित इम भोगव्या, रात्री भोजन विराड ।
भोगवतो पामें तिको, गुरु चोमासी दण्ड ॥३३॥
इम हिम्क कारण विन रवि, ऊगो जाणी ताय ।
आहार ग्रह्यो पिण शङ्क सहित, भोगविया दंड आय ३४
दशम उद्देश निशीथ में, रात्री भोजन ताय ।
कारण सू पिण भोग व्या, दण्ड चोमासी आय ।३५।
निशीथ उद्देशे बारमे, चुर्णी विषे अवलोय ।
निशि भोजन कारण थकी, भोगवणो कह्यो सोय३६
इम हिम्क बृहत्करप तणी, चुर्णी वृत्ति विषेह ।
रोगादिक कारण मुनी, निशि भोजन जीमेह ॥३७॥
सूत्रे निशि भोजन प्रते, वर्ज्यो ते तो शुद्ध ।
चूर्णी विषे ए स्थापियो, तेह प्रत्यक्ष विरुद्ध ॥३८॥

निशीथ उद्देशे पन्नर में, आखी श्री जिन वाण ।
सचित अम्ब चूसे मुनि, दण्ड चौमासी जाण ।३६।
आख्यो चूर्णि में तिहा, शिष्य अपठित सोय ।
रोग मिटावा निमित्ते, वैद्य कथन थी जोय ।।४०।।
अथवा मारग चालता, उणोदरी छै तेह ।
अशासरते जे भोगवे, विरुद्ध कहिने जेह ।। ४१ ।।
सूत्रे वरज्यो सचित अम्ब, चूर्णिकार फुन, तेह ।
कारण पाडिया चूसनू, कह्यु विरुद्ध वच येह ।।४२।।
सचित रूख मुनि जो चढे, तो चौमासिक दण्ड ।
निशीथ उद्देशे बारमें, श्री जिन वयण सुपरड ४३
सूत्र निशीथ तणी जिका, चूर्णि विषे इम वाय ।
स्वान प्रमुख ना भय हरण, दण्ड ग्रहै मुनिराय ।४४।
प्रथम अचित दाहो ग्रहे, पछे मिश्र परि तेण ।
प्रथम परित यावत पछे, अनन्त काय नुं जेण ।४५।
रूख ऊपर मुनि नवि चढे, ए जिन आज्ञा शुद्ध ।
चूर्णि कार कह्युं सचित दण्ड, ग्रहै ते वयण विरुद्ध ४६
ऋषभ भरत फुन बाहुबलि, ब्राह्मी सुन्दरी वेह ।
लख चोरासी पूर्व नू, आयु तुर्य अछेह ।। ४७ ।।
ऋष मण्डल माहि कह्युं, ऋषभ देव भगवान ।
भरत विना वलि ऋषभना, पुत्र निर्वाण जान ।४८।

भरत तणा वालि अष्ट सुत, अष्टोतरसौ एह ।
एक समय सीझ्या तीको, विरुद्ध वचन के जेह ।४९।
ऋषभ बाहुबलि आउपा, पूर्व चोरासी लत ।
क्रिम तसुं शिव गति इक समय, पेखो तज मतपत्त ५०
शत चोदश में भगवती, सप्तम उद्देश निपेह ।
वृत्ति विषै आख्यो तिको, सामलजो नित देह ॥५१॥
पदरसौ प्रति बोधिया तापस गौतम साम ।
प्रभूरे आवत पामिया, केवल गुण अभिराम ।५२।
मां सायो वन्दो तुम्हे, श्री जिन प्रति शिरनाम ।
इम गोतम आखें छते, जिन भाषे गुण धाम ॥ ५३ ॥
ए केवल ज्ञानी तणीं, हे गौतम मुनिराय ।
लागे तुझ आशातना, वृत्ति विषै ए वाय ॥५४॥
दशवे कालिक सूत्र में, नव में अयणा विषेह ।
प्रथम उद्देशे आरमी, गाथा में इम लेह ॥ ५५ ॥
विप्र अग्निहोत्री तिको, अग्नि प्रते शिरनाम ।
आहुती पद मंत्र पढ, घृतादि सींचे ताम ॥५६॥
आचार्य प्रते इह विध, वारूं शिष्य विनीत ।
वर अनन्त ज्ञानी छतो, आराधे इह रीत ॥५७॥
हरीभद्र सूर करी, वृत्ति विषै इम उक्ति ।
शिष्य केवल ज्ञानी छतो, करे गुरू नी भक्ति ।५८।

कह्यु वृत्ति में जिन प्रते, वंदो गौतम, ख्यात ।
तसु प्रभु कही आशातना, केम मिले ए वात ।५९।
गुरु वंदे, शिष्य केवली, सूत्र विषे इम ख्यात ।
तो प्रभु वंदो इम कह्या, आशातन किम थात ।६०।
सचित आहार मुनि ने अभक्ष, पंचम अङ्ग प्रबंध ।
ज्ञाता अन्देनैं पंचमे, निरावलिया श्रुतस्कंध ।६१।
द्वितीय आचारङ्ग लागता, आधा करमी आहार ।
अप्राशुक पिण वृत्ति में, भोगवणु कह्यु वार ॥६२॥
कह्यो अफासु अभक्ष जिन, वृत्ति विषे फुन तेह ।
कह्यु भोगवणो कारणें, विरुद्ध वचन छे एह ॥६३॥
शत पण वीसम भगवती, छट्ठा उद्देशा माहि ।
बकुश उत्तर गुण तणों, पडि सेवी कह्यु ताहि ।६४।
तिणज उद्देश वृत्ति में, बकुश प्रति इम ख्यात ।
मूल उत्तर पडिशेविये, तेह विरुद्ध सजात ॥६५॥
ठाणा अङ्ग ठाणे चतुर्थ, प्रथम उद्देशे पेख ।
सनत कुमार तणी कही, अंत क्रिया सुविशेष ॥६६॥
आवश्यक निर्युक्ती में, उत्तराध्येन वृत्ति माहि ।
तीजे स्वर्ग गयु कह्यो, मिले नांहि ए वाय ॥६७॥
अष्टम् शतके भगवती, द्वितीय उद्देशा माहि ।
एकेन्द्री निश्चय करी, कह्या अज्ञानी ताहि ॥६८॥

कर्म्म ग्रन्थ में देखल्यो, एकेन्द्री रे माहि ।
वे गुण ठाणा आखीया, तेह विरुद्ध कहाहि ।६६।
शतक सात में भगवती छट्ठे उद्देश सवेद ।
छट्ठे आर वैताढय विन, सहु गिर हुस्ये विछेद ।७०।
प्रकरण में शत्रुंज गिरि, सप्त हस्त परिमाण ।
रहिस्ये आख्यो तेह वच, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिछाण ।७१।
अष्टम् शतके भगवती, नवम् उद्देश विषह ।
माया गूढ माया करे, वचन अलीक वदेह ॥७२॥
कूडा तोला नें वालि, कूडा माप करेह ।
ए च्यारूँई प्रकार करि, तीरि आयु बवेह ॥ ७३ ॥
ए चिहु कारण अशुभ थी, तीर्यंच आयु बन्ध ।
तिण कारण तिर्यंच नु, आयु पाप कथिंध ॥ ७४ ॥
कर्म्म ग्रन्थ माही कह्यो, तिर्यंच आयु पुन्य ।
ते माटे ए सूत्र थी, वचन विरुद्ध जघुन्य ॥७५॥
पंच स्थावर विकलेन्द्रिया, ए पिण तीर्यंच जाण ।
तास आउपो पुन्य कहे, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिछाण ७६
जघन्य आउपा नु धणी, तीर्यंच मरि ने तेह ।
जो तीर्यंच में ऊपजे, कोडि पूर्व स्थित केह ।।७७।।
जघन्य आयु पंच तिरि तणा, माठा अध्यवसाय ।
कह्या भगवती ने विषे, शतक चोवीसमा माहि ।७८।

अप्रसस्त्य अध्यवसाय सूं, कोहि पूर्वे तिण होय ।
तिण सु ए तिरि आउपो, पाप कृत अवलोय ।७६।
कुल चाण्डाले ऊपनो, हरकेशी मुनिराय ।
उत्तराध्ययन विषे कह्यु, बारमा अध्येन म्हांय ।८०।
कर्म ग्रन्थ मांहीं कह्यो, छट्ठे गुण ठाणेह ।
नीच गोत नो उदय नहीं, न्याय मिले किम तेह ।८१।
अष्टम शतके भगवती, दशम उद्देशे इष्ट ।
जघन्य ज्ञान आराधना, सत अठ भव उत्कृष्ट ।८२।
वृत्तिकार कह्यु यह विध, चरित सहित जे ज्ञान ।
तेहनी जघन्य आराधना, तसु भव ए पहिछान ।८३।
बीजा सम दृष्टी तणा, देश व्रती ना जेह ।
भव उत्कृष्ट असंख्य हैं, न्याय वचन छे एह ।।८४।।
चंदा विजय ग्रन्थमें, आराधक ना सोय ।
आख्या भव उत्कृष्ट त्रण, यह मिले नहिं कोय ।८५।
अष्टम अङ्गे नेम प्रभू, कृष्ण भणी आख्यात ।
तू तीजी पृथ्वी विषे, जास्ये स्थित दधि सात ।८६।
तीजी थी अन्तर रहित, निकली सय बारेह ।
अमम नाम द्वादशम् जिन, थास्ये महागुन गेह ८७
इहां आख्यो अन्तर रहित, तृतीय नरक थी ताहि ।
निकली तीर्थकर हुस्ये, तिण सु बिच भव नाहि ८८

प्रकरण रत्न संचय विषे, आख्यो कृष्ण मुरार ।
वालू प्रभाथी नीकली, नर भव लही उदार ।८९।
ब्रह्म कल्प में सुर थई, हुस्ये तीर्थंकर देव ।
इम आख्या तसु पंच भव, केम मिले ए भेव ९०
इत्यादिक जे सूत्र थी, वृत्ति प्रमुखरे मांहि ।
विरुद्ध वचन छे ते प्रते, किम मानी जे ताहि ।९१।
द्वितीय आचाराङ्ग ने विषे, दशम उद्देश म्हांय ।
मस मच्छ कह्यो पाठ में, तास अर्थ कहि जाय ।९२।
टबा पार्श्व चंद सूरि कृत, तेह विषे इम ख्यात ।
वृत्तिकार ए मास मच्छ, लोक प्रसिद्ध आख्यात ९३
विरुद्ध सूत्र सु ते भण्यां, नसभाविये ए अर्थ ।
वलि गीतार्थ जे वदे, प्रमाण छे ज तदर्थ ॥९४॥
अस्थी शब्दे सूत्र में, कुलिया छे बहु स्थान ।
एगट्ठिया इहि कह्यु, सूत्र पन्नवणा जान ॥९५॥
कह्या दाडिम प्रते बहुट्ठिया, एहवा शब्द प्रभूत ।
अस्थि शब्द कुलिया कह्या, तो मस शब्द गिर हुन्त ९६
एहवो सभाविये अर्थ, ते माटे अवलोय ।
वनस्पतिज विशेष छे, मन्स मच्छ ए जोय ।९७।
भाव उघाडे मन्स मच्छ, चारित्रिया ने जेह ।
कारण थी पिण आहार वो, योग्य नथी दीसेह ।९८।

वलि सूत्र में साधु में, उत्सर्ग भाव आख्यात ।
वृत्ति विषे अपवाद ए, भाव तणो अवदात ॥ ६६ ॥
तिण जे विशेस सूत्र नों, अर्थ उत्सर्ग पयोह ।
जेम श्रद्धे तिमहिज मिले, इम कह्यु टवा विषेह १००
टवा कार पिण इम कह्यो, सूत्र थकी विगटेह ।
अर्थ प्रमाण तिको नहीं, तो मुझ दूषण किम देह १०१

॥ इति ॥

॥१८मु भगवती में नियुक्ती कही तथा पन्न-वणा सामाचार्य्य कृत कहे तसुत्तर अधिकार॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे नियुक्ती कही, शत पण बीसमा मांहिं ।
तृतीय उद्देशे भगवती, तुम्हे न मानू क्यांहिं ॥ १ ॥
तसु पूछीजे नियुक्ती, केहनी कीधी जेह ।
भद्र बाहु कृता तव कहे, चौद पूर्व धर तेह ॥ २ ॥
तसु कहिये जे तुम्ह कही, भद्र बाहु कृत एह ।
तो भगवती सूत्र विषे तिका, केम कही छै तेह ॥ ३ ॥
वीर छतां ए भगवती, तेह विषे अवधार ।
किम कहि भद्र बाहु कृता, देखो न्याय विचार ॥ ४ ॥

भद्र बाहु मोटा हुवा, पञ्चम् अर्क सुजात ।
चौथ अरके भगवती, तेह विषे निम श्रुत ॥ ५ ॥
आमो नास्ति सीम कृत, भद्र बाहु अणगार ।
नथी हुता तो तसुं कृता केम निर्युक्ति तिवार ॥ ६ ॥
सूत्र भगवती नें विषै, कही निर्युक्ति जेह ।
तेह मानवा योग अम्हे, पिण हिनडा नहिं तेह ॥ ७ ॥
तवे कहे 'पट तेवीस में, सामाचार्य ताहि ।
सूत्र पन्नवणा तिण कर्‌यु, कह्यो पीठका माहिं ॥८॥
गणधर कृत ते भगवती, तेह विषे सु विचार ।
नाम पन्नवणा नो कह्यो, तें किण विध अवधार ॥९॥
तसुं कहिये ते पन्नवणा, सामाचार्य जोय ।
मोटा नीं कोटी करी, एहवु दीसे सोय ॥ १० ॥
पिण मूल थकी कीधी नथी, इसो संभवे नाहिं ।
दश पूर्व धर ते नहीं, तसु कीधी किम थाय ॥ ११ ॥
सम्पूर्ण दश पूर्व धर, चौदश पूर्व धार ।
ताम रचित आगम हुवे, वारू न्याय विचार ॥ १२ ॥
हेमि नाम माला विषे, धुर काण्डे अवदात ।
सुहस्ताद्या वज्रान्ता, दश पूर्व धर आख्यात ॥१३॥
सुहस्त से लेई करी, वज्र स्वामी लग जोय ।
दश पूर्व धर दाखिया, अधिक पूर्व नहिं होय ॥१४॥

स्वामी वज थया पछे, बहु वर्षे सुविमास ।
सामानार्य्य तो थया, दश पूर्व नहिं जास ॥१५॥
तसु कृत आगम किम हुवे, न्याय नेत्र करि जोय ।
सूत्र बृहत् नों लघु करे, तसु कारण नहि कोय ॥१६॥
इणाहिज सूत्र निशीथ प्रति, गणी विसाह विचार ।
मोटा नूं छोटो कह्यु, एहवु दाखे सार ॥ १७ ॥
वलि कहे दशवैकालिक पिण, कह्यु सीजभव एह ।
तास नाम नदी विषे, किम आख्यो गुण गेह ॥१८॥
गणधर कृत जे भगवती, तास विषे सुविचार ।
नाम नदी नूं पिण कह्यो, हिव तसु उत्तर सार ॥१६॥
जेम पन्नवणा तिमज ए, बृहत् थकी लघू कीध ।
पिण मूल थकी कीधी नवी, नथी समवे सीध ॥२०॥
चौदश पूर्व माहि थी, अर्थ अनोपम सार ।
दशव कालिक बृहत् पिण, पूर्वे रचित उदार ॥२१॥
ते मोटा नूं ए लघु, मनक पुत्र अर्थेह ।
सूत्र सीजभव पिण कह्यु, न्याय समवे एह ॥ २२ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ १६ मूनदी थिरावली अधिकार ॥

कोई कहे नदी तणीं, थिरावली छे तेह ।
गणधर कृत के अन्य कृत, हिव तसु उत्तर देह ॥१

नदी पीठका नें विषे, सुधर्म जम्बू सांम ।
प्रभव सीजभव आदि त्यां, पाठ वन्दे बहु ठांम ।२।
अनागत जिन तुर्य अङ्ग, वन्दे पाठ न ख्यात ।
तेह अनागत मुनि भणी, किम वंदे गणीनाथ ।३।
तिण सू यह थिरावली, देव वाचक कहिवाय ।
पिण गणधर कृत ए नहीं, निर्मल विचारो न्याय ४
थिरावली नें अन्त कह्यु, अन्य पिण सहु भगवंत ।
प्रणमी ज्ञान प्ररुपणा, कहस्यु तास उदन्त ॥ ५ ॥
नदी सूत्र नी वृत्ति में, आख्यो इम अवदात ।
दुष्य गणी नों शिष्य जे, देव वाचक इम ख्यात ।६।
इण लेखे नदी सूत्र, दुष्य गणी शिष्य देव ।
मोटा नू छोटा कर्‌युं, ते जाणे जिन भेव ॥ ७ ॥
कथा तणी गाथा जिके, नदी सूत्रे माहि ।
देव वाचक कीधी हुवे, एहवु दीसे न्याय ॥ ८ ॥
दश चौदश पूर्व धरा, आगम रचे उदार ।
ते पिण जिननी शाख थी, विमल न्याय सुविचार ।९।
पिण जिननी जे शाख विन, आगम सूत्र अमोल ।
छद्मस्थ कृत किण विध हुवे, आजु न्याय सूं तोल ।१०।
चौ नाणी गोयम गणी, चौदश पूर्व धार ।
ते पिण वचन खलावियां, सप्तम अंग मझार ११

दृष्टीवाद तणों वर्णी, वचन सलाया ताहि ।
अन्य मुनी नें इसवो नहीं, दशवे कालिक माहि ।१२।
पञ्चम अंग तृतीय शत, प्रथम उद्देशे रहाय ।
वैक्रिय शक्ती सुर तणी, अग्नि भूति कहिवाय ।१३।
वायु भूति श्रद्धी नहीं, प्रतीत नाणी तेह ।
प्रभू नें पूछ खमाविया, द्वादशाङ्ग धर एह ।१४।
ठाणा अङ्ग ठाणें सात में, हिन्सा कूट अदत्त ।
शब्द रूप गंध फर्श रस, आस्वादी हुवे रक्त ।१५।
वलि पूजा सत्कार अति, पामी नें हर्षाय ।
सावद्य इहवच कही, तास सेववूं थाय ॥१६॥
जेम प्ररूपे ते विषे, नथी पालवूं होय ।
सप्त प्रकारे जाणवूं, छद्मस्थ मति अवलोय ॥१७॥
चौद पूर्व धर पिण करे, पडिकमणो विहु काल ।
म्लतता खामी नु तिको, देखो न्याय निहाल ।१८।
तिण सु चौदश पूर्व धर, वलि दश पूरव धार ।
जिन शाखे आगम रचे, इसो समवे सार ॥१९॥
इम हिब्भ प्रत्येक बुद्धि पिण, जिन शाखे सुविचार ।
आगम रचतु सभवे, अमल न्याय अवधार ।२०।
इम मुज म्यासे तिम कह्यु, अर्थ अनूप उदार ।
फुन केवल ज्ञानी कहे, तहिज छे तत सार ।२१।

जंद कोई चौदश पूर्व धर, भद्र बाहु गुन गेह ।
निर्युक्ती तेहनी करी, किम मानूं नवि तेह ॥२२॥
हिव तेहनो उत्तर सुणो, तेह निर्युक्ती माहि ।
हू वादू वज्र स्वामी प्रते एम क्ह्यु छे नाहि ।२३।
जो भद्र बाहु कृत ए हुवे, तो वज्र स्वामी प्रति जेह ।
नमस्कार किण विध करे, देखोजी चित देह ।२४।
वलि निर्युक्ती में कह्यो, बाल्य अवस्था मांहि ।
मेह वर्षता देवता, आहार निमंत्र्यो ताहि ।२५।
पिण ते आहार वंछ्यो नहीं, सीख्यो विनय आचार।
एहवा वज्र स्वामी प्रते नमस्कार करू सार ।२६।
नगर उज्जेणी नें विषे, जम्बक नामें देव ।
करी परीक्षा नें पछे, स्तव्यो तास स्वयमेव ॥२७॥
लब्धि अक्षीण माहणसी, तेह तणो वरण हार ।
सीह गिरी प्रशसीयो, वन्दू ते अणगार ॥ २८ ॥
पदासारणी लब्धि जसु, दश पुर नगर मझार ।
महिमा कीधी देवता, करू तासु नमस्कार ॥२९॥
जेह कुशुम पुर नें विषे, धनो शेठ निवार ।
धन फुन कन्याइ करी, निमंत्रियो वर प्यार ॥३०॥
नव जोवन वय ने विषे, वज्र ऋषी गुणधार ।
नमस्कार तेहनें करू, इम कह्यो निर्युक्ति मझार ।३१।

भद्र बाहु स्वामी पछे, बहु वर्षे अवधार ।
वज्र स्वामी मोडा हुआ, देखो न्याय विचार ॥३३॥
निर्मित्रीयो कन्या बने, एम इहा आख्यात ।
पिण निमत्रसी इम नथी कह्यो, देखो सुगण सुजात
महिमा कीधी देवता, इम इहां आख्यो सोय ।
सुर करस्ये महिमा इसो, वचन कह्यो नहीं कोय ।३४।
तिण कारण ए निर्युक्ती, भद्र बाहु कृत नाहिं ।
वलि ए निर्युक्ती विषे, वचन बहु विरुद्ध दिसाहि ।३५।
उववाई में आखीयो, उत्कृष्टी अव गाह ।
धनुष पंचसय नी तिके, सीझे ए जिन वाय ।३६।
आवश्यक निर्युक्ति मे, मोरा देवी माय ।
सवा पाचसो धनुष तनु, ए वच केम मिलाय ॥३७॥
ठांणांग तुर्यठाणा विषे, प्रथम उद्देशा माहि ।
सनत् कुमार चक्री तणी, अत क्रिया कही ताहि ।३८।
आवश्यक निर्युक्ति मे, चक्री सनत् कुमार ।
तीजे सुर लोके गयो, ए वच विरुद्ध विचार ।३६।
ऋषभ बाहुबल आउखो, पूर्व चोरासी लक्ष ।
समवायंगमें आखीयो, पाठ माहि प्रतक्ष ।४०।
आवश्यक निर्युक्ति में, ऋषभ बाहुबल राय ।
एक समय शिवगत लही, केम मिले ए वाय ।४१।

ज्ञाताध्येनें आठ में, मल्ली नाथ जिन राय ।
पोह सुध इगारस दिनें, चारित्र केवल पाय ।४२।
आवश्यक निर्युक्ती में, चारित्र केवल नाण ।
मृगशिर सुध एकादशी, विरुद्ध वचन ए जान ।४३।
नेऊ गणधर अजित ना, समवायंग विषेह ।
आवश्यक निर्युक्ति में, कह्या पंचाण जेह ॥४४॥
तुर्य अङ्ग जिन सुविध नां, असी अरु लग गण धार ।
आवश्यक निर्युक्ती में, अठयासी अधिकार ॥४५॥
तुर्य अङ्ग शीतल तणां, तीन असी सुविचार ।
आवश्यक निर्युक्ती में, एक असी गणधार ॥४६॥
तुर्य अङ्ग बासट कह्या, बास पुज्य गणधार ।
आवश्यक निर्युक्ती में छासठ कह्या तिवार ।४७।
गणधर अनन्त प्रभु तणा, सूत्रे चौपन जास ।
आवश्यक निर्युक्ती में, आख्या छे पचास ॥४८॥
गणधर धर्म प्रभृतणां, सूत्रे अडतालीस ।
आवश्यक निर्युक्ती में, तयां लीस फुन दीस ।४६।
नेऊ गणधर शन्ति नां, तुर्य अंग सुजगीस ।
आवश्यक निर्युक्ती में आख्या छे सट तीस ।५०।
पार्श्व प्रभु नां तुर्य अङ्ग, गणधर अष्ट उदार ।
आवश्यक निर्युक्ती में, आख्या दश गणधार ॥५१॥

आवश्यक निर्युक्ती मुनि, कृत पचक में काल ।
पद्म हाभ ना पुतला करवा कह्या जु न्हाल ।५२।
आवश्यक निर्युक्ती में, वातिका विरुद्ध अनेक ।
चतुर हुवे ते ओलखी, छांडे मतरी टेक ॥ ५३ ॥
तिण सु चौदश पूर्व धर, भद्र बाहु अणगार ।
तेहनी कीधी किम हुवे, ए निर्युक्ती विचार ।५४।
आवश्यक निर्युक्ती में, कारण थी अण गार ।
ग्रहण करे खट काय नें, कहिये ते अधिकार ।५५।
शर्पादिक डासिया छता, पृथिवी काय प्रतेह ।
प्रथम अचित्त मांगी लिये, ग्रहस्थ समीपे जेह ।६५।
जो मागीलाधे नहीं, तो पोते आणेह ।
कदा अचित लावे नहीं, तो मिश्र पृथ्वी मागेह ५७
मिश्र पृथ्वी लाधे नहीं तो पोते हिव्क जाय ।
अटव्या दिक थी मिश्र प्रति, ले आवे मुनिराय ।५८।
मीश्र कदा लाधे नहीं, मांगे जई ग्रहस्थ पास ।
सचित पृथिवी काय प्रति, मागी ल्यावे तास ।५९।
जो मागी सचित मिले नहीं, ता पोते हीज जाय।
खान प्रमुख आगर थकी, ले आवे मुनिराय ॥६०॥
जेह काम आणी तिको, कार्य्य करी नें ताय ।
पृथिवी काय जे उगरे, तेह परिठवे जाय ॥ ६१ ॥

इम कारण थी धुर अचित, मिश्र सचित अपकाय ।
मुनी दातार कने जई, मागी ल्यावे रहाय, ॥६२॥
जो माग्यो जल ना मिले, तो पोते हिम्फ जाय ।
नदी तलावादिक थकी, अप आणी मुनिराय ।६३।
शूलादिक कारण पडया, इम हिम्फ तेऊ काय ।
अचित मिश्र फुन साचित प्रते, मार्ग ग्रहो पे जाय ६४
जो मागी अग्नि मिले नहीं, तो पोते हिम्फ जाय ।
कुम्भ कारादिक स्थान थी, लेइ आवे मुनिराय ।६५।
शूलादिक कारण पडया, इम हिम्फ वाउ काय ।
अचित मिश्र फुन सचित प्रति, ग्रहण करे ऋषी रहाय।
इम हिम्फ वनस्पती अचित, मिश्र फुन सचित मुनिराय
गाढा गाढ कारण पडया, ग्रहे मूला दिकताय ॥६७॥
त्रश बिन्द्रिया दिक प्रते, तनु फोडा दिक होय ।
तास मिटावा मुनि ग्रहे, जलोक आदि सुजोय ।६८।
आवश्यक निर्युक्ती में, पारिट्ठावणिया समितेह ।
आखी छे ए वारता, किम मानी जे एह ॥६९॥

॥ अथ बीसमू नदी अधिकार ॥

कोई कहे नदी ऊतरे, मुनि, ईर्या समितेह ।
तिहां जिन आज्ञा ते भणी, हिन्सक तसु न कहेह ।१।

तिम म्हे पिण प्रतिमां भणी, पुष्प चढावां तेह ।
म्हानें पिण जिन आण छै, हिन्सा तसु न कहेह ॥३॥
तसु कहिये साधू नदी, उतरे तिहा जिन आण ।
जो पूजा में जिन आण छै, तो मुनि केम न करै जांण
वंदना नी पूछ्या थका, मुनि आज्ञा दे तेह ।
पुष्प चढावू इम कह्यां, मुनि आज्ञा नाहिं देह ।४।
नदी ऊतरे जे मुनी, द्रव्य पूजा कहे तेम ।
हेतु तिण ऊपर कहूं, चतुर सुणो धर पेम ॥५॥
विहार विषे जल सहित इक, नदी देख मुनिराय ।
ते टालण रे कारणे, अवलाई पिण खाय ॥ ६ ॥
इक कोशादिक अन्तरे, सूकी नदी निहाल ।
तेह प्रते मुनि ऊतरे, उदक सहित दे टाल ॥७॥
तिम दश दिननां पुष्प जे, सूका ते अव लोय ।
एकण आडी पुष्प फुन, तत् चण चूंट्या होय ॥८॥
किसा चढावो पुष्प तुम्ह, तुम्ह लेखे इम न्हाल ।
सूका फूल चढावणा, हरिया देणा टाल ॥ ६ ॥
जो चढो तत्कालनां, सुष्क पुष्प न चढाय ।
जदतो पुष्प नदी तणी, मिल्यो न सरिषो न्याय १०
उदक सहित टाले नदी, मुनि अँवलाई खाय ।
तिण कारण दृष्टान्त तणु ते कामी नाहिं स्हाय ।११।

हरित पुष्प चाढो तुम्हे, शुष्क पुष्प न चढाय ।
इण कारण हणवा तणां, तुम्हे कामी इण न्याय ।१२।
तिण सुं पुष्प नदी नणीं, नथी सरिषो न्याय ।
द्रव्य पूजा नीं आंश नहीं, नदी जिन आज्ञा म्हांय १३
जिन आज्ञा देवे जिको, निर्वद्य कारज जान ।
जिन आज्ञा देवे नहीं, ते सावद्य कार्य्य मान ।१४।
सुर सुर्याभ भणीं प्रभु, वन्दन आज्ञा ख्यात ।
नाटक नीं पूछ्यां थका, आण न दीवी नाथ ।१५।
मन में भलो न जाणियां, मौन रह्या अवलोय ।
तिण सुं ए नाटक कियो, ते सावद्य कार्य्य होय १६
प्रभुजी जे नाटक तणीं, आज्ञा दीधी नाँय ।
तो किम द्रव्य पूजा तणीं, आज्ञा दे जिनराय ।१७।
मुनि दिक्षा लेतां कीया, सावद्यरा पच्चखान ।
न करे द्रव्य पूजा तिको, सावद्य कार्य्य मान ।१८।
सावद्य कार्य्य प्रते मुनी, करे करावे नाँय ।
अनुमोदे पिण नहिं तिको, निमल विचारो न्याय १९
जेह कार्य्य अनुमोदियां, मुनी ने लागे पाप ।
तो करण वालो तो धुर करणा, तिण में धर्म्म न थाप २०
सावद्य कार्य्य सर्व ही, मुनि त्यागे विष जाण ।
आज्ञा तेहनी किम दिये, चारूं करो विनाण ।२१।

द्रव्य पूजा सावद्य छे, के निर्वद्य कहिवाय ।
सावद्य छे तो तेह में, धर्म पुण्य किम थाय ॥२२॥
जो पूजा निर्वद्य छे, तो मुनि न करे काय ।
वलि सामायिक पोषह मझे, तुम्हे करो क्यू नांय ।२३।
सामायिक पोषा मझे, पचख्या सावद्य जोग ।
निर्वद्य तो त्याग्या नहीं, देखो दे उपयोग ॥२४॥
द्रव्य पूजा आज्ञा मझे, के जिन आज्ञा बार ।
जो आज्ञा बारे कहो तो धर्म पुण्य मत धार ।२५।
जो ए छे आज्ञा मझे, तो मुनि न करे यांहि ।
सामायिक पोषा मझे, तुम्हे करो क्यु नाहि ।२६।
द्रव्य पूजा छे विरत में, के अविरत रे माहि ।
जो अविरत माहीं कहो तो धर्म पुण्य किम थाहि२७
द्रव्य पूजा छे विरत में, तो मुनि क्यु न करेह ।
सामायिक पोषा मझे, क्यों न करो तुम्हे तेह ।२८।
जो पूरी समझ पडे नहीं, तो राखो प्रभू प्रतीत ।
जिन आज्ञा बाहर धर्म न्हीं, न करणी यह अनीत२६

॥ अथ इक्कीस मूं दानाधिकार ॥

असयती नें जाण नें, गा श्रावक नें कोय ।
दान दीया स्यु फल हुवे, तसु उत्तर अवलोय ॥१॥

अष्टम शतके भगवती, छट्ठे उद्देशे जोय ।
गोतम पूछ्यो वीर प्रति, हे प्रभु श्रावक कोय ॥२॥
तथा रूप जे असंजाति, तसु सचित्त अचित अशणादि
अणेषणी फुन एषणिक, प्रतिलाभ्ये स्युं संवाद ।३।
तेहनें स्यु फल सम्पजे, तब भाषे जिन राय ।
एकान्त पाप हुवे तसु, निरजरा किंचित नाँय ॥४॥
एकान्त पाप कह्यो प्रभु, प्रगट पाठ में जोय ।
तो ते दान दीया छता, धर्म्म पुण्य किम होय ।५।
वलि सातमां अङ्ग में, प्रथम अध्येन मम्भार ।
वीर भणी आणंद कह्यो, अन्य तीर्थी प्रति धार ।६।
अन्य तीर्थकर्ना देव प्रति फुन जिन ना मुनिराय ।
अन्य तीर्थक में जई मिल्या, तिणे ग्रह्या रहाय ।७।
ए त्रिहु प्रति वंदू नहीं, वलि न करूं नमस्कार ।
पहली बोलाऊं नहीं, एक बार बहु वार ॥ ८ ॥
अशणादिक नहिं द्युं तसुं, वलि देवाबूं नांहि ।
एहवु अभिग्रह आदर्यो, देखो आगम मांहि ।९।
छ छण्डी आगार ते, राख्यो सावज्ज जाण ।
सामायिक पोषह मझे, तेहनां पिण पचखाण ।१०।
दीयां अन्य तीर्थक भणी, धर्म्म पुण्य जो होय ।
तो आणन्द किम तज्यो, हिये विमासी जोय ।११।

उत्तराध्ययन चौदमें, गाथा बारमी मांय ।
भरगु प्रते पुत्रां कह्यो, सांभल जो चित लाय ॥१२॥
वेद भण्यां सुत जीमियां त्राण शरण नहिं होय ।
दीयां जीमायां तम तमा, जावे इम कह्यो सोय ॥१३॥
वृत्तिकार इह विधि कह्यो, नरक रौरवा देय ।
तो तेह नें पोष्यां छतां, किण विध धर्म कहेह ॥१४॥
कोई कहै ए गृही हुंता, तसु उत्तर अवलोय ।
तेहनीं धुर गाथा विषे, तुर्य पदे कह्यु सोय ॥१५॥
कुमरे आलोची नें वदे, इम कह्यो गणधर देव ।
ते माटे तसु सत्य वच, पिण नहिं झूठ कहेव ॥१६॥
वेद भण्या सुत जीमियां त्राण शरण नहिं होय ।
ए पिण भृगु प्रते कह्यु, वेहु सुता अवलोय ॥१७॥
ए वच सांचा तेहनां, तुम्हे जाणो मन माहिं ।
तो दीयां जीमायां तम तमा, ए पिण सांची वाहि १८
द्वितीय सुगडांगे सत्तर छट्ठा धेनरै मांहि ।
निज श्रद्धा विषे कही, आर्द्र मुनि नें ताहि ॥१६॥
जीमावै द्विज सहस वे, तसु पुण्य स्कंध बंधाय ।
तेह पुण्य थी सुर हुवे, वेद विषे ए थाय ॥ २० ॥
आर्द्र मुनि कह्यो सहस वे, दीहा जीमावै जेह ।
तेह नरक में ऊपजे, अति आमिषाप विषेह ॥२१॥

प्रगट पाठ में वात ए, आद्र मुनि वच जोय।
तो असंजतीरा दान में, धर्म पुरय किम होय ।२२।
कोई कहे छद्मस्थ था, आद्र मुनी निहवार ।
कह्यु तांगा में नेह वच, किम कहिये तसु सार ॥२३॥
तसु कहिये आद्र मुनी, चरचा करी विशाल ।
बौद्ध मती गोशाल सूं, साग मती सु न्हाल ।२४।
एरू डडिया प्रमुख ने, उत्तर दिया विचार ।
तेह सत्य जाणो तुम्हे, तो ए पिण सत्य उदार ॥२५॥
जाव अन्य प्रति सत्य छै, ब्राह्मण प्रति अवदात ।
उत्तर असत्य कहो तुम्हे, आ किमा लेखारी वात ।२६।
सूत्र सुयगडा अङ्ग द्वार में, दान प्रशंसे शंत ।
वंध वंछे पट् काय नों, इम आख्यो भगवन्त ।२७।
तृतीय करण प्रशंसियां, हिन्सक कहिये ताहि ।
तो दान देवेत धुर करण, ते हिन्सक किम नाहि २८
करे प्रशंसा कुशीलरी, तासु कर्म बंध होय ।
तो सेवे ते तो धुर करण, स्यु कहिये तसु सोय ।२९।
तिम सावद्य दान प्रशंसियां, कर्म तणो बंध थाय ।
तो दान दिये ते धुर करण, तसु अघ बंध अधिकाय ३०
दान निषेध्यां वृत्ती नों, छेद करे इम ख्यात ।
कह्यो अर्थ में काल ए, वर्त्तमान में थात ॥ ३१ ॥

मिलतो अर्थ ए सूत्र थी, देखो न्याय विचार ।
ठाम ठाम सूत्रे कह्यो, सावद्य दान असार ॥ ३२ ॥
असजती नें दान दे, पाप एकन्त आख्यात ।
सूत्र भगवती नें विषे, देखो तज पख पात ॥ ३३ ॥
ते माटे वर्त्तमान ज, काल विषे जे मुन ।
मून कहे तिहु काल में, श्रद्धा ताम जबून ॥३४॥
द्वितीय सुगडा अङ्ग विषे, पंचम् अध्ययणे पेख ।
देतो लेतो एहवो, वर्त्तमान में देख ॥ ३५ ॥
पुराय पाप नहिं कहे तिहा, एहवु वच अवलोय ।
ते माटे वर्त्तमान हीज, काले मून सु जोय ॥ ३६ ॥
कह्यो उपाशक अङ्ग में, सुत सकडाल उदार ।
गोशालक नें आपीया, फलग सेज्या सथार ॥३७॥
कह्यो प्रभूना गुण करया, तिणस्युं आपू सोय ।
पिण निश्चय नहिं धर्म तप, इम कह दीधा जोय ३८
दीधा गोशालक भणी, नहि धर्म तप सद्य ।
तिमज अनेरा नें दीया, केम हुवे पुराय बंध ॥३९॥
दु ख विपाक माहीं कह्यो, मृगा लोढो देख ।
गोतम पूछ्यो वीर प्रति, पूर्व भवे इण पेख ॥ ४० ॥
स्युं दीधो स्युं भोगव्यो, इम पूछ्यो गणीराय ।
तिण सु दान कुपात्र नों, फल अति कटुक कहाय ४१

प्रदेशी केशी भणी, बोल्यो एह नीं वाय ।
च्यार भाग ए राजरा, हूं करस्युं मुनिराय ॥ ४२ ॥
एक भाग राणीया निमित्त, दूजो भाग खजान ।
तीजो हय गय अर्थ ही, चोथो देवा दान ॥४३॥
च्यारु सावद्य जाण नें, मौन रह्या मुनिराय ।
तीन भाग जिम तुर्य पिण, जांणी सावद्य ताय ।४४।
पिण न कह्यो त्रण भाग तो, हेतु अघनीं राय ।
तुर्य भाग तो पुण्य बंध, इम न कह्यो गुण तास ।४५।
च्यारू भाग बोलाय नें, प्रदेशी राजान ।
निज लघुगें गेही थयो, धर्म करण सावधान ।४६।
तुर्य भाग दान शालका, नित प्रते दान देवाय ।
वर्णी मगराँ जिमायिनें तिहां जीव हिन्सा अधिकाय
सत सहस्र ज ग्राम नों, च्यार भाग तसुं कीध ।
दान शालकै थापीयो, चोथो भाग प्रसिद्ध ॥४८॥
दान शालवें ग्राम था, साद सतेर सों जेह ।
तसुं हांसल धान देवा नें, दान शाला मंडेह ।४९।
नित्य हजारौं मण तदा, धान रॉधता जाण ।
दुने हजारां मण तिहाँ, आमि पांणी घमसाण ॥५०॥
उदक चिपे फुंरागादि फुन, वालि वनस्पती जल मॉय ।
त्रुण मणाँ वर्य नाग ती, अनेक मूवा त्रसकाय ।५१।

वायु जीव विराधना, ते पिण तिहाँ विशेख ।
मोटो आरंभ ए सही, दान शाला में देख ॥५२॥
दिन दिन प्रति षटकाय हणा, अनन्त जीवांरी घात ।
न गीणे पाप हिंसा तणो, तसु घटमाहि मिथ्यात ५३
असंयती बहु पोषिया, करे षटकाय विणाश ।
धर्म पुण्य किम तेह में, जोवो हिये विमास ॥५४॥
धर्म हेतु प्राते जीव नें, हणयां दोष न कोय ।
वसु अनार्य्य वचन ए, आचाराङ्गे जोय ॥ ५५ ॥
कह्यो धर्म रे कारणें, जीव न हणवू कोय ।
ए आर्य्य नां वचन है, धुर अङ्गे अवलोय ॥५६॥
तिण सू प्रदेशी तणी, दान शाला पहिछाण ।
श्री जिन आज्ञा बार हैं, समझो चतुर सुजाण ।५७।
ज्ञाता तेरमें, जे नन्दन मणिहार ।
नन्दा पुष्करणी तणो, आख्यो बहु विस्तार ।५८।
चिहु दिश च्यारु बाग फुन, चिहु बाग चिहु शाल ।
पूर्व वन विषे प्रवर, चित्र शभा सुविशाल ॥५९॥
विवध रूप चित्र्या तिहां, नयणा ने सुखदाय ।
नाटक ना धुंकार बहु, जन मन हुलसत थाय ।६०।
दान शाला दक्षण वने, दिये दान दणचान्न ।
औषधयें घणी मग रांक बहू, भोजन विवध रसाल ६१

तीगच्छ शाला पाश्चिम वनें, रास्या बेद्य सुताम ।
औषध करी रोगी भणीं, करे अधिक आराम ।६२।
शुभ अलङ्कार उत्तर वनें, नाई प्रमुख वैशाय ।
रोगी प्रमुख भणी तिहा, खिजमत स्नान कराय।६३।
इम बहु असंयती भणीं, सुख साता उपजाय ।
उपना छेहडे सोल गद, नन्दनरे तनु मॉय ।६४।
काल करी मींडक हुओ, निज पुष्करणी मॉय ।
सावद्य कार्य्य ना कटुक फल, निमल विचारो न्याय
ज्ञाताऽध्ययनें आठ में, देखो चतुर सुधर्म्म ।
चोखी शन्याशण कहु, दान धर्म शुचि धर्म्म।६६।
दान धर्म शुचि धर्म्म कर, निर विघ्न स्वर्गे जाय ।
मल्लि भणी चोखी कही ए निज श्रद्धा ताय ॥६७॥
तब मल्लि कह्यो चोखी भणीं, रुधिरे खरड्यो जेह ।
वस्त्र लोही सू धोवीया, शुद्ध हुअे किम तेह।६८।
तिम अष्टादश पाप प्रति, सेवें जे कोई जंत ।
तेह निमल किण विध हुअे, दीयो एह दृष्टान्त ।६९।
रुधिरे खरड्यो वस्त्र जे, जलादि करि शुद्ध होय ।
तिम हिन्सादिक अघतज्यां, जीव निमल हुवे सोय।
सचित अचित सहु नें दीयां, पुण्य कहे छे जेह ।
केहायत चोखी तणा, न्याय विचारी लेह ॥७१॥

दश में ठाणें देखल्यो, प्रभु कह्या दश दान ।
संक्षेपे करिये तिके, सुणजो चतुर सुजाण ॥७२॥
सचित अचित जल अन्न तरण, अग्नि जमीं कद जान
अनुकम्पा आणीं देवे, ते अनुकम्पा दान ॥७३॥
द्वितीय दान संग्रह कह्यो, पापे बन्दी वान ।
तया छुडावे दाम दे, चोर प्रमुख ने जान ॥७४॥
ग्रह परडा जाणी करी, थाचरिया ने जान ।
देवे भय आणी करी, ते तीजो भय दान ॥७५॥
सर्व हर मृत केड वा, जीवत वारियो जान ।
श्राध क्रमाली प्रमुख ते, तुर्य कालुणी दान ॥७६॥
वहु नीं लज्जाइ करी, सचित अचित धन धान ।
दिये असजती नें जिको, पंचम् लज्जा दान ।७७।
मुकलावो पेसावणी, जस अहकार जांन ।
दिये रावलिया प्रमुख नें, छट्ठो गार्व दान ॥७८॥
कुशील नों अर्थी जिको, गणिका दिक ने जांन ।
दिये द्रव्य तेह ने कह्यो, सप्तम् अधर्म दान ॥७९॥
धर्म दान वर आठ मूं, तीन भेद है तास ।
सूत्र सुपात्र दान फुन, अभय दान गुण राश ।८०।
आगम अर्थ वताय नें, तसु मिथ्यात्व मिटाय ।
शुद्ध समकित पमाविये, सूत्र दान कहिराय ।८१।

वर महाव्रत धारी मुनि, दिये सूज तो तास ।
दान सुपात्र तसु कह्यो, द्वितीय भेद सुविमास ।८२।
भय नहिं दे जन्तू भणी, हणवारा पचखाण ।
ते अभय ए भेद त्रण, धर्म दानरा जाण ॥८३॥
सचित्तादिक जे द्रव्य बहु, दिये उवारा जेम ।
ध्यान पाछो लेवा तणी, नवम् कारणती एम ।८४।
लेणायत नें जिम दिये, हाती नेता देय ।
दिया पछै पाछो लिये, दशम् कयन्ती रहेय ॥८५॥
धुर वोहरा जिम उभय ए, दिया प्रथम दे तेह ।
ते नवम् फुन दशम् जे, दियां पाछो दे जेह ॥८६॥
धर्म दान अष्टम् तिको, श्री जिन आज्ञा माहि ।
शेष दान नव छै जिको, जिन आज्ञा में नांहि ८७
असजती नें दान दे, तसुं कह्यो अघ एकन्त ।
नव ही दान तेह ने विषै, देखोजी बुद्धिवन्त ।८८।
ए दश दान कह्या तिके, गुण निष्पन्न तसु नाम ।
पिण जिन आज्ञा बाहिरो, ते सावद्य अघ धाम ।८९।
वेश्याने देवे तिको, प्रत्यक्ष अधर्म पेख ।
दीशे लोक विषे तसु, अधर्म नाम संपेख ॥ ९० ॥
धर्म दान विन शेष अठ, ते दिया अधर्म जान ।
गुण निष्पन् ए नाम तसुं, भाख्या श्रीभगवान ।९१।

श्री जिनवर जे दानरी, आज्ञा नहीं दे कोय ।
धर्म पुण्य नाहिं तेह में, हिये विमासी जोय ॥९२॥
दशमें ठाणे धर्म दश, पाषंड धर्म आख्यात ।
पिण ते नाहिं आज्ञा विषे, तिमहिज दान अवदात ९३
सूत्र चारित्र जे धर्म वे, श्री जिन आज्ञा माहिं ।
तिमहिज जिन आज्ञा विषे, धर्म दान कहि वाय ९४
जिन आज्ञा जे धर्म नों, ते निर्वद्य पहिछाण ।
आज्ञा नहि जिण धर्म री, तेतो सावज्ज जाण ।९५।
जिम आज्ञा जे दान नों, ते निर्वद्य अवलोय ।
आज्ञा नाहिं जे दानरी, ते सावद्य छै सोय ॥ ९६ ॥
दशमें ठाणे स्थिवर दश, भाख्या श्री भगवान ।
सावद्य निर्वद्य ओलखो, जिन आज्ञा करि ज्ञान ।९७।
तिम हिज जिन आज्ञा करी, सावज्ज निर्वद्य दान ।
ओलख ने निर्णय करे, ते कहिये बुद्धिवान ॥९८॥
नवमे ठाणे पुण्य नव, नव विध समुच्चे ख्यात ।
अन्न पुण्य फुन पाण पुण्य, लेण पुण्य विख्यात ९९
सयण पुण्य फुन वस्त्र पुण्य, मन पुण्य वच पुण्य काय ।
नमस्कार पुण्ये नवम, समुच्चे ही कहिवाय ॥ १०० ॥
कोई कहे अन्न पुण्य इम, समुच्चय आख्यो ठाम ।
ते माटे सहुने दीया, पुण्य बंध छै ताम ॥ १०१ ॥

इम कहे तेहनें पूछिये, अन्न पुण्य आख्यो सोय ।
के कोरो दीधां पुण्य हुवे, के काचो दीधां होय १०२
के अन्न पुण्य राध्यो दिया, सचित दिया पुण्य थाय।
तथा अचित्त दीधा थका, पुण्यबंध कहिवाय ।१०३।
दियां सूझतो पुण्य है, वा असूझतो दियेह ।
पात्र प्रति दीधा पुण्य है, तथा कुपात्र दियेह ।१०४।
मुनि प्रति दीधा पुण्य है, तथा असाधू प्रतेह ।
चोर कसाई ने दिया, वलि गणिका प्रतेज देह १०५
समुच्चय आख्यो अन्न पुण्य, ते माटे अवलोय ।
सहु नें दीधा पुण्य नों, तुझ लेखे बंध होय ॥१०६॥
इम तसकर गणिकादि जे, सहु नें दीधा पुण्य ।
तिण सु सघला पात्र है, नहि कुपात्र जघन्य ।१०७।
पांण पुण्य समुच्चय कह्यो, ते अचित्त पाया पुण्य होय।
के सचित्त उदक पायां थका, पुण्य बंध तसु जोय१०८
जो सचित्त पाया थी पुण्य हुवे, तो छाण्यो पावेह।
अथवा अछाण्या उदक प्रति, पाया पुण्य कहेह १०९
वलि सूझता उदक प्रति, पायां तसु पुण्य होय ।
अथवा उदक असूझतो, पाया पुण्य अवलोय ।११०।
पात्रें दीधा पुण्य है, तथा कुपात्र दियेह ।
मुनि प्रति दीधा पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह ।१११।

चोर कसाई नें दियां, वाले गणिका प्रति जोय ।
तुम लेखे सहुनें दियां पुण्य बंध अवलोय ।।११२।
लयण पुण्य समुच्चय कह्यो, ते जागा नवी कराय।
के थाप हथी दे तासु पुण्य के सीवी दीवा थाय ११३
पात्र नें दीधा पुण्य है, तथा कुपात्र विपेह ।
मुनि प्रते दीधा पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह ।।११४।
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधा पुण्य बंधाय ।
समुच्चय लयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो ठाय ।।११५।
सयण पुण्य समुच्चय कह्यो, रूख कटाय कटाय ।
पाट बाजोट कराय नें, दीधा पुण्य बंधाय ।।११६।
के सीधा दीधां पुण्य है, पात्र कुपात्र भणीज ।
साधु असाधु नें दिया, ते किण में पुण्य कहीज ११७
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधा पुण्य अवलोय ।
समुच्चय सयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो सोय ।।११८।
वस्त्र पुण्य समुच्चय कह्यो, कपडा नवा वणाय ।
धोवाय दीधा पुण्य है, के सीधा दीधा ठाय ।।११९।।
पात्रेज दीधा पुण्य है, तथा कुपात्र विपेह ।
साधु असाधु नें दिया, किण में पुण्य कहेह ।।१२०।
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्य बंधाय ।
समुच्चय वस्त्र पुण्य कह्यो, उत्तर देजो न्याय ।।१२१।

मन पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्ज अशुद्ध जवुन्य।
मन प्रवर्त्तायां पुण्य छे, के निर्वद्य मन थी पुण्य।१२२।
पंच आश्रव सेवण तणा, मनथी पुण्य बंधाय।
पच आश्रव छोडया तणा, मनथी पुण्य नवथाय।१२३
समुच्चय मन पुण्ये कह्यो, सावद्य मन प्रवर्त्ताय।
ते थी पुण्य बंधे के नाहिं, उत्तर देवो ताय॥ १२४॥
वच पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्ज अशुद्ध अशुन्य।
वच बोल्यां थी पुण्य छे, के निर्वद्य वचथी पुण्य १२५।
समुच्चय वच पुण्ये कह्यो, मुख में बोले गाल।
एक गुणों नवकार शुद्ध, किण थी पुण्य नव न्हाल१२६
काय पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्ज तन प्रवर्त्ताय।
तेह थकी पुण्य उपजे, के निर्वद्य तनु थी थाय १२७
शीत तप्त तनु थी लगे, ते थी पुण्य बंधाय।
गेहु पीसे छेदे हरी, तेथी पुण्य बंध थाय ॥१२८॥
हिन्सा झूट अदत्त फुन, चौथो आश्रव ताहि।
समुच्चय काय पुण्ये कह्यो, इण थी पुण्य के नाहिं१२९
नमस्कार समुच्चय कह्यो, सिद्ध साधु प्रति जोय।
नमस्कार किया पुण्य छे, के अन्य प्रते कीयां होय१३०
कुत्ताभाई, राम राम, कागा भाई राम।
इम चाण्डाल भणी नम्यां, पुन्य छे के नाहिं ताम।१३१।

विनय करे सघला तणो, विनय वादी अवलोय ।
तसु पाषण्डी प्रभु कह्यो, सूत्रे ए वच जोय ॥१३२॥
जो नमस्कार सहु ने किया, पुण्य कहे मति मद ।
ते केहायत जाणवा विनय वादीरा अंव ॥१३३॥
अन्न पुण्य समुच्चय कह्यो, ते माटे अवलोय ।
सहु नें अन्न दीधा थका, पुण्य कहे जे कोय ॥१३४॥
तसु लेखे समुच्चय कह्या, मन पुण्य वच पुण्य काय ।
ए पिण अशुद्ध तीनों थकी, पुण्य तणो बंध थाय १३५
जो सावद्य मन वच कायथी, पुण्य बंध नहिं थाय ।
अन्न पिण दिया कुपात्र नें, पुण्य बंधे किण न्याय १३६
नमस्कार पुण्ये अपि, समुच्चय कहिये पेख ।
सहुनें नमण किया थका, पुण्य बंध तसु लेख ॥१३७॥
गणिका चोर कसाई प्रति, कर जोडी नमस्कार ।
कीधा पिण पुण्य बंध हुवे, जसु लेखे अवधार ॥१३८॥
सर्व भणी जो अन्न दिया, वलि सहुनें नमस्कार ।
कीधा पुण्य तो देखलो, सप्तम् अङ्ग मम्फार ॥१३९॥
अन्य तीर्थी नें नहिं करूं, वंदना ने नमस्कार ।
अशणादिक पिण द्युं नहीं, आणद व्रत उदार ॥१४०॥
मुनि विन अन्य प्रति अन्न दियां, वलि कियां नमस्कार।
पुण्य हुवे तो किम लियो, आनन्द अभिग्रह सार १४१

जसु अन्न दीधां पुण्य हुवे, तेहनें पिण शिरनांम ।
नमस्कार कीधां छतां, पुण्य हुवे छै तांम ॥१४२॥
ते नवही निर्जीव छै, साधू नें नमस्कार ।
कीधां पुण्य छै तो तसु, अन्न दीधां पुण्य सार ॥१४३॥
जल पिण निरदोषण तसु, दीधां पुण्य सु देख ।
जागा पिण तसु सूझती, आप्यां पुण्य सु पेख ॥१४४॥
सयण पाट प्रमुख तसू, दीधां पुण्य सु जोय ।
वस्त्र पिण निरदोषण तसु, दीधा थी पुण्य होय ॥१४५॥
मन वच काया पिण वलि, निरवद्य थी पुण्य बंध ।
नमस्कार पद पंच प्रति, कीधा पुण्य सु संध ॥१४६॥
निरवद्य रै लेखे नवूं, बोल शरीपा शुद्ध ।
नवूं शरीपा नवि कहे, श्रद्धा तास विरुद्ध ॥१४७॥
साधू नें कल्पे जिके, तेहिज द्रव्य आख्यात ।
द्रव्य अनेरा नवि कह्या, देखो तज पखपात ॥१४८॥
अन्न साधुरै जोईये, जल पिण मुनि रै रहाय ।
चाहिजे तिण कारणे, पांण पुण्य कहिवाय ॥१४९॥
जागा पाट बाजोटादि नौं, पडे साधुरै कांम ।
कपडा पिण साधू तणे, अवश्य चाहिजे तांम ॥१५०॥
इम कल्पै साधू भणी, आख्या तेहिज बोल ।
देखोजी देखो तुम्हे, आंख हीयारी खोल ॥१५१॥

साधु विन जो अन्य प्रते, दीवा पुण्य जो होय ।
तो गाय पुण्य किमनवि कह्यो, भेंग पुण्य पिण जोय
सुवरण पुण्य रूपो पुण्य, हीरो, पुण्य उदार ।
मोती में माणक पुण्ये, मेती पुण्य विचार ।१५३।
इत्यादिक मुनिवर भणी, नहिं कल्पे ते बोल ।
सूत्र विषे ते नवि कह्या, देखोजी दिल खोल ।१५४।
मुनि प्रति नहिं कल्पे तिके, इक ही बोल कहत ।
तो तुम्हे कहता अन्य प्रति, दीधे पिण पुण्य हुन्त ।१५५
नव को कह कह्यो अर्थ में, पात्रे अन्न दी देह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बन्धेह ॥१५६॥
पात्र थकी जो अन्य प्रति, दीया अनेरी ताहि ।
पुण्य प्रकृति बन्धे इसो, कह्यो अर्थ रे माहि ।१५७।
तसु कहिजे जे पात्र ने, दीवे छता जु तेह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बन्धेह ॥१५८॥
आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
इक ही बाकी नवि रही, निमल विचारो न्याय ।१५९।
ऋषभादिक कहिजे इहा, जिन चउ वीस सु आय ।
गौतमादिक गण वे करी, चउद सहस्र मुनिराय ।१६०।
तिण तीर्थंकर नामादि इम, आदि शब्द रे माहि ।
पुण्य प्रकृति आवी सहु, बाकी रही न कॉय ।१६१।

जसु अन्न दीधा पुण्य हुत्रै, तेहनें पिण शिरनाम ।
नमस्कार कीधा छता, पुण्य हुवे छै ताम ॥१४२॥
ते नवही निर्वद्य छै, साधु नें नमस्कार ।
कीधां पुण्य छै तो तसु, अन्न दीधा पुण्य सार ।१४३।
जल पिण निरदोषण तसु, दीधां पुण्य सु देख ।
जागा पिण तसु सूझती, आप्या पुण्य सु पेख ।१४४।
सयण पाट प्रमुख तसु, दीधा पुण्य सु जोय ।
वस्त्र पिण निरदोषण तसु, दीधा थी पुण्य होय ।१४५।
मन वच काया पिण वलि, निरवद्य थी पुण्य बंध ।
नमस्कार पद पंच प्रति, कीधा पुण्य सु सध ॥१४६॥
निरवद्यरे लेखे नवूं, बोल शरीपा शुद्ध ।
नवूं शरीपा नवि कहे, श्रद्धा तास विरुद्ध ॥१४७॥
साधु नें कल्पे जिके, तेहिज द्रव्य आख्यात ।
द्रव्य अनेरा नवि कह्या, देखो तज पख पात ॥१४८॥
अन्न साधुरे जोईये, जल पिण मुनिरे त्हाय ।
चाहिजे तिण कारणे, पोंण पुण्य कहिवाय ॥१४९॥
जागा पाट बाजोटादि नों, पड़े साधुरे काम ।
कपड़ो पिण साधु तणे, अवश्य चाहिजे ताम ।१५०।
इम कल्पे साधु भणी, आख्या तेहिज बोल ।
देखोजी देखो तुम्हे, आख हीयारी खोल ॥१५१॥

साधू विन जो अन्य प्रते, दीवा पुण्य जो होय ।
तो गाय पुण्य किमनवि कह्यो, भैंश पुण्य पिण जोय
सुरण पुण्य रूपो पुण्य, हीरो, पुण्य उदार ।
मोती नें माणक पुण्य, खेती पुण्य विचार ।।१५३।
इत्यादिक मुनिवर भणी, नहिं कल्पे ते बोल ।
सूत्र विषे ते नावि कह्या, देखोजी दिल खोल ।।१५४।
मुनि प्रति नहिं कल्पै तिको, इक ही बोल कहत।
तो तुम्हे कहता अन्य प्रति, दीधे पिण पुण्य हुन्त१५५
जब को कहै कह्यो अर्थ में, पात्रें अन्न दीवेह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ।।१५६।।
पात्र थकी जो अन्य प्रति, दीया अनेरी ताहि ।
पुण्य प्रकृति बंधै इसो, कह्यो अर्थ रे माहिं ।१५७।
तसु कहिजे जे पात्र नें, दीवें न्हता जु तेह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ।।१५८।।
आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
इक ही बाकी नवि रही, निमल विचारो न्याय।१५९।
ऋषभादिक कहिनें इहा, जिन चउ वीस सु आय ।
गौतमादिक गण वे करी, चउद सहस्र मुनिराय।१६०।
तिम तीर्थंकर नामादि इम, आदि शब्दरे मांहि ।
पुण्य प्रकृति आवी सहु, बाकी रही न कॉय ।१६१।

पात्र थकी जो अन्य प्रति, दीयां अनेरी जांण ।
पुण्य प्रकृति बंधे तिको, अर्थ विरुद्ध पहिछांण ।१६२।
आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
वलि अनेरी पुण्य नीं, प्रकृति किसी कहिवाय ।१६३।
क्रियादिक ठाणा अङ्ग में, छै ए अर्थ जघन्य ।
सहु ठाणा अङ्ग में नहीं, पाठ विना अर्थ शून्य ।१६४।
अन्य प्रति दीधां अन्न जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ।
वृत्ति विषे ए नावि कह्यो, अभय देव सूरेह ।१६५।
पात्रे अन्न देवा थकी, जे तीर्थंकर नामादि ।
पुण्य प्रकृति नों बंध ते, अन्न पुण्य सवाद ॥१६६॥
वृत्ती विषे इतरोज छै, पिण अन्य प्रति दीधा सोय ।
बंधे अनेरी पुण्य प्रकृति, एहवु कह्यो न कोय ।१६७।
पाठ विषे पिण ए नहीं, वृत्ति विषे पिण नाहि ।
सूत्र थकी पिण नहिं मिले, ए विरुद्ध अर्थ इणन्याय
अन्न पुण्ये को अर्थ शुद्ध, वृत्ती विषे कह्यु सोय ।
पात्रे दीयां पुण्य कह्यु, प्रत्यक्ष ही अवलोय ।१६६।
वृत्तिमानें तसु लेख पिण, पुण्य पात्रे ज दीयेह ।
अर्थ न मानें एह तिण, वृत्ति न मानी तेह ।१७०।
सूत्र भगवती सुगडाङ्ग, उत्तराध्ययन उजास ।
असजती प्रति दान दे, कह्या अशुभ फल तास ।१७१।

इम जाणी उत्तमा नरा, राखो सूत्र प्रतीत।
श्रीजिन आण उथाप नें, मती को करो अनीत १७२
ठाणा अङ्ग ठाणे तुर्य वर, तुर्य उद्देशा मॉय।
च्यार मेह प्रभु आखिया, सामल ज्यों चित्त ल्याय १७३
इक वर्षे जे खेत्र में, अखेत वर्षे नाहिं।
अखेत वर्षे एक पिण खेत्र न वर्षे ताहिं ॥१७४॥
इक खेत्रे पिण नहीं तो, अखेत्रे पिण वर्षाय।
इक खेत्रे नहिं वर्षे तो, अखेत्र वर्षे नाहिं ॥ १७५ ॥
इण दृष्टान्ते पुरुष नीं, च्यार जाति कहिवाय।
देवे पात्र विषे सु इक, दिये कुपात्रे नाहिं ।१७६।
इह विध कहा कुपात्र नें, ए खेत्र सु-वर न्याय।
तारे जिहां ऊगे नहीं, ते कुखेत्र कहिवाय॥१७७॥
ते माटे सु कुपात्र नें, दीधा पुन्य अङ्कूर।
ऊगे नहिं तिण कारणे, कह्या कुखेत्रे भूर ॥१७८॥

॥ इति ॥

॥ अथ बावीसखूं श्रावक नें दीयां स्यूं थाय, ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै श्रावक भणी, असणादिक आपेह।
तेहनें स्यूं फल नीपजे, हिव तसु उत्तर लेह ॥ १ ॥

द्वितीय सुगडाअङ्ग कह्यो, द्वितीय अध्येन विषेह ।
अथवा प्रथम उपङ्ग में, प्रश्न वीस में लेह ॥ २ ॥
खाणो नें फुन पीवणो, श्रावक तणो सु जोय ।
अव्रत मांहे श्राखियो, वलि गहणो अव्रलोय ॥ ३ ॥
त्याग त्याग सहु व्रत है, राख्यो जे आगार ।
तेहने अव्रत श्राखिये, वारू न्याय विचार ॥ ४ ॥
दूजो आश्रव दाखियो, अव्रत नें जिनराय ।
ठाणांगठाणों पाच में, वलि समवायाङ्ग माहि ॥ ५ ॥
भाव शस्त्र अव्रत भणी, भाख्यो श्री जग भाण ।
शङ्का हुवे तो देखल्यो, ठाणाङ्ग दश में ठाण ॥ ६ ॥
तिण सूं हिये विचारिये, श्रावक नें अवलोय ।
अव्रत सेवायां छता, धर्म पुण्य किमहोय ॥ ७ ॥
श्रावक ते विरतें करी, देव वैमानीक थाय ।
कह्यू भगवती प्रथम शत, अष्टमोद्देशक माहि ॥८॥
ग्रहस्थ नें देवो तज्यो, स्यूं जाणी मुनिराय ।
ते संसार भ्रमण तणो, हेतु जाणी त्हाय ॥ ९ ॥
सुयगडांग नवमें कह्यो, गाहा तेवीसम् ताहि ।
तिण सूं श्रावक श्राखियो, प्रत्यत्त ग्रहस्थ माहि ।१०।
पनरमोद्देश निशीथ में, मुनि अन्य तीर्थी प्रतेह ।
अथवा ग्रहस्थ प्रते वली, अशणादिक आपेह ।११।

वस्त्र पात्र फुन कम्बली, रजोहरण सुविचार ।
ए आठ बोल देवै तसु, दड चौमासी धार ॥१२॥
देतां प्रति अनुमोदियां, दड चौमासी आय ।
ते माटे ग्रहस्थ विषे, श्रावक पिण इहा थाय ॥१३॥
तसु मुनि पोते दे नहीं, वलि जसु देवै कोय ।
अनुमोदे नहिं तेह नें, ऋषि आचार सु जोय ॥१४॥
तृतीय करण अनुमोदियां, दड चौमासी आय ।
तो प्रथम करण देवै तसु, धर्म पुण्य किमथाय ॥१५॥
पडिमाधारी पिण इहा, आयो ग्रहस्थ विषेह ।
तसु अशणादिक नहिं दिये, महा मुनी गुण गेह १६
ते पडिमाधारी प्रते, ग्रहस्थ दियै को आहार ।
तो मुनि अनुमोदे नहीं, देखो न्याय विचार ॥१७॥
देता प्रति अनुमोदियां, मुनिवर नें दड आय ।
तो देणवाला नें धर्म किम, तसु खाधां अव्रत माहि १८
गौतम प्रति सथार में, आनन्द आख्यो एम ।
हेभदन्त हूं गृहस्थ छु, गृहि मज्झ वसू ज तेम ॥१९॥
ते गृही मज्झ वसता भणी, इतरो अवधि उप्पन्न ।
पूर्व दिशि लवणो दधी, जोयण पंच सयजन्न ॥२०॥
देखू ते हूं क्षेत्र प्रति, दक्षिण पश्चिम एम ।
वलि उत्तर दिशिनें विषे, चूल हेमवंत तेम ॥२१॥

ऊंचो सौधर्म कल्प लग, अ रो नरक धुर तास ।
सहस्र चौराशी वर्ष स्थिति, लोलुच नरका वास ।२२।
गौतम बोल्या एवडो, मोटो अवधि उदार ।
ग्रहस्थ भणी नहीं ऊपजे, हे आनन्द विचार ।२३।
ते माटे तू एहनी, ले आलोवण सार ।
जाव प्रायश्चित एहनो, पडि वर्जीये वरप्यार ॥२४॥
तव आनन्द पूछयो भदन्त, जे वच सत्य वदेह ।
आवि छे दड तेह ने, श्री जिन वयण निषेह ॥२५॥
गौतम कहे नाहिं दड तसु वलि आनन्द कहे वाय ।
सत्य भरर नच कहे तसु, प्रायश्चित जो नांय ।२६।
तो तुम्ह हीज आलोवणा, जाव प्रायश्चित लेह ।
इत्यादिक इवकार छे, देखोजी चित्त देह ॥ २७ ॥
इम सप्तम अङ्ग कह्यो, श्रमण गणनें सुविशेष ।
आनन्द आवकु ग्रहस्थ छू तो वाहिमानो स्यू पेख २८
व्यावच ग्रहस्थ तणी करी, दशवै कालिक माहिं ।
अणाचार अट्ठावीसमो, तृतीय अ येनें ताहि ॥२६॥
गृही व्यावच मुनि नहीं करे नथी करावे जाण ।
करतां अनुमोदे नहीं, त्रिविध २ पचखाण ॥ ३० ॥
ग्रहस्थ प्रति पूछे मुनि, सुख साता छे तोय ।
अणाचार ते सोलमों दशवै कालिक जोय ॥३१॥

सुख पूछयां पछी तिणे, साता तणु अणगार ।
तो गृही नें साता किया, किम हुवै धर्म उदार ॥३२॥
दशाश्रुत स्कंधें ग्यारमों, पडिमा में संपेख ।
पेज्ज बंधण तूटो नहीं, ज्ञात तणों सुविशेख ॥३३॥
ते माटे कल्पै तसु, ज्ञात तणों जे आहार ।
इम पेज्ज बंधण साते कही, भिक्षाचरी तसु धार ॥३४॥
पेज्ज बंधण ना अशुभ फल, ते माटे अवलोय ।
तसु मति भिक्षाचरी, ते पिण सावद्य जोय ॥३५॥
भगवती अष्टम शत विषे, पंचमुद्देशक जान ।
गौतम पूछयो गृही कही, सामायक मुनिस्थान ॥३६॥
तसु भंड तस्कर अपहरया, सामायक चीतार ।
भंडनी करे गवेषणा, श्रावक तेह तिवार ॥ ३७ ॥
हे प्रभु ते निज भंड तणी, करे गवेषणा सोय ।
के पर भंडनी ते करे, गवेषणा अवलोय ॥ ३८ ॥
प्रभु कहै करे गवेषणा निज भंड तणी ज तेह ।
पिण ज परना भंड तणी, गवेषणा न करेह ॥३९॥
वलि गौतम पूछयो प्रभु, सामायिक रे मांहि ।
ते भंड नें वोसिरावीयां, भंड अभंड कहाहि ॥४०॥
जिन कहै हंता गोयमा, भंड अभंड कहाय ।
वलि गौतम पूछयो प्रभु, तसु भंड कहो किण न्याय ॥४१॥

प्रभु-कहै सामायक विषे, ते इसी भावना भाय ।
हिरण्य नहीं ए माहरो, वलि मुझ सुवर्ण नाहिं ।४२।
कांसी नहीं ए माहरी, नहीं वस्त्र मुझ एह ।
नहिं माहरो विस्तीर्ण धन, कनक रत्न मणी जेह ।४३।
मोती नें वलि शंख शिल, प्रवाल, मूंग कहाय ।
पद्मरत्न आदिक छता, सार द्रव्य मुझ नांहि ।।४४।।
एवी चिन्तवना प्रवर, सामायक, में जान ।
पिण ममत्व भाव जे धन थकी, न कियो तिण पचखाण
तिण अर्थे इम आलोयो, निज भंड तणीज जेह ।
गवेषणा पिण परतणा, भंड नी नवी करेह ।।४६।।
प्रगट, पाठ में इम, कह्यो, ते माटे अवलोय ।
सामायक में धन थकी, ममत्व भाव तसु जोय ।४७।
ममत्व भाव पचख्यो नथी, गृही सामायक माहि ।
तो पडिमा में धन तणी, ममत्व तजी किम ताहि ४८
ममत्व, तजी नहीं ते भणी, धन तेहनो ज कहाय ।
तिण सु सामायक मझे, मुनि प्रति द्रव्य वहिराय ४९
द्रव्य अनेरा नों हुवे, ते मुनि-प्रति जो देह ।
तो तेहनी आज्ञा थकी, वहिरावै गुन, गेह ।। ५० ।।
पिण ममत्व भाव पचख्यो नहीं, तिण सुं तसु द्रव्य जोय
वहिरायां आज्ञा तणों, कारण नाहिं छै कोय ।५१।

तिण ज उद्देशे पूछियो, गृही सामायक माहि ।
कोई पुरुष सेवे तदा, तसु भार्या प्रति आय ॥५२॥
हे प्रभु ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवेह ।
तथा अभार्या प्रति तदा, सर्व इम पूछेह ॥ ५३ ॥
जिन कहे ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवत ।
अभार्या प्रति सेवे नहीं, वालि गोतम पूछंत ।५४।
हे प्रभु सामायक विषे, भार्या अभार्या होय ।
जिन कहे हता गोयमा, भार्या अभार्या जोय ।५५।
किण अर्थे प्रभु इम कह्यु, भार्या प्रति सेवत ।
अभार्या प्रति सेवे नहीं, तव भापे भगवंत ॥५६॥
जिन कहे सामायक विषे, इसी भावना भाय ।
माता नहिं छे माहरी, पिता न म्हारो ताहि ।५७।
भ्राता ते म्हारो नहीं, भगिनी माहरी नाहि ।
भार्या माहरी को नहीं, सुत म्हारो नहिं ताहि ।५८।
नहिं छे म्हारी पुत्रिका, सुतनी वहू विमास ।
ते पिण माहरी को नहीं, करे इम चिन्तवणा तास५६
प्रेमरूप बंधन वलि, तसु वोछिन्न न हुन्त ।
तिण अर्थे करि तेहनी, भार्या प्रति सेवन्त ॥६०॥
इह विध प्रभुजी आखियो, सामायक रे माहि ।
प्रेम बंधन छेद्यो नथी, मात प्रमुख नू ताहि ।६१।

इम हिज पडिमा नें विषे, मात प्रमुख नूं सोय ।
प्रेम बंधन तुटो नथी, न्याय विचारी जोय ॥६२॥
इग्यारमी पडिमा मभे, न्यातीला नों धार ।
प्रेम बंधन छूटो नथी, तिणसु ले तसु आहार ६३
कह्युं दशाश्रुत स्कंध इम, ते माटे अवलोय ।
पेज्ज बंधन खाते तसु, आहार लेवा विणहोय ॥६४॥
पूछ्यां जिन आज्ञा न दे, लेण वाला नें जोय ।
देण वाला नें पिण नहीं, जिन आज्ञा अवलोय ६५
जिन आज्ञा बार नहीं, धर्म पुण्यगो अंश ।
धर्म कहे आज्ञा बिना, तसु कहिये मति भ्रंश ।६६।
सूत्र भगवती नें विषे, सप्तम् शतकें भेव ।
प्रथम उद्देशा ने विषे, दाख्यो श्री जिन देव ।६७।
सामायक माहे कह्यो, श्रावकनी संपेख ।
आतम ते अधिकरण इम, प्रगट पाठ में लेख ।६८।
शस्त्र जे षट् काय नों, अधिकरण कहिवाय ।
तसु तीखो कीधां छता, धर्म पुण्य किम थाय ।६९।
इमहिज पडिमा ने विषे, श्रावक आतम जाण ।
अधिकरण न्याये कह्यो, चारु करो पिछाण ॥७०॥
सामायक में आतमा, तसुं अधिकरण आख्यात ।
तो जे सामायक बिना, तेह तणी सी वात ।७१।

षट् पोसा इक मास में, अष्ट पोहरिया करेह ।
श्रथा वोहित्तर वर्ष में, सवत्सरि इक लेह ॥७२॥
एह तीहोत्तर दिन तणों, व्याज तसु घर आय ।
वालि तोटादि नफा तणो, ते हिज भणी कहाय ।७३।
घर पुत्रादिक जन्मीया, हर्ष हिये तसु आय ।
चित्त उदास हुवे मुआ, पेज्म बधन इम थाय ।७४।
तोटो सुण विलखो हुवे, नफो सुणी विकसाय ।
सामायक पोषह मज्मे, समरस भाव इण न्याय ।७५।
इमहिज पाडिमारे विषे, हर्ष सोग चित्त आय ।
पेज्म बधण आख्यो प्रभु, न्यातीला सु ताय ७६
एक लखपती शेठ जसु, मात पिता परिवार ।
स्त्री पुत्रादिक को नहीं, एकलडो अवधार ॥७७॥
लाख रुपईया रोकडा, मित्र भणी ज भलाय ।
श्रावक नीं पाडिमा वह, एकादश लग ताहि ।७८।
मित्र तणे व्रत पचमें, निज पोताना जाण ।
सहस्र दाम उपरन्त रु, राखण रा पचखाण ।७९।
पडिमा धारी ना जिके, लाख दाम राखत ।
तेह तणी अव्रत तणों, अघ किया नें लागत ॥८०॥
तथा रुपइया लाख जे, किणरा परिग्रह माहिं ।
पोते रखवाली करे, पिण तसु परिग्रह नाहिं ।८१।

पडिमा धारीना प्रगट, परिग्रह मांहि पिछाण ।
अविरत नों लागे तसु, पाप निरन्तर जाण ॥८२॥
मगतर भाव पच्चरयो नथी, पडिमा में इणन्याय ।
सागायक जिम तेहनु, तनु अधिकरण कहाय ।८३।
तथा लखपती शेठ इक, पुत्रादिक नहि कोय ।
गुमास्ता वसु तेह नें, विणज करे अवलोय ॥८४॥
दुकान वाणोत्तर भणी, शेठ भलावी सोय ।
श्रावक नी पडिमा वहे, एकादश लग जोय ।८५।
व्याज आवे रुपइया तणों, ते किणरा घर माहि ।
वलि तोटारु नफा तणों, कारण पणों कहिवाय ।८६।
पाडिमाधारी ना प्रगट, घर में आवे व्याज ।
नफा अनें तोटा तणों, एहिज वणी समाज ।८७।
लाख तथा बे लाख थया, परिग्रह इणारो हीज ।
सहस पचास रह्या छता, तोटो तास कहीज ।८८।
पडिमा में पिण पचक्खं, देश व्रत गुण ठाण ।
ले जे तसु आगार छै, ते ते अव्रत जाण ॥ ८९ ॥
खाणों पीणों तेहनों, अविरत माहीं जोय ।
तसु अव्रत सेवा वियां, धर्म पुण्य किम होय ।९०।
पडिमा धारी आहार स्ये, तेह नें तो कहे पाप ।
तो देवै तसु धर्म किम, देखो थिर चित्त थाप ॥९१॥

जो लेण वाला नें पाप छै, पाप लगायो जास ।
धर्म पुण्य किण विध हुवे, जोवो हिय विमास ।६२।
लेण वाला नें जे हुवे, देण वाला नें तेह ।
जिन आज्ञा नहिं विहु भणी, विहु नें अघ बधेह ६३
जे पडिमा धारी विना, अन्य तणो पिण देख ।
खाणों पीणों पहिरणों, अव्रित में सपेख ॥६४॥
ते माटे मुनि दे न तसु, दीधां आवे दंड ।
अनुमोद्यां पिण दंड है, सूत्र निशीथ सुमंड ।६५।
श्रावक जिमावण तणी, जिन आज्ञा दे नाहिं ।
आज्ञा विन नहिं धर्म पुण्य, देखोजी दिल मांहिं ६६
समदृष्टी श्रधे समों, जिन आज्ञा में धर्म ।
आज्ञा बारे धर्म नहीं, ए जिन शासन मर्म ॥६७॥
कहि कहि नें कितरो कहुं, धर्म न आज्ञा बार ।
आज्ञा माहीं पाप नहीं, श्रध्या सम्यक्त सार ।६८।
इम सांभल उत्तम नरा, राखो जिन सु प्रतीत ।
आज्ञा बारे धर्म कहीं, करजी नहीं अनीत ॥६९॥

॥ इति ॥

॥ अथ तेवीसमों अनुकम्पा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे असजती भणी, जेह बचावे जाण ।
स्युं फल तास समुपजे, तसु उत्तर पहिछाण ॥१॥

जीव छोडावे दाम दे, जिन मुनि नहिं दे आंण ।
अनुमोदे पिण नहिं तिके, सावज्झ रा पचखाण ॥२॥
मुनि दीक्षा लीधी तदा, सर्व सावद्य पचखेय ।
जीव छोडावे नहिं तिके, निज वस्त्रादिक देय ॥३॥
ग्रहस्थ छोडावे दाम दे, जो मुनि अनुमोदेह ।
तृतीय करण भागे तसु, पाप कर्म बंधेह ॥ ४ ॥
तृतीय करण अनुमोदवे, लागे पाप जबून ।
तो दाम दिये ते धुर करण, केम हुवे तसु पुण्य ।५।
सामायक पोषह विषे, सावद्य प्रति पचखेह ।
जीव छोडावे नहिं तिके, निज वस्त्रादिक देह ॥६॥
खोटो सावद्य जाण के, जे त्यागो मुनिराय ।
ग्रहस्थ ते सावद्य किया, धर्म पुण्य किम थाय ॥७॥
अवद्य पाप सहित जे, सावद्य कहिये तास ।
अतर आख उघाड ने, वारू न्याय विमास ॥८॥
निशीथ उद्देशे बार में, मुनि अनुकम्पा आंण ।
तृणादिके पाशे करी, जो बांधे त्रश प्राण ॥ ६ ॥
अथवा बांधता प्रते, जो अनुमोदे ताय ।
चौमासी तसु प्रायश्चित, प्रगट पाठ में थाय ॥१०॥
इमहिज बध्या जीव नें, छोडे तो दंड पाय ।
छोडता प्रति जे वली, अनुमोद्या दंड आय ।११।

ए प्रत्यक्ष पाठ विषे कह्यो, अनुकम्पा ए जान ।
सावद्य छै तिण कारणे, दण्ड कह्यो भगवान ।१२।
छोड़े तसुं अनुमोदियां, तृतीय करण दण्ड ख्यात ।
तो छोड़े ते धुर करण, तास धर्म किम थात ।१३।
असजतीरो जीवणो, बछे नहिं मुनिराय ।
मरणो पिण नहिं बछणो, ए राग द्वेष कहिवाय ।१४।
असजतीरो जीवणो, बछ्यां धर्म जु होय ।
तो ए अनुकम्पा तणो, प्रायश्चित किम जोय ।१५।
सावद्य ए अनुकम्प छै, तिण सु दंड छै तास ।
निर्वद्य नो दड हुवे नहीं, जोवो हिय विमास ।१६।
अनुकम्पा नें अर्थ ही, कृष्णे ईट उपाड ।
मुकी वृद्ध तणे घरे, अतगडे अधिकार ॥ १७ ॥
राणी धारणी गर्भ नीं, अनुकम्पा नें अर्थ ।
पथ्य अनादिक भोगव्या, ज्ञाता माहे तदर्थ ।१८।
सुलसानी अनुकम्प करि, देवकी ना सुत आणि ।
मुक्या हरण गवेषी सुर, अतगड में जांण ॥१६॥
अभय कुमार तणी वली, अनुकम्पा चित्त आणि ।
दोहलो पुरयो मित्र सुर, ज्ञाता में जिन वाणि ।२०।
रत्न द्वीप देवी तणी, जिन ऋषि करुणा कीध ।
ज्ञाता नवम् अध्येन कह्यु, सावद्य यह प्रसिद्ध ।२१।

इत्यादिक अनुकम्प नों, जिन आज्ञा दे नांहि ।
ते माटे सावद्य तिके देखोजी दिल मांहि ॥ २२ ॥
जीव हणे मुज कारणे, चिन्तव नेम कुमार ।
तोरण थी पाछा फिरया, ए अनुकम्पा सार ॥२३॥
जीव हणन्ता नेम ना, विवाह निमित्त पिछाण ।
ते टारयो पाप पोता तणों, जिन आज्ञा तिहां जाण २४
गज भव सुशलो नवि हण्यो, कष्ट भोगव्यो आप ।
निरवद्य ए अनुकम्प छे, गज टाल्यो निज पाप ।२५।
उत्तराध्ययण इक बीस में, चोर देख समुद्र पाल ।
छोडायो आस्यु नथी, चरण लियो सुविशाल २६
दूजो श्रुतस्कंध अङ्ग धुर, तृतीय अ येन विचार ।
प्रथम उद्देश कह्यो मुनि, बैठो नाव मझार ॥२७॥
छेद्रकरी जल आवतो, देखी ग्रहस्थ प्रतेह ।
बतावणों नहिं जिन कह्यो, प्रत्यक्ष पाठ विपेह २८
उदक भगती नाव ए, देवू तुरत बताय ।
एह तु पिण नवि चिन्तवे, मन मांहीं मुनिराय ।२९।
आप अनें बहु अन्य जन, डूबे उदक करेह ।
सम भावे बैठो रहे, राग द्वेष टालेह ॥ ३० ॥
द्वितीय अङ्ग में आखियो, श्रुत खध द्वितीय विषेह ।
पचम् अध्ययण प्रगट, तीसमी गाथा जेह ॥३१॥

जीव सिंह व्याघ्रादि फुन, हिन्सक देखी सत ।
यह मारवा जोग छै, इम न कहै गुणवंत ॥ ३२ ॥
अथवा हिन्सक देख ने, यह हणवा जोग ज नांहिं ।
यहतु पिण कहिवु नहीं, निपुण विचारो न्याय ।३३।
अतिकार- एहतु पद्ध, वधवा- जोग ज नांहिं ।
इम कहता तसु कर्म नीं, अनुमोदना तु थाय ३४
कह्या सिंह वाघादि जे, आदि शब्दरे मांहि ।
घातक जे षट्कायना, ते सहु आव्या तांहि ।३५।
इणे कसाई अज भणी, तसु तारण अणगार ।
त्याग करावे वध तणा, दे उपदेश उदार ॥ ३६ ॥
पिण बकरा नु जीवणो, वंछे नहिं मन मांहि ।
असजम जीवत वंछणो, वर्ज्यो छै जिनराय ।३७।
दश में, अज्झयण द्वितीय अङ्ग, च्यारवीसमी गाह ।
जीवित मरण न वंछणो, असजम जीवित ताह ।३८।
तेरमे अज्झयणे द्वितीय अङ्ग, तेवीसमी गाह ।
जीवत मरण न वंछणो, असजम जीवित ताह ३९
पनरम, अज्झयणे द्वितीय अङ्ग, दशमी गाथा मांहि ।
असजम जीवित प्रते, मुनि आदर न दिये तांहि ४०
तृतीय अज्झयणे द्वितीय अङ्ग, तुर्य उद्देश विपेह ।
जीवित मरण नवंछणो, असजम जीवित तेह ।४१।

इत्यादिक बहु स्थानके, असंजम जीवत ताय ।
वाले मरण नहिं वछणो, भाष्यो श्री जिनराय ।४२।
आप तणो नहिं वछणो, असंजम जीवित सोय ।
तो पर नुं वंछ्यां थकां, धर्म पुण्य किम होय ४३
बाल मरण पिण आपरो, वछे नहिं मुनिराय ।
परनूं पिण वंछे नहीं, वछ्यां धर्म न थाय ॥४४॥
पण्डित मरण ज आपरो, वछे महा मुनिराय ।
परनूं पिण वंछे तिको, विमल विचारो न्याय ४५
कह्यो सातमा अङ्ग में, पोषह विषे पिछाण ।
मात बचावण ऊठियो, चूलणी पिया जाण ।४६।
अमा तसु इम आखियो, भागो पोसह सोय ।
वलि व्रत भागो कह्यो, भागो नियम सु जोय ४७
मात बचावा ऊठियो, भागो पोसह ताहि ।
तो साधु बचावे तेह नु, चारित्र भागे किम नांहि ४८
जे कार्य्य कीयें छतें, पोषह चारित्र भागेह ।
ते कार्य्य में धर्म किम, न्याय विचारी लेह ।४९।
द्वितीय सुगडा अङ्ग पवर, छट्टा अध्येनरे माहि ।
अठारमी गाथा अमल, आद्र मुनी कहीवाय ।५०।
निज कर्म प्रते खपायवा, वा अन्य तारण ताहि ।
धर्म देशना प्रभु दिये, निमल विचारो न्याय ।५१।

असजती जे जीव छै, तास बचावा हेत ।
वीर प्रभू उपदेश दे, इमनवि आख्यो तेथ ॥५२॥
द्वितीय आचाराङ्ग ने विषे, द्वितीय अध्यने ताहि ।
प्रथम उद्देशे प्रभु कह्या, ग्रहस्थलंड माहो माहि ।५३।
देखी नवि चिन्ते, मुनी, मारो एह प्रतेह ।
अथवा इण ने मतहणो, राग द्वेष वर्जेह ॥ ५४ ॥
द्वितीय आचाराङ्ग ने विषे, द्वितीय अध्येन विषेह ।
प्रथम उद्देशे ग्रहस्थ वे, तेऊ आरभ करेह ॥ ५५ ॥
देखीमन चिन्ते न मुनि, अग्नि उजालो एह ।
अथवा अग्नि उजाल मति,इम पिण नवि चिन्तेह५६
तथा बुझावो अग्नि ए, अथवा मत बुझाव ।
एहवु पिण नवि चिन्तवे, राखे मुनि समभाव ५७
नवम् उत्तराध्ययणे कह्यु, मिथला बलती देख ।
साहमु नवि जोयो नमी, टाल्यो राग विशेख ।५८।
दशवै कालिक सातमे, पचासमी जे गाह ।
माहो मांही सुगभिडे, इम मनु माहो मांहि ॥५९॥
तीर्यञ्च माहो माहि लडे, एहनी थावो जीत ।
इणरी जय थाजो मती, मुनि न कहे ए रीत ।६०।
दशवै कालिक सातवे, इकावनमी गाह ।
वर्षाने फुन वायरा, सीत उष्ण अग्निकाह ॥६१॥

राज विरोध रहित हुन, थावो देश सुगाल ।
उपद्रव रहित हुवो वली, इम न कहे मुनिमाल ६२
ए सातों होवो तथा, ए सातों मत होय ।
ए विध पिण न कहे कदा, अमल न्याय अवलोय ६३
दिशा मुढ जे ग्रहस्थ नें, मार्ग बताया दण्ड ।
निशीथ उद्देशे तेरमें, चौमासीक प्रचंड ॥ ६४ ॥
ठाणा अङ्ग ठाणे तीसरे, तृतीय उद्देशक मांय ।
आतम रक्षक तीन जे, आख्या श्री जिनराय ६५
हिन्सादिक देखी करी, दीये धर्म उपदेश ।
अथवा मौन रहे मुनी, समभावे सुविशेष ॥६६॥
अथवा ऊठी त्यां थकी, एकन्त जागा जाय ।
आतम रक्षक ए कह्या, पिण छोडावणो कह्यो नांय६७
निशीथ उद्देशे ग्यारमें, परनें भय उपजाय ।
डरावता प्रति अनुमोदे, दड चौमासी आय ॥६८॥
ग्रहस्थ नी रक्षा करे, रक्षा कारि प्रतेह ।
अनुमोद्या पिण दड कह्यो, निशीथ तेरमें लेह ६९
दशवे कालिक तीसरे, ग्रहस्थ तणी मुनिराय ।
साता पूछयां सोलमों, अणाचार कह्यो ताय ।७०।
ग्रहस्थ नी व्यावच कियां, आठ ईसमू न्हाल, ।
अणाचार मुनिवर भणी, दाख्यो परम कृपाल ७१

करे करावे जे नथी, करता प्रते अवलोय ।
मुनि अनुमोदे पिण नहीं, तो धर्म कहे किम सोय ७२
अशणादिक ग्रहस्थी भणी, दीधा मुनि नें दंड ।
अनुमोद्या पिण दंड कह्यं, निशीथ पनरमें मंड ७३
शस्त्र है षटकाय नुं, ग्रहस्थ तणो जे शरीर ।
तसुं तीखो करवा तणी, किम आज्ञा दे वीर ७४
घातिक जे षट कायना, तास बचावे कोय ।
तसु प्रते आज्ञा किम दीये, न्याय विचारी जोय ।७५।

॥ हिव साधुरी आज्ञा बाहररी ग्रहस्थ व्यावच करे तसुं उत्तर ॥

कोई कहे साधु तणी, व्यावच ग्रहस्थ करेह ।
तेह विषे स्यूं फल हुवे, तसु उत्तर हिवलेह ॥७६॥
जे व्यावच मुनि नी करे, तसु आज्ञा प्रभु देह ।
निरदोषण अशणादिकर, तेह विषे धर्म लेह ।७७।
जे व्यावच मुनि नी करे, प्रभु आज्ञा नहिं देह ।
तेह विषे नहिं धर्म पुण्य, न्याय विचारी लेह ७८

॥ साधूरी हरस छेद्या पुण्य शुभ क्रया कहे तेहनु उत्तर ॥

सोलम शतके भगवती, तृतीय उद्देश विमास ।
हरस छेदे जे मुनी तणी, क्रया कही प्रभुतास ।७६।

हरा छेदू छू तुम्ह तणी, इम पूछया अणगार ।
आज्ञा न दिये गृही भणी, तिण सु आज्ञा बार ।८०।
कार्य करावे नहि मुनी, ग्रहस्थ करे जे अश ।
जवरी सूं जो को करे, तो न करे तास प्रशंस ।८१।

॥ सोरठा ॥

ग्रहस्थ मुनी नी पेखरे, हरा छेदवे धर्म पुण्य ।
तो मुनि ना कार्य अनेकरे, तसुं लेखे कीधा धर्म ८२
मुनि पग कांटो जाणरे, वलि कांटो चक्षू थकी ।
गृही काढे विण आणरे, तसुं लेखे धर्म गृही भणी ८३
दूखे पेट अपाररे, मुनि चित व्याकुल दुःख घणो ।
गृही मशले कर साररे, तेह नें पिण पुण्य लेख तसु ८४
पेटची अति दुःखरे, दूठी भूती समकही ।
गृही मशले कर सुरुकरे, तेहने पिण तसुं लेख पुण्य ८५
अटवी विषे अचेतरे, हय खर सगट बैसाण नें ।
आणे गृहीपुर लेयरे, तेह नें पिण पुण्य तसु मत ।८६।
मुनिथाको मग माहि रे, बोज घणो पोथ्या तणो ।
पगभर खीस्यो न जायरे, तो बोज उठाया पिण धर्म ८७
अरण्य वलि पुर मांहिरे, संत तृषातुर चेत नहीं ।
सचित उदक गृही पायरे, तेहनें लेखे धर्म तसु ।८८।

इत्यादिक अवलोयरे, गृही मुनिना कार्य करे ।
हरस छेद्यां धर्म होयरे, तसु लेखे सहु में धर्म ।८६।
मुनि नी हरस छेदतरे, तेह नें अनुमोदे मुनी ।
दंड चौमासी हुन्तरे, तृतीय उद्देश निशीथ में ॥ ६० ॥
अनुमोद्या ही पापरे, तो गृही छेद्या पुण्य किम ।
जिन आज्ञा चित्त स्थापरे, आज्ञा विन नहीं धर्म पुण्य
सामायक पच्चखाणरे, निर्वद्य कार्य अन्य वलि ।
ग्रहस्थ करे को जाणरे, तो मुनि अनुमोदे तसु ।६२।
निर्वद्य कार्य ताहिरे, गृही कीधे धर्म पुण्य तसुं ।
अनुमोदे मुनि रायरे, तेह नें पिण धर्म पुण्य छै ।६३।
विणज अनें व्यापाररे, सावद्य कार्य अन्य वलि ।
ग्रहस्थ करे तिवाररे, धर्म पुण्य तेहनें नथी ॥ ६४ ॥
सावद्य कार्य ताहिरे, गृही कीधे पिण पाप छै ।
अनुमोदे मुनिरायरे, प्रायश्चित आवे तसुं ॥ ६५ ॥
हरस छेदणरी ताहिरे, आज्ञा जिन मुनी न दिये ।
अनुमोदे पिण नांहिरे, तिण सुं ते सावद्य अछै ।६६।
ग्रहस्थ पासे जाणरे, कार्य करावा मुनि तणी ।
जावज्जीव पच्चखाणरे, मर्यान्ते पिण नियम ए ।६७।
हरस गुम्बड़ा आदिरे, गृही पें छेदावण तणां ।
मुनि नें त्याग सवादरे, गृही छेदें जवरी थकी ।६८।

मुनि अनुमोदे नांहि रे, तो तसु त्याग भागे नहीं ।
पिण कामी कहिवायरे, त्याग भंगावानो गृही ।९९।
तिण सू सावद्य एहरे, वलि अनुमोदे पिण नहीं ।
आज्ञा पिण नांहि देयरे, ते माटे नहि धर्म पुण्य ।१००।
जे कामी गृही थायरे, त्याग भगावा मुनि तणो ।
धर्म नहिं तिण मांहि रे, न्याय दृष्ट अवलोकिये १०१
किण गृही अष्टम कीयरे, आहार च्यार त्यागन कीया।
व्याकुल तृषा प्रसिद्धरे, यथा अचेतन अन्य गृही ।१०२।
उसनोदक तसु पायरे, कियो सचेतन अधिक सुख ।
नेम भङ्ग तसु नांयरे, पिण कामी त्याग भांगण तणो
तेम इहां अवलोयरे, नेम भङ्ग मुनि नो नथी ।
पिण कामी गृही होयरे, त्याग भगावा मुनि तणो१०४
किणही ग्रहस्थ पचखाणरे, हरस छेदावा ना किया।
जबरी सू पहिछाणरे, वैद्य हरस छेदे तसू ॥ १०५ ॥
नेम भङ्ग तसु नांहि रे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणो ।
कामी वैद्य कहिवायरे, तिण सु धर्म न तेह नें ।१०६।
तिम मुनिरे पचखाणरे, हरस छेदावा गृही कने ।
जबरी सू पहिछाणरे, वैद्य हरस छेदे तसू ॥ १०७ ॥
नियम भङ्ग तसु नांहिरे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणो ।
कामी वैद्य कहायरे, तिण सु नांहि तसु धर्म पुण्य१०८

वेद्य हरस छेदेहरे, अनुमोदे नांहि जे मुनि ।
किम तसु धर्म कहेहरे, न्याय विचारी देखल्यो ।१०९।
अनुमोद्या हीं पापरे तो छेदे तसुं पुराय किम ।
तृतीय करण अघ स्थापरे, प्रथम करण तो अधिक अघ
पाप हुवे धुर करणरे, ते अघनी अनुमोदना ।
तीजे करण उचरणरे, तिण लेखे तसुं पाप है ।१११।
प्रथम करण पुराय होयरे, ते पुरायनी करणीं प्रते ।
अनुमोदे जे कोयरे, तास पाप किण विध हुवे ।११२।
करण वाला नें पुरायरे, ने अनुमोद्या पाप कहे ।
प्रत्यक्ष वचन जबुन्यरे, न्याय दृष्ट कर देखीये ।११३।
छेदे तिण नें पुरायरे, ते पुरायरी करणीं प्रते ।
अनुमोद्या जो पुरायरे, तास पाप किण विध हुवे।११४।
धर्म बिना पुराय नांहिरे, शुभ जोगां थी निरयरा ।
पुराय बंध पिण थायरे, ज्यूं गहू लारे खाखलो ।११५।
द्वितीय आचाराङ्ग मांयरे, तेरम अध्येन ने विषे ।
पाठ कह्या जिन रायरे, ग्रहस्थ करे साधू तणा ।११६।
मुनि तनु व्रणज थायरे, गृही छेदे शस्त्रे करी ।
मुनि मनकर वान्छे नांयरे, न करावे वचकाय करि११७
व्रण छेदी नें ताहिरे, रुधिर राधि काढे गृही ।
मुनि मनकरि वंछे नाहिरे, न करावे वच कायकरि११८

गृही मुनि पगतलि कायरे, तेल चोपडे मर्दने।
मुनि मन कर वछे नाँयरे, न करावे वच काय करि '१९'
गृही मुनि पगथी ताहिरे, खीलो कांटो काढियां।
मन करि वछे नांहिरे, न करावे वचकाय करि ।१२०।
मुनि मस्तक थी ताहिरे, गृही काढे जू लीख प्रते।
मन करि वछे नांहिरे, न करावे वचकाय करि।'२१'।
बोल इत्यादिक ताहिरे, ग्रहस्थ करे साधू तणां।
वछे नाहिं मुनि रायरे, द्वितीय आचाराङ्ग तेर में।'२२।
मुनि अनुमोदे नांहिरे, तो ग्रहस्थ करे ए ऋषि तणां।
धर्म पुण्य तिण मांहिरे, किण ही बोल विषे नथी'२३
मुनि तनु व्रण छेदतरे, धर्म कहे इक बोल में।
तो तसु लेखे हुन्तरे, धर्म सर्व बोला मभे।'२४।
धर्म पुण्य नाहिं होयरे, ते सघला बोला मभे।
तो पाप गृही नें जोयरे, जिन आज्ञा नाहिं ते भणी १२५
तिम त हरस छेदतरे, अशुभ क्रिया ते वैद्य नें।
मुनि नहिं अनुमोदंतरे, धर्म पुण्य किण विध हुवै'२६
हरस छेद्या शुभ कर्म रे, तो आचाराङ्ग में कह्या।
त्यां सघला में धर्म रे, कहवो तिणरे लेख ए॥'२७॥
धर्म नहिं अन्य मांहिरे, तो छेदे व्रणादि गृही।
तिण में पिण पुण्य नांहिरे, एसावद्य, आज्ञा नथी'२८

हंस छेन्या धर्म हुन्तरे, तो मुनि शिर सेती गृही ।
जूवा पिण काढतरे, तिणमें पिण तसु लेख पुराय १२६
वलि मुनिवरनां सोयरे, पग चम्पी मर्दन करे, ।
कीजो औषध कोयरे, तसु लेखे पुराय सहु मर्म्मे १३०
वृत्ति विषे इम वायरे, धर्म बुद्धि छेद्या थका ।
कृपा हुवे शुभ तायरे, अशुभ कृपा लोभादि करि१३१
विरुद्ध अर्थ छै एहरे, सूत्र थकी मिलतो नथी ।
मुनि नहीं अनुमोदेहरे, तास कृपा शुभ किम हुवे१३२
इम शुभ कृपा जो होयरे, तो औषध तेलादि करि ।
मुनि तनु मर्द्दै कोयरे, तास कृपा पिण शुभ हुवे १३३
वलि मुनि पगथी तायरे, खीलो काटो कांडीया ।
तसु लेखे काढिवायरे, तेहनें पिण हुवे शुभ कृपा ।१३४।
वलि मुनि शिरथी सोयरे, जूवा लीखा काढीया ।
तसु लेखे अवलोयरे, तेहनें पिण हुवे शुभ कृपा १३५
मुनि अति तृषा अचेतरे, सचित अचित जल पाय करी
कीधो ग्रहस्थ सचेतरे, तसु लेखे हुवे शुभ कृपा ।१३६।
थाको मुनी उजाडरे, गाडे हय पर चाढ करे ।
आणे ग्राम मझारे, तसु लेखे हुवे शुभ कृपा ।१३७।
इत्यादिक अवलोयरे, मुनि ने जे कल्पे नहीं ।
ते करे कार्य गृही कोयरे, तसु लेखे पिण श

जो या बोला रे मांहिरे, नहुंव गृही नें शुभ कृया ।
तो हरस छेद्या पिण ताहिरे, किम शुभ कृया कहिजीए
हरस छेदणरी तांमरे, जिन मुनि आज्ञा नाहिं दिये ।
जिन आज्ञा विन कामरे, कीधा नहि छे धर्म पुराय१४०

॥ इति ॥

॥ अथ चोवीसमू सुभद्राधिकार ॥

॥ दोहा ॥

फांटो काढ्यो आसथी, सती सुभद्रा जेह ।
किणी सूत्र में ए नही, कथा निपे छे एह ॥ १ ॥
जो सुभद्रा ने धर्म छै, तो मुनिना अवलोय ।
अन्य कार्य्य बाई कीयां, तसु लेखे धर्म होय ॥ २ ॥
दूखे पेट मुनी तणो, मोत, घात अवलोय ।
बाई मशले उदरतो, तसु लेखे धर्म होय ॥ ३ ॥
बालि किण ही साधु तणी, टली पेटची ताम ।
बहु दु:ख फेरोपी घणो, अन्न नाहिं भावे आम ॥४॥
ते पेटची मुनि तणी, बाई मशले कोय ।
तो उणरे लेखे तदा, तिण में पिण धर्म होय ॥५॥
किणही मुनि रो गोलो चढ्यो, वहु दु ख बाई देख ।
गोलो मशले तेहनू, धर्म हुइ तसु लेख ॥ ६ ॥

अग्नि विषे पड़ता प्रते, बाई बांह पकडेह ।
बारे काढ़े तेहनें, तो धर्म तसु लेखेह ॥ ७ ॥
ऊँचा थी पड़तो मुनी, बाई झेले ताम ।
तिण मांही पिण धर्म छै, तेहनें लेख विमास ॥८॥
आखड पड़ता मुनि भणी, बाई झाल राखेह ।
पड़ता नें बेठो करे, हुवे धर्म तसु लेखेह ॥ ९ ॥
माथो दूखे मुनि तणो, बाई शिर दाबेह ।
मलम लगावे दूखणे, तसु पिण धर्म कहेह ॥१०॥
पाटो बांधे दूखणे, मुर्च्छा फुन मुशलेह ।
इत्यादिक बहु मुनि तणा, बाई कार्य्य करेह ॥११॥
दुःखी देख साधू भणी, मरतो देखी ताय ।
पीडाणो देखी करी, साता करे सवाय ॥ १२ ॥
फांटो काढ्यो सुभद्रा, धर्म हुसी ज्यों तास ।
तो याने पिण धर्म छै, तिणरे लेख विमास ॥१३॥
साधुरा, कारज करे, बाई जे जिण रीत ।
तिम कारज भाई करे, समणी ना धर प्रीत ॥१४॥
जो सुभद्रा नें धर्म छै, तो श्रमणी, नों जोय ।
भाई फांटो आख थी, काढ्यां पिण धर्म होय ॥१५॥
वलि कांटो पग माहि थी, समणी तणोज सोय ।
भाई काढे तेह में, तसु लेखे धर्म होय ॥ १६ ॥

वालि गोलो श्रमणी तणो, पेट पेटूची जोय ।
भायो मशले तेह में, तसु लेखे धर्म होय ॥ १७ ॥
शिर दाबे श्रमणी तणा भायो तसु दुःख देख ।
इम मुरछी मशले तसु, धर्म होसी तसु लेख ॥१८॥
मन्जन लगावे दूखणो वालि अञ्जणा पडती जोय ।
भायो भेले तेह नें, तसु लेखे धर्म होय ॥ १९ ॥
पडती नें बैठी करे इत्यादिक अवलोय ।
समणी ना भायो करे तसु लेखे धर्म होय ॥२०॥
साधुरा बाई करे तास धर्म छै सोय ।
तो श्रमणी नां भायो कीया, तिणमें अघ किम होय
सुभद्रा फाटो काडियो, जो तिण में धर्म होय ।
तो मार्ग में धर्म छै, न्याय सरिषो जोय ॥ २२ ॥
जो या सहु बोला मझे, जिन आज्ञा दे नाहि ।
तो धर्म पुराय पिण को नहीं, धर्म जिन आज्ञा माहि
जे मुनीवर ने त्याग छै, ते कार्य्य अवलोय ।
ग्रहस्थ करे को मुनि तणा, तास धर्म नहि होय॥२४॥
जिण रीतें जिणवर कह्यो, तिण रीतें अवलोय ।
अञ्जणा ने मुनिवर भणी, वचावियां धर्म होय २५
जे प्रभु सीखावे नहीं, न करे तास प्रशंस ।
आज्ञा पिण देवे नहीं, तिहा धर्म तणों नहि अंस २६

॥ इति ॥

॥ अथ पचीसमू गोशालाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे छद्मस्थ प्रभु, चौनाणी था जेह ।
किम चूका कहो वीर ने, तसु उत्तर हिव लेह ॥ १ ॥
वलि तुम्ह कहो गोशाल नें दीक्षा दीधी स्वाम ।
ते किण सूत्र विषे कह्यु, तसु उत्तर पिण तांम ॥ २ ॥
वलि अनुकम्पा करि प्रभु, राख्यो जे गोशाल ।
तेह विषे पिण स्युं थयु, तसु उत्तर पिण न्हाल ॥३॥
शतक पनरमें भगवती, आया सावत्थी स्वाम ।
उत्पति गोशाला तणी, गौतम पूछी ताम ॥ ४ ॥
वीर कहे सुण गोयमा, गौ नी शाला मांय ।
ए जन्म्यों तिण कारणे नाम गोशाल कहाय ॥५॥
हू तीस वर्ष घर में रही, प्रभु चरण सुख राशि ।
प्रथम वर्ष पख पख सुतप, अट्ठी ग्राम चौमास ॥६॥
तप मास मास दूजे वर्ष, नगर राजग्रह वार ।
नालंदा पाडा मझे, चौमासो सुविचार ॥ ७ ॥
ततुवाय शाला विषे, हू तपकरत विशेष ।
आयरह्यो गोशाल पिण, ते शाला इक देश ॥८॥
प्रथम मास नू पारणो, विजय तणे घर किद्ध ।
प्रगट हुआ जे पत्र द्रव्य, महिमा देस प्रसिद्ध ॥६॥

गोशालो कह्यो मुझ भणी, थे धर्माचार्य सोय ।
धर्मान्तेवासी प्रभु हूं तुम्हनो अवलोय ॥ १० ॥
तब मैं तेहना वचन नैं, आदर न दियो कोय ।
मनमैं भलो न जाणियो, धारी मौन सु जोय ॥११॥
द्वितीय मास नों पारणो, आणंद नैं घर कीध ।
तिमहिज गोशाले कह्यो, मैं आदर नहीं दीध ॥१२॥
तृतीय मास नूं पारणो, कियो सुदर्शण गेह ।
तिमहिज गोशाले कह्यो, मैं आदर नहिं देह ॥१३॥
तुर्य मास नूं पारणो कोल्लाक सनिवेश ।
ब्राह्मण बहुल तणे घरे, करि चारयो सु विशेष ॥१४॥
तंतु वाय शाला विषे, गोशालो तिहवार ।
मुज प्रति तिण देख्यो नहीं, जोयो भ्यन्तर बार ॥१५॥
मुज अग्र देख्यें, निज उपधि, ब्राह्मण नैं दे ताय ।
मूंडी दाढ़ी मूछ प्रति, मिल्यो ज मुज सूं आय ॥१६॥
तीन प्रदक्षणा दे करी, जावनमी कहे सुज्झ ।
थे धर्माचार्य माहरा, हूं धर्म अंते वासी तुज्झ ॥१७॥
तब मैं गोशालक तणा, एह अर्थ प्रति सोय ।
अङ्गीकार कीधो तदा, पाठ विषे इम जोय ॥१८॥
वृत्तिकार कह्यु एहवा, अजोग नैं पिण जेह ।
अङ्गीकार कीधो प्रभु, ते अक्षीण राग पणेह ॥१९॥

थकि तेहना परिचय थकी, ईषत् थोड़ी जाण ।
स्नेह गर्भ अनु कम्पना, सद्भावे पहिछाण ॥२०॥
प्रभु छद्मस्थ पणे करि, जेह अनागत काल ।
तेह विषै जे दोषना, अजाणवाथी न्हाल ॥२१॥
अवश्य होणहार भाव थी, कीयो प्रभु अङ्गीकार ।
अभय देव सूरे कह्यो, वृत्ति विषै ए सार ॥२२॥

॥ ते टीका कहे छै ॥

यच्चेह गोशालकस्य अयोग्यस्याप्यभ्युपगमनं भगवता तदक्षीणरागतया परिचये नेष स्नेहगर्भानुकम्पासद्भावात् छद्मस्थतयाऽनागत दोषानवगमात् अवश्य भाविभावत्वाच्चेति भावनीयं ।

॥ दोहा ॥

तदन्तर हूं गोयमा, गोशाला रे साथ ।
भोगविया षट् वर्ष लग, लाभ अलाभ संजात ॥२३॥
सुख दुख नें सत्कार पुन, असत्कार पुन सोय ।
अनित्य जागरणा जागतो, हूं विचर्यो अवलोय २४
मृगशिरमासे एकदा, हूं गोशाला साथ ।
जे सिद्धार्थ ग्राम थी, कुर्म ग्राम प्रति जात ॥२५॥
तिल थंभो इक देख नें, मुज प्रति तब गोशाल ।
ए तिल नीपजसे क नहीं, इम पूछ्यो तिह काल ।२६।

सप्तजीव, तिल पुष्प ना, मरी २ नें ताय।
किहा उपजसे हेप्रभु, तब हू बोल्यो वाय॥ २७॥
नीपजसे तिल थंभ ए, फुल जीव जे सात।
मरी मरी ए एह नें, तिलथभ विषे विख्यात॥२८॥
एक फली जे तिल तणी, तेह विषे अवलोय।
ए तिल सप्त हुस्ये सही, इम में भाख्यो सोय॥ २९॥
तब गोशाले मुज वचन, श्रद्धयो नहिं मन माहि।
प्रतीतीयो पिण नहीं तिणों, रोचावियो पिण नाहिं ३०
मुज ने कूटो घालवा, धीरे धीरे तास।
पाछोवल नें आवीयो, ते तिल बूटा पास॥ ३१॥
माटी मूल सहीत तिण, तुरत उपाडी जेह।
एकन्ते न्हाख्यो तदा, ते तिल थभ प्रतेह॥ ३२॥
तात्क्षिण थोडी वृष्टि करि, थव्यो तिल थभ स्थान।
थया सप्त तिल फुल चवि, एक फली में प्राण।३३।
गोशाला साथै तदा, हू आयो कुर्म ग्राम।
तेहि नगरर बाहिरे, बाल तपश्वी ताम॥ ३४॥
नाम वेसियायिण तिको, तप छट्ठ छट्ठ करेह।
रवि सन्मुख आतापना, तिहा लेतो विचरेह॥३५॥
तसु शिर थी रवि ताप करि, यूका भूमि पडंत।
तासं दया अर्थे तिको, वालि २ शिरे धरंत॥ ३६॥

तव गोशालो मुंज पासथी, वाल तपस्वी पाहि ।
धीरे २ आय ने, बोल्यो एहवी वाय ॥ ३७ ॥
स्युं तू मुनि तपस्वी अछे, तया तत्त न जाण ।
यती तथा तुं कदाग्रही, के जू सिज्यातर माण ॥३८॥
गोशालाना वचन नें, तिण आदर नहि दिद्ध ।
मनमें भलो न जाणियो, साधी मौन प्रसिद्ध ।३६।
बे त्रण वार गोशाल तव, बोल्यो तिमहिज वाण ।
स्यू तू मुनि तपस्वी अछे, जाव जूआ रो स्थान ॥४०॥
वाल तपस्वी सीघ्र तवे, कोप चढ्यो असराल ।
जे आतापन भूमि थी, पाछो वालियो न्हाल ।४१।
समुद्घात तेजस प्रते, करे करी अवलोय ।
सात आठ पग ते तदा, पाछो उसरी सोय ॥४२॥
मखालि पुत्र गोशाल - नें, हणवा काजे जाण ।
काढे तेज शरीर थी, ए तेजू उष्ण पिछाण ॥४३॥
तिण अवसर हुं गोयमा, गोशालक नी नेह ।
तेह मखली पुत्र नां, अनुकम्पा अर्थेह ॥ ४४ ॥
वेसियायण नाम तिको, बाल तपस्वी जेह ।
तेह तणी जे तेज प्रति, दूर हरण अर्थेह ॥४५॥
तापस नें गोशाल रे, इहा बिचाले न्हाल ।
शीतल तेजू लेश्य प्रति, में मूकी तिण काल ॥४६॥

॥ चोपाई ॥

जा मुज शीतल तेजुलेश, तिण लेश्या करि नैं सुविशेप । वेसियायण तापस नी जाणी, उन्ही तेजुलेश हणाणी ॥ ४७ ॥ वेसियायण तपस्वी तिह अवशर, मुज शीतल तेजु लेश्या करि । पोता नीं जे उष्ण पिछाणी, तेजु लेश्यहणाणी जाणी ॥ ४८ ॥ गोशाला ना तनु नैं ताह्यो, जाणयो किञ्चित पीड न पायो । देख्युं आवि छेद अण करतो, ते उष्ण तेजु लेश्य संहरतो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

उष्ण तेजु प्रति संहरी, मुजे प्रति बोल्यो नाय ।
जाणिया भगवन् आपनें, जाणया २ ताहि ॥५०॥
आप तणा ज प्रशाद थी, दग्ध हुवो नहिं एह ।
संभ्रम थी गत शब्द नैं, बार २ उचरेह ॥ ५१ ॥

॥ गीतक छन्द ॥

वहु वृत्ति मे गोशाल नों भगवत सरक्षण कीयो ।
सराग भाव करि प्रभु इक दयारस थी राखीयो ॥
जे उभय मुनि नवि राखस्ये ते वीत राग पणे

वृती । फुन लब्धि अग्नि फोड्या थकी । वलि अवश्य भावी भाव थी ॥ ५२ ॥

॥ अत्र टीका ॥

इह स यद्गोशालकस्य तेजसा भगवतः पूर्वं समागतत्वेन दयैकरसत्वाद्रक्षितः यच्च सुनक्षत्रसर्वानुभूति मुनिपुङ्गवयोर्न कारितवान् तद्वीतरागत्वेन लब्ध्यनुपजीवकत्वात् अवश्य भावि भावत्वाद्वा इति ॥

॥ दोहा ॥

गोशाला तिण अवसरे मुज प्रति बोल्यो वाय ।
ज्ञ सिष्यातरियो किम्, तुज प्रति भाव नाहि ।५३।
जाणता भगवत तो भणी, जाणता जाणता सोय ।
तब हूं गोशाला प्रते, इम बोल्यो अवलोय ॥५४॥
हे गोशाला तूं इहा, वेशियायण नाग्रेह ।
बाल तपस्वी प्रति तदा, देखी नेत्र करेह ॥ ५५ ॥
धीरे २ ऊसरी, मुज पासा थी नाहि ।
जिहां वेसियायण तिहा, जई बोल्यो इम वाय ।५६।

॥ चोपाई ॥

स्यूं तू मुनी तपस्वी छै कोई, तथा तत्व नों जाण सु होई । स्यूं तू यती कदाग्रही कहियो, कै तूं जूं

नं सिग्गात्तरीयो ॥ ५७ ॥ वेशियायण तपश्वी तिहवार, तुज वच आदर न दिये लिगार । मनमें पिण भलो न जाणे रह्यो मून धरी तिह टाणे ॥ ५८ ॥ अहो गोशाला तूं तब हेर तिण वाल तपश्वी प्रतेज फेर। तू मुनी के जाव जू सेय्या तरियो, इम मे पण बार उच्चरियो ॥ ५९ ॥ तब बाल तपश्वी सीघ्र कोप्यो जाव पाछो ऊशर चित्त रोप्यो । तुम्ह हणवा तेज मूंकेह तब हूं तुम्ह अनुकम्पा अर्थेह ॥ ६० ॥ तिणारी उष्ण तेजू हणवा न्हाल, मूकी शीतल तेज अतराल । तब बाल तपश्वी चित्त ठाणी उष्ण तेज हणाणी जाणी ॥ ६१ ॥ पिछे तुम्ह तनु नवि देखेह । उष्ण तेजु लेश्या सहरेह । तब मुज प्राते वोरयो वाय जाणिया २ हे भगवन् ताहि ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवशर गोशाल तें सांभल वच मुम्ह पास ।
बीहनो यावत पामियो, अतही भय मन त्रास ।६३।
मुज प्राते वन्दी नमण करि, इम बोल्यो अवलोय ।
संक्षिप्त विस्तीर्ण प्रभु, तेज लेश किम होय ।६४।

तिण अवशर हूं गोयमा, गोशाला प्रति ताहि ।
तेह मंखली पुत्र प्रति, बोल्यो इह विध वाय ।६५।
इक मूठी उडदे करी, फुन जे उष्ण जलेह ।
इक पुशली तप छट छटे, अतर रहित करेह ॥६६॥
ऊंची बाह आतापना, सूर्य सनमुख लेह ।
तसु छेहडे षट् मासे, तेजु लेश हैं तेह ॥ ६७ ॥
गोशालक तिण अवशरे, ए मुज अर्थ प्रतेह ।
सम्यक् प्रकारे विनय करि, अङ्गीकृत करेह ॥६८॥
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक सघात ।
अन्य दिवश कुर्म ग्रामजे, नगर थकी विख्यात ।६६।
सिद्धार्थ फुन ग्रामजे, नगरे आवत तांम ।
जे तिल थम मुज पूछियो, जद आव्यो ते ठाम ।७०।
तब गोशालो मुज प्रते, बोल्यो एहवी वाय ।
मुज नैं प्रभु तुम्ह जद कह्यु, तिल निपजसी ताहि ७१
तिमज सप्त पुष्फ जीव चवि, एक सङ्गली मांय ।
हुस्ये सप्त तिल तेह वच, मिथ्या प्रत्यक्ष दिखाय ।७२।
ते तिलस्थंभ न नीपनो, सप्त पुष्फना जीव ।
चवी सप्त तिल नवि थया, इक सुगणी में अतीव ७३
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक प्रति वाय ।
बोल्यो तैं मुज जद वचन, श्रद्धयो नाहिं मन मांय ७४

प्रतीतियो नाहिं रोचव्यो, यह अर्थ अवलोय ।
मनमें अश्रद्ध तो छतो, झूटो थालखा मोय ॥७५॥
ए मिथ्या वादी हवो, इम मन करी विचार ।
मुज थी पाछो ऊशरी, धीरे धीरे धार ॥ ७६ ॥
जिहां तिलथंभ तिहां आयनें, यावत एकान्त ठाम ।
न्हां स्यो ते उपाड नें, हे गोशालक ताम ॥ ७७ ॥
तत्क्षिण बादल अभ्र दिव्य, प्रगट थयो तिहवार ।
अभ्र बदल ते सिघ्र ही, तिमहिज यावत वार ॥७८॥
तेह तिलना स्थभ नीं, एक संगली माहिं ।
तदा ऊपना सप्त तिल, जेम कह्यु तिम ताहि ॥७९॥
हे गोशाला तेह ए तिल नू स्थभ निष्पन्न ।
नथी तेह अण नीपनूं, निश्चय करी सुजन्न ॥८०॥
तेह सप्त पुष्फ जीव चवि, ए तिलस्थम्बनीं जाण ।
एक संगली नें विषे, थया सप्त तिल आण ॥८१॥
इम निश्चय गोशालका, वनस्पति रे मांहि ।
पउट्टपरिहार करे तिके, मरी मरि तखुतन आय ॥८२॥

॥ टीका ॥

पारिहस,२ मृत्वा २ यस्तस्यैव वनस्पति शरीरस्य परिहार परिभोग स्तेभ,बोसावो सो परिहस परिहारस्त ।

॥ वार्त्तिका ॥

वणस्पति कहता वनस्पति ना जीव जे [1]पारिहार २. फ० परी परी नैं पडिम वनस्पती ना शरीर नौ परिहार क० परिभोग ते तिहाइज उपजवु ते पारिहार्य परिहार करिइ तेम, ते पारिहारत्ति कहता कौ, ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवशर गोशाल ते, सुन इम कह्यो छतेह ।
एह अर्थ श्रद्धे नहीं, नाहिं प्रतीत न रुचेह ॥ ८३ ॥
यह अर्थ अण श्रद्धतो, जिहां तिल स्थम्ब त्यां आव ।
ते तिल थम थी तिल तणी, सङ्गली तोडे ताहि ।८४।
ते तिल संगली तोड नें, करतल लिये ज सोय ।
सप्त तिल पाडे तदा, प्रगट पणे ते जोय ॥ ८५ ॥
तिण अवशर गोशाल नैं, गिणतां ते तिल सात ।
एहवुं मन में चिंतव्युं, जाव समुत्पन्न जात ॥८६॥
इम निश्चय सहु जीव पिण, पउट परिहार करेह ।
हे गोतम गोशाल नूं, पउट वाद कह्यो एह ८७॥
हे गोतम गोशाल नूं, मुझ पाशा थी जेह ।
आतमइ करिके तसु, पहिलु जुदो कहेह ॥ ८८ ॥

॥ वार्त्तिका ॥

[1] आयाए पाठ नौ अर्थ, वृत्तीकार आयाए पाठ नां बे अर्थ कीधा।—भगवन कहै म्हारा थकी थी आयाए कहतां आत्मइ

करी अपक्रम ते जुदो पड्यो तीसरो अर्थ आपाए कहतां आदाय तेजु लेश्या नूं उपदेश ग्रहण करी नें जुदो पड्यो ।

॥ इति आपाए पाठ नूं अर्थ ॥

तिण अवसर गोशाल ते, इक मूठि उड़देह ।
इक पुसली उष्णोदके, छट्ठ यावत विहरेह ॥८९॥
तिण अवसर गोशाल ते, षट्मासे अवलोय ।
संक्षिप्त विस्तीर्ण तिका, तेजु लेश्यवत होय ॥९०॥
तिण अवसर गोशालपे, पार्श्वनाथ ना जोय ।
षट् साधु भागल हुंता, आवी मिलिया सोय ॥९१॥
गोशाला नें गुरु पणे, पडिवज्ज रहिता जेह ॥
तेसाणी तिमहिज सहु, पूर्व कह्या तिम लेह ॥९२॥
यावत् ए अजिन छतो, पिण जिन शब्द उच्चार ।
प्रकाशमान छतो ज ए, विचरे छै इहवार ॥९३॥
मोटी अपधा नें विषे, वीर कही ए बात ।
गोशालो सुण कोपीयो, निज संघ प्राति ले साथ ९४
वीर समीपे आयनें, बोल्यो एहवी वाय ।
भलो कहै रे काशवा, आछो कहे रे ताहि ॥९५॥
रे काशव तूं इम कहै, मंखली सुत गोशाल ।
धर्मान्ते वासी माहरो, पिण हूं नाहिं ते न्हाल ९६
मखली सुत गोशाल ते, धर्मान्ते वासी तोय ।
ते तो काल करी गयो, सुरलोके अवलोय ॥९७॥

महाकल्प चौरासी लक्ष, सप्त देव भव सार ।
सप्त सयूथा सन्नि गर्भ, सप्त पउट परिहार ॥६८॥
इत्यादिक निज शास्त्र नी, वत्तिका कही वर्णाय ।
जीव उदाई नाम हूं, पिण गोशालो नांय ॥६६॥
गोशालारे तनु विषे, अम्हे कीधूं प्रवेश ।
सप्तम पोट परिहार ए, इत्यादिक जे अशेश ॥१००॥
और तणो दृष्टान्त प्रभु, गोशाला ने दीध ।
तब गोशालो बोलियो, अगल डगल बहु विधि १०१
श्रवानु भूति मुनि तदा, गोशालापे आय ।
भगवन्त नें अनुराग करि, बोल्यो एवी वाय १०२
समण माहण पे एक पिण, आर्य्य वच धारेह ।
तो पिण तसु वन्दे नमें, यावत सेव करेह ॥१०३॥
तो स्यु कहिवो गोशाल तुम्क, भगवत प्रवर्या दीध ।
निश्चय भगवंत मूंडियो, शिष्य पणे सुप्रसिद्ध १०४
वृत्ति पणे करिनें वली, सेव्यो भगवन्त तोय ।
सीखावी भगवत तुम्क, तेजु लेश अवलोय ॥१०५॥
वलि भगवत बहु श्रुत कियो, भगवन्त थकी ज सोय ।
भाव अनार्य पडिवज्जियो, ते माटे अवलोय ॥१०६॥
मति इम हे गोशाल तुम्क, करण योग्य नहि एह ।
तेहिज छाया ताहरी, नहि अनेरी जेह ॥१०७॥

सुण गोशालो कोपियो, तेजु लेश करि तांम ।
श्रवानु भूति मुनि प्रते, भस्म कीयो तिण ठाम १०८
द्वितीयवार गोशाल फुन, कठिन वचन अधिकाय ।
नष्ट विणष्टादिक कह्या, तब सुनक्षत्र मुनिराय १०९
जिम श्रवानुभूति कह्यो, तिमहिज कह्यो विचार ।
गोशालो तब तेज करि, परितापे तिहवार ।११०।
प्रभु पे आवी वंदि नम, महाव्रत प्रति आरोप ।
संत सत्यां नें खाम नें, कीधो काल अकोप ।१११।
तृतीयवार गोशाल फुन, प्रभु प्रति निठुर वदेह ।
तब प्रभु गोशाला प्रते, सुनि कह्यो तिमज कहेह ११२
हे गोशाला ! तो भणी, मैं प्रवज्यां दीध ।
यावत मैं बहु श्रुति कियो, म्लेच्छ भाव तें कीध ।११३।
गोशालो सुण कोपीयो, तनु थी काढे तेज ।
प्रभु तनु परितापे तदा, पिण तनु नाहिं पेसेज ।११४।
गोशालारा तनु विषे, पाछो पैठो आय ।
लागी दाह शरीर में, बोल्यो प्रभु प्रति वाय ११५
छद्मस्थ थको छ मास में, काशव काल करेह ।
प्रभु कहे हूं वर्ष सोल लग, गंध गज जिम विचरेह ११६
तें मूकी-तेजू तिका, पैठी तुझ तनु म्हाल ।
तेह थी सातम् निशि मझे, तू करसी छद्मस्थ काल ११७

पुर में जन कहै उभय जिन, लवैं माहो मांहि वाय ।
कुण साचो झूठो कवण, आश्चर्य ए अधिकाय ११८
गोशालो निज स्थान जई, सप्तम निशि सु विचार ।
सम्यक्त्व पामी आतम निन्द, काल कीयो तेहवार ११९
प्रभु वेदन षट् मास सही, पछै विजोग पाक ।
लीधैं तनु प्राक्रम वध्यो, प्रभुजी होगया चाक ।१२०।
गोयम तब वे मुनी तणी, पूछी फुन प्रछेह ।
अंतेवासी आपरो, कु शिष्य गोशालक जेह ।१२१।
काल करी नें किहा गयो, प्रभु भाष्यो सुविशाल ।
अंतेवासी माहरो, कु शिष्य गोशालक न्हाल ।१२२।
श्रमण घातक छद्मस्थ थको, काल करी सुजगीस ।
अच्युत् कल्पै ऊपनों, स्थिति सागर बावीस १२३
भगवती पनरमें शतक में, छै बहुलो विस्तार ।
इहां संक्षेप थकी कह्यो, गोशालक अधिकार ।१२४।
कही सूत्र में तिमज कह्यु, हिंव तसुं कहिये न्याय ।
प्रभु शिष्य कियो गोशाल नैं, वलि बचायो ताय १२५
गोशाला नीं वारता, प्रभुजी धुर सू ख्यात ।
मास २ तप द्वितीय वर्ष, म्हे कीधो सुविख्यात ।१२६।
प्रथम मास नैं पारणै, विजय तणा घर किद्ध ।
गोशालो कह्यो आप गुरु, हूं तुम शिष्य प्रसिद्ध १२७

तसु अङ्गीकार में नवि कीयो, द्वितीय मास नें जाण ।
पारणा गोशालै कह्यु, तिणहिज रीत पिछाण ।१२८।
अङ्गीकार न कियो तदा, तृतीय मासरै जेह ।
पारण फुन गोशाल कह्यु, पिण म्हैं अंगीकृत न करेह
जो शिष्य करवा नी रीत हुवै, तो प्रथम वार ही पेख ।
अंगीकार करता प्रभु न्याय विचारी देख ॥१३०॥
तुर्य मास नैं पारणे, निमज कह्यु गोशाल ।
मुझ धर्माचार्य तुम्हे, हू धर्म अन्तेवासी न्हाल १३१
में अङ्गीकार कीयो तसुं इम कयो सूत्र विषेह ।
वृत्तिकार एहवो कह्युं, सामल जो चित्त देह ।१३२।

॥ गीतकछन्द ॥

अक्षीण राग पणा थकी परिचय करी नें जानीय ।
ईषत् स्नेह अनुकम्पनां सद्भाव थी पहिछानीय,
अद्धा-अनागत दोषना अजाणवाथी आदत फुन
अवश्य भावी भाव थीज अजोग भांति अङ्गीकृत १३३

॥ दोहा ॥

अक्षीण राग पणे करी, अङ्गीकार प्रतिख्यात ।
ते राग भाव में धर्म किम, समझो सुगण सुजात १३४

वलि परिचय करी नें कह्यो, ईषत् स्नेह अनुकम्प ।
एह कार्य्य आछो हुवे, तो इह विधकेम पर्यम्प ।१३५।
अर्थाणराग पणा विषे, परिचा विषय सु जोय ।
स्नेह अनुकम्पा नें विषे, भलो कार्य किम होय ।१३६।
वलि अनागत दोषना, अजाणवा थी जोय ।
अङ्गीकार कीधो कह्यो, ते दोष किसो अवलोय १३७
ए तिल नीपजसे कह्यो, तिण दीधो तुरत उपाड ।
हिन्सा जीवा री हुई, ए अवगुण अवधार ॥१३८॥
वलि लब्धि फोड गोशाल नीं, रक्षण कीधो ताय ।
तिण बहु मिथ्यात वधावियो, ए पिण अवगुण थाय
वलि तेजु लेश्या प्रते, सीखावी भगवान ।
तिण लेश्याइ मुनी हणया, ए पिण अवगुण जान१४०
वलि प्रतापना प्रभु नें करी, तेजू लेश्य करेह ।
वेदन अति षट् मास सही, प्रत्यक्ष अवगुण एह १४१
वलि तिल बूंटो नीपनो, एम कह्यो भगवान ।
तदर्थिण तिणे उपाडियो, ए पिण अवगुण जान१४२
एम अनागत दोषना, अजाणवाथी न्हाल ।
प्रभु छद्मस्थ पणे कीयो, अङ्गीकृत गोशाल ।१४३।
जो ए अवगुण जाणता, तो केमकरे अङ्गीकार ।
पिण उपयोग दीयो नहीं, चारू न्याय विचार ।१४४।

जो अपर अनागत दोष हुवे, तो कहियेतसुं नाम।
प्रगट वृत्ती में आखियो, दोष अनागत तांम १४५
कोई कहे गोशाल ने, अङ्गीकार कृत ख्यात।
पिण दिक्षा दीधी इसो, किहां पाठ अवदात १४६
श्रवानुभूत्ति मुनि कह्यो, हे गोशाला तोय।
प्रवर्ज्या दीधी प्रभु, वालि प्रभु मूडयो सोय।१४७।
वृत्ति पर्यो सेव्यो प्रभु, सीखायो भगवान।
वालि बहु श्रुति प्रभु कियो, प्रगट पाठे पहिछान १४८
इमज सु नक्षत्र मुनि कह्यो, इम प्रभु कह्यो प्रसिद्ध।
हे गोशाला तोभणी, म्हे ज प्रवर्ज्या दिद्ध।१४६।
यावत म्हे बहु श्रुत कियो, मुझ सेती इहवार।
भाव अनार्य्य पडिवज्यो, इम आख्यो जगतार १५०
तब गोशाले जिन ऊपरे, मूकी तेजू लेश।
प्रभु षट् मास लगे सही, वेदन अधिक विशेष १५१
जे षट्मास थयां पछे, प्रभु तनु थयो निराम।
गौतम पूछ्यो कु शिष्य तुम्ह, मर उपनो किण ठाम
प्रभु कह्यो अंतेवासी मुज, कु शिष्य गोशाल जगीस।
अच्युतकल्पे ऊपनों, स्थित सागर बावीस।।१५३।।
नव में शतके भगवती, तेतीसम उद्देश।
गौतम पूछ्यो वीर प्रति, सांभलजो सु विशेष।१५४।

अंतेवासी कु शिष्य तुम्ह, जमाली अणगार ।
काल करी किहां ऊपनों, प्रभु भाषै तिह वार ॥१५५॥
अंतेवासी कु शिष्य मुज, जमाली अणगार ।
लंतक कल्पे ऊपनों, किल्विष पणे विचार ॥१५६॥
जमालीनें कु शिष्य कह्यु, तिमहिज कु शिष्य गोशाल।
ते माटे विहुं शिष्य हुता, देखो नयण निहाल ॥१५७॥
अंतेवासी विहुं भणी, आख्या श्रीजगनाथ ।
वलि कु शिष्य विहु नें कह्या, देखो तज पखपात॥१५८॥
कु पूत कहिजे पूत पुर, तिणहिज रीत पिछाण ।
कु शिष्य कहिजे शिष्य पुर, समझो चतुर सुजाण॥१५९॥
अङ्गीकृत आख्यो प्रथम, अवातु मुनि स्यात ।
कह्यो सुनक्षत्र मुनि वलि, फुन प्रभु कह्यो विख्यात
तास कु शिष्य कह्यो वलि, ए पचठाम पहिछान ।
दीक्षा गोशाला तणी, देखोजी बुद्धिवान ॥१६१॥
नवमें ठाणे वृत्ति में, जिन छद्मस्थ सु जोय ।
दिक्षा न दिये इम कह्यो, शिष्य वर्ग न सोय ॥१६२॥

॥ अथ ठाणाङ्ग नवमें ठाणे टीका मे कह्यो छै तीर्थंकर छद्मस्थ थका दिक्षा न दिये ते गाथा लिखिए छै ॥

न परीवए सिया नय छउमत्था परीवए ।
संपि दिक्खिनय सीसवग्गो दिखंति जिणा जहासव्वे

केवल उपाजिया विना, दित्ता दीधी आप।
अक्षीण राग पणौ करी, परिचय स्नेह प्रताप ॥१६३॥
वलि अजाण पणा थकी, जेह अनागत दोप।
वृत्तिकार पिण इम कह्यो, तो मुजथी क्यू अपसोस
अयोग नें अङ्गीकार कृत, एम कह्यु वृत्तिकार।
जे दित्ता देवा जोग्य नहीं, तेह अयोग विचार १६५
अक्षीण रागपणो कह्यो, ते राग भावरे माहि।
आणाँ केवली नी अछे, अथवा आज्ञा नाहिं ।१६६।
वले परिचय करि नें कह्यो, ते परिचय पहिछान।
आछो के अथवा बुरो, न्याय विचार सुजान १६७
ईषत् स्नेह गर्भानु कम्प, संभावथी अवलोय।
अङ्गीकृत कह्यु वृत्ति में, तास न्याय हिव जोय ।१६८।
जे अनुकम्पा नें विषे, स्नेह रह्यो छै ताय।
स्नेह गर्भ अनुकम्पते, मोह अनुकम्प कहाय ।१६९।
भावे स्नेह अनुकम्प कहो, भावे मोह अनुकम्प।
श्री जिन आज्ञा बार है, सावद्य तेह प्रपञ्च ।१७०।
मोह कर्म नां उदय थी, स्नेह राग ए होय।
तिण सु स्नेह अनुकम्प ते, मोह अनुकम्पा जोय ।१७१
स्नेह कियासु करिवो नाहिं, भाख्यो श्री जिनराय।
उत्तराध्ययनें आठ में, दूजी गाथा माँय ॥ १७२ ॥

ईषत् स्नेह अनुकम्प कही, ते अनुकम्पा सोय ।
सावद्य पाप सहित छै, अथवा निर्वद्य जोय ।१७३।
जो निर्वद्य अनुकम्प ए, तो इषत् क्यु ख्यात ।
प्रगट कृपा करि प्रभु, इमकहता अवदात ।१७४।
ईषत स्नेह अनुकम्प ए; जो सावद्य छे सोय ।
तो सावद्य मैं धर्म नहीं, हिये विमासी जोय १७५
ईषत लोभ भलो नहीं, ईषत भलो न मान ।
ईषत माया नहिं भली, तिम ईषत स्नेह जान १७६
ईषत झूट भलो नहीं, ईषत भलो न सुद्ध ।
ईषत अदत्तभलो नहीं, तिम ईषत स्नेह अशुद्ध १७७
गौतम ने जिन स्नेह थी; अटक्यो केवल ज्ञान ।
तो गोशालारा स्नेह थी, धर्म पुण्य किमजान १७८
काल अनागत दोष पिण, वृत्तिकार आख्यात ।
तो प्रशसवा योग्य ए, कार्य्य केम कहात ।१७९।
होणहार निश्चय तिको, टाल्यो नहिं टलत ।
तिण कारण गोशाल ने दिक्षा दी भगवत १८०
वृत्तिकार पिण इम कह्यो, तुम्हने पिण तिणी रीत ।
काहिबु तेहिज उचित छै, वारुं वचन वदीत ।१८१।
कोई कहै ए वृत्ति नैं, तुम्हे न मानो कोय ।
तो वात वृत्ति नी किम कहो, हिव उत्तर अवलोय१८२

भगवती शतक अठार में प्रभुजी भणी प्रत्यक्ष ।
सोमिल प्रश्न ज पूछिया, शरसव भक्ष अभक्ष ॥१८३॥
जिन कह्यो जे ब्राह्मण तणा, शास्त्र विषे आख्यात ।
शरसव नां बे भेद है, इत्यादिक अवदात ॥१८४॥
तो ब्राह्मण नां शास्त्र प्रते, स्युं मान्युं जगनाथ ।
पिण तेह नें समझायवा, तसुं मतनी कही बात१८५
तिम मिलती ए वार्त्ता, वृत्ति तणी आख्यात ।
जे वृत्ति मानें तेहने, समझावा कही बात ॥१८६॥
वलि प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित्त ल्याय ।
शीतल तेजू फोडवी, रक्षण कीधो ताय ॥१८७॥
वृत्तिकार इण भाखियो, तेह सराग पणेह ।
एक दया ने रस थकी, रक्षण कीधो एह ॥१८८॥
बे मुनी ने न बचावसी, तब बात राग भावेह ।
लब्धि अण फोडवा थकी, अवश्य भावी एह १८६
इहां सराग पणों कह्यो, ते सराग पणारे मांय ।
धर्म पुण्य किण विध हुवे, देख विचारो न्याय १६०
सराग पणों काहिनें पछें, दया एक रस ख्यात ।
जिसो सराग पणों हुवे, तिसी दया ए थात ॥१६१॥
सराग भाव निर्वद्य नहीं, तिम दया न निर्वद्य एह ।
दोनूं सावद्य जाणवा, न्याय विचारी लेह ॥१६२॥

वे साधु नविराखीया, ते वीत राग भावेह ।
दयावंत पिण जद हुता पिण सावध दया न तेह १९३
वीत राग थयां पछै, भाव सराग न होय ।
तिम वीत राग थया पछै, सावद्य दया न कोय १९४
कोई कहै सावद्य दया किहां कही छै ताम ।
न्याय कहु छु तेह नों सुण राखो चित्त ठाम ।१९५।
हेमि नाम माला विषे, आठ दया रा नाम ।
दया शूक कारुण्य फुन, करुणा घृणा जु ताम ।१९६।
कृपा अनें अनुकम्प फुन, वलि अनुक्रोश कहाय ।
नाम एकार्थ आठ ए, तृतीय कांयडरे मांय १९७

॥ अथ हेमिनाम माला में आठदयारा नाम कह्या ते लिखीयें छै ॥

सूरतोष दयाशूक कारुण्य करुणा घृणा कृपानु कंपानु क्रोशो ॥ इति ॥

जिन ऋप सामों जोवीयो, रत्न दीप नीं जेण ।
देवी नी करुणा करी, ज्ञाता नवम अज्झेण ।१९८।
करुणा नाम दया तणों, ते माटे सुविचार ।
एह दया सावद्य छै, श्रीजिन आज्ञा बार ॥१९९॥
उत्तराध्येन बावीस में, नेम नाथ भगवान ।
जीव देख अनुक्रोश मन पाठ विषे पहिछान ।२००।

अनुक्रोश ते करुणा कही, अविचारि में अर्थ ।
ते माटे करुणा दया- निर्वद्य एह तदर्थ ॥ २०१ ॥
तिण सु भाव सराग नी, दया ज सावद्य सोय ।
अष्टादश में देखलो, दशम् राग सु जोय ।२०२।
लब्धि अण फोडवबा थकी, वीत राग आवेह ।
वे साधु नवि राखस्ये, ए पिण वृत्ति विपेह ।२०३।
तिण सु सराग भाव करि, सीतल तेजु लेश ।
लब्धि फोडवी राखीयो, गोशालक सुविशेष २०४
गोशालक हणवा भणी, बाल तपश्वी जेह ।
उष्ण तेजु लेश्या प्रते, मूकी पाठ विपेह ॥२०५॥
भगवंत अनुकम्पा करी, लेश्या सीतल तेह ।
मूकी गोशालक भणी, रक्षण कारण कहेह ।२०६।
उष्ण तेजु लेश्या कही, सीतल तेजही लेश ।
तेजु लेश ए बिहु कही, पाठ विषे सु विशेष. २०७
उष्ण तेज लेश्या प्रते, तापस मूकी सोय ।
लेश्या सीतल तेज प्रति, प्रभु मूकी अवलोय २०८
तिण सु तेजु लब्धि प्रति, फोडी नें भगवान ।
गोशाला नें राखीयो, छद्मस्थ थकां पिछान ।२०९।
केवल ज्ञान थयां पछे, लब्धि फोडवणी नांहि ।
वहु ठामें वर्जी प्रभु, देखो सूत्रे मांहि ॥ २१० ॥

पद छत्तीसम् पन्नवणा, वैक्रिय लब्धिज ताय ।
फोड्या कृया जघन्य त्रण, उत्कृष्ट पचही पाय ।२११।
इमहिज आहारिक लब्धि प्रति, फोव्याथी पहिछान ।
जघन्य तीन कृया कही, उत्कृष्ट पच सुजान ॥२१२॥
इमहिज तेजू लब्धि प्रति, फोडे तेहने जोय ।
जघन्य तीन कृया कही, उत्कृष्ट पच ज होय ।२१३।
तेजु लब्धि जे फोडवी, प्रभु छद्मस्थ पणेह ।
केवल लह्या कृया कही, वैक्रिय नीपरे एह ॥२१४॥
सराग भाव करि कार्य कृत, तास स्थाप स्यु होय ।
केवल लह्यां पछे कह्यो, तास स्थाप छे सोय ।२१५।
कोई कहे अनुकम्प करि, प्रभु राख्यो गोशाल ।
ते माटे इहा धर्म छे, उत्तर तास निहाल ॥२१६॥
वृद्ध तणी अनुकम्प करि, कृष्णो ईंट उपाड ।
तासघरे मेली कही, अतगडे अधिकार ॥ २१७ ॥
सुलसां नी अनुकम्प करि, पुत्र देवकी नांज ।
मरया हरण गवेपि सुर, सूत्र अतगड साज २१८
पथ्य धारणी भोगव्यो, गर्भ अनुकम्पा आंण ।
अभय अनुकम्पा सुरकरी, दोहलोपूरयो जांण २१९
हरकेशी मुनिवर तणी, अनुकम्पा करि यक्ष ।
रुधिर वमता छात्र कृत, उत्तराध्ययन प्रतक्ष ।२२०।

तालि मुनि नीं व्यावच अर्थ, छात्रां नें दु ख देह ।
ए पिण सावद्य जाणवो, तिम अनुकम्प कहेह ।२२१।
अनुकम्पा त्रश जीवनीं, आणी नें मुनिराय ।
बांधे बांधतां प्रति, अनुमोद्या दंड़ आय ॥२२२॥
इमहिज छोडे छोडतां प्रति, मुनि जे अनुमोदेह ।
निशीथ उद्देशे बारमें, दड चौमासी कहेह ॥२२३॥
अनुकम्पा ए सहु कही, पाठ विषे पहिछाण ।
जिन आज्ञा नाहिं तेह में, तिण सु सावद्य जाण २२४
तिम प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित आंण ।
तेजु लब्धिज फोडवी, तिण सु सावद्य जाण २२५
आहारिक लब्धि फोडवे, अधि करण कह्यो तास ।
शतक सोलमें भगवती, प्रथम उद्देश विमास ।२२६।
वैक्रिय लब्धि फोडवे, कह्यो विराधक ताहि ।
भगवती तीजे शतक में, तुर्य उद्देशा मांहि ।२२७।
जघा विद्या चारणा, लब्धि फोडवी जाय ।
ते थानक विन पडिकम्यां, कह्या विराधक ताय ।२२८।
भगवती गौतम गुण भर्ण, तेजु लेश्या प्रति ताहि ।
सकोचे ते गुण कह्यो, फोडयां गुण कह्यो नाहिं २२६
इत्यादिक बहु सूत्र में, तेजु वैक्रिय आदि ।
मुनि नें लब्धि न फोडणी, देखो धर अहल्लाद ।२३०।

जो लब्धि फोड गोशाल नें, राख्या धर्मज होय ।
तो बे मुनि प्रति राख्या न क्यूं न्याय विचारी जोय ॥
जब कहे बे मुनिवर तणों, मृत्यु जांण भगवान ।
तिण कारण राख्या नहीं, हिव तसु उत्तर जाण ।२३२।
वृत्तिकार तो इमकह्यो, सीत राग भावेह ।
लब्धि अण फोडयां थकी, वलि अवश्य भावी छे एह
सीतल तेजू लब्धि प्रति, अण फोडयायी ख्यात ।
तिण सु सीतल तेजु पिण, किम फोडे जगनाथ २३४
ज्यों प्रभु बे मुनिवर तणों, जाणयों मृत्यु जिवार ।
तो मुनि गौतम आदि त्यां, क्यु नहिं कीधी सार२३५
गौतम आदि विषे हुती, सीतल तेजू लेश ।
त्यां लब्धि फोड राख्या न क्यु, बे मुनि प्रति सुविशेष
जब कहे गौतम आदि प्रते, वर्ज्यां प्रभुजी ताय ।
तिण सु मुनि राख्या न बे, निसुणो तेहनों न्याय२३७
प्रभुतो आनन्द नें कह्यो, तु मुनि प्रते कहेह ।
धर्म प्रति चोयण मत करो, गोशालक थी जेह ।२३८।
पिण मुनि प्रते न बचावणा, इम तो आख्यो नांय ।
तिण सु गौतम आदि जे, मुनि नहीं राख्या कांय२३६
पिण जे लब्धि फोडण तणी, श्रीजिन आज्ञा नांय ।
तिण सु सीतल तेजु प्रति किम फोडे मुनिराय ।२४०।

लब्धि फोड गोशाल नैं, राख्यो श्री भगवान ।
जद छद्मस्थ पणे हुंता, मोह स्नेह वस जान ।२४१।
जलथी नाव भरीजती, देखी नैं मुनिराय ।
गृही भणी बतावणो नहीं, द्वितीय आचाराङ्ग माँय २४२
डूबे आप अनें वलि, जे डूबे, बहु जीव ।
तसु अनुकम्प करे नहीं, रहे सम भाव अतीव ॥२४३॥
मात बचावा ऊठियो, चूलणि पिया पिछाण ।
तसु पोशह भागो कह्यो, सप्तम अङ्ग जाण ॥२४४॥
मिथला बलती देख नमि, रहामो जोयो नाहि ।
देखो उत्तराध्ययन में, नवमें अध्येनें ताहि ॥२४५॥
दशवै कालिक सातमें, देव मनुष तिर्यञ्च ।
विग्रह लड़ता परस्पर, देखी ने मुनि सँच ॥२४६॥
एहनी होवे जीत फुन, एहनी होवे हार ।
एहवु न कहे महामुनी, हिय तसु न्याय विचार २४७
हार जीत नवि वछवी, तो तास विचे पड संत ।
केम करावे हार जय, देखोजी भन्ति मत ॥२४८॥
छेद दरश मुनि तणी, कृपा वेद्य नैं ख्यात ।
शतक सोलमें भगवती, तृतीय उद्देश सजात॥२४९॥
आज्ञा श्री जिनवर तणी, जेह कार्य में नांय ।
तेह कार्य कीधां छता, धर्म पुराय किम थाय ॥२५०॥

तिमज लब्धि फोड़ण तणी, श्रीजिन आण न देह ।
धर्म सुगण किम तेह में, न्याये निरणो एह ।२५१।
कोई कहै छद्मस्थ प्रभु, फोडी लब्धि जिवार ।
दण्ड लियो स्यु तेह नों, हिव तसु उत्तर सार ।२५२।
राजमती नें बोलियो, विषय वचन रहनेम ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसु, पिण लियो हुस्ये धर पेम
जल विन पात्री नाव जिम, अइमुत्ते ऋषि तिह्न
प्रायश्चित चाल्यो न तसु, पिण लीधो हुस्ये [illegible]
मोह वस सीहो मुनी, रोयो मोटे साद ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसु, पिण लीधो हुस्ये स[illegible] ।२५५।
धर्म घोषना सिस जे, आवी चोहटा मांहि ।
नाग श्री नें निन्दी तसु दण्ड चाल्यो नाहि ।२५६।
हणसे हय नृप सारथी, नाम सुमङ्गल [illegible]
प्रायश्चित चाल्यो न तसु, शतक पंनरम उद्दत ।२५७।
कोई कहै आलोयणा, पडिक्कमणा कही तास ।
तिण सु ए दंड तेहनुं, हिव उत्तर सुविमास ।२५८।
धर्म समय नुं पाठ ए, सघक धर्मो आदि ।
वहु मुनि नों समुच्चय कह्यो, तिम ए पिण संवाद ।२५९।
जंघा विद्या चारणा, तस्स ठाणस्स सोधि ।
आलोइय पडिक्क मिय, एहवो पाठ सुजो ।२६०।

लब्धि फोड गोशाल नैं, राख्यो श्री भगवान ।
जद छद्मस्थ पणैं हुंता, मोह स्नेह वस जान ।२४१।
जलथी नाव भरीजती, देखी नैं मुनिराय ।
गृही प्रते बतावणो नहीं, द्वितीय आचाराङ्ग माँय २४२
डूबै आप अनें चलि, जे डूबै बहु जीव ।
तसु अनुकम्प करे नही, रहे सम भाव अतीव ॥२४३॥
मात बचावा ऊठियो, भूलणि पिया पिछाण ।
तसु पोशह भागो कह्यो, सप्तम अङ्ग जाण ॥२४४॥
मिथला बलती देख नमि, स्हामों जोयो नांहि ।
देखो उत्तराध्ययन में, नवमें अध्येनें तांहि ॥२४५॥
दशवै कालिक सातमें, देव मनुष तिर्यञ्च ।
निग्रह लडता परस्पर, देखी नें मुनि संच ॥२४६॥
एहनी होवे जीत फुन, एहनी होवे हार ।
एहवु न कहे महामुनी, हिव तसु न्याय विचार २४७
हार जीत भवि बछवी, तो तास विचे पड सत ।
केम करावे हार जय, देखोजी मन्दि मत ॥२४८॥
छेदे हरश मुनि तणी, कृपा वैद्य नें ख्यात ।
शतक सोलमें भगवती, तृतीय उद्देश संजात ॥२४९॥
आज्ञा श्री जिनवर तणी, जेह कार्य में, नॉय ।
तेह कार्य कीधां छतां, धर्म पुण्य किम थाय ॥२५०॥

तिमज लब्धि फोड़णा तणी, श्रीजिन आण न तेह ।
धर्म पुण्य किम तेह में, न्याय विचारो एह ।२७१।
कोई कहै छद्मस्थ प्रभु, फोडी लब्धि जियार ।
दण्ड लियो स्युं तेह नों, हिव तसु उत्तर सार ।२७२।
राजमती ने बोलियो विषय वचन रहनेम ।
प्रायश्चित चाल्यो नतसु, पिण लियो हुस्ये धर प्रेम
जल विन पाणी नाव जिम, आइमुत्ते ऋषि दिन्द ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लीधो हुस्ये अति
मोह वस मेहो मुनी, रोयो मोटे साद ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लीधो हुस्ये सन्त २७४
धर्म घोषना संत जे, श्रायी चोहटा मांहि ।
नाग श्री रेली निन्दी तसु दण्ड चाल्यो नांहि २७६
हणसे हय नृप सारथी, नाम सुमङ्गल ...
प्रायश्चित चाल्यो न तसु, शतक पनरम् उद्दत ।२७७।
कोई कहै आलोयणा, पडिक्कमणा कही ताम नो
तिण सुं ए दंड तेहनुं, हिव उत्तर सुविमास ।२७८।
चर्म समय नें पाठ ए, सधक धन्नो आदि ।
बहु मुनि नों समुच्चय कह्यो, तिम ए पिण संवाद २७९
जंघा विद्या चारणा, तस्स ठाणस्स सोय ।
आलोइय पडिक्कमिय, एहवो पाठ सुजोय ।२८०।

लब्धि फोडी ते स्थान प्रति, आलोवी गुणवन्त।
वलि पडिकमें ते मुनी, पद आराधक हुन्त ।२६१।
मुनी सुमङ्गल स्थानके, तस्स ठाणस्स नाहिं ।
तिण सु लब्धि फोड़ण तणो, दण्ड कह्यो नहिं ताहि।
पिण नृप हय अरु सारथी, हणसे दण्डज तास ।
तेह मुनी लेस्ये सही, कह्यु सव्वठ सिद्ध वास, २६२
इत्यादिक बहु ठामही, प्रायश्चित चाल्या नाहिं ।
पिण लिया हुस्ये महामुनी, गुणी देखोजी दिल माहिं
तेजु लब्धि जे फोडवे, तास क्रया आण पच ।
केवल लह्यां कह्यो प्रभु, तिणे सु दण्ड सुसत्र ।२६५।
कल्पातीत हुता प्रभु, छे ए साँची वाण ।
पिण किण गुणठाणे तिके, कहिये चतुर सुजाण २६६
प्रभुजी चारित्र लियां पछी, श्रेणि चढ्या पहलाज ।
सप्तम गुण छट्ठे वली, बे गुणठाणा समाज ॥२६७॥
सप्तम गुणठाणा तणी, उत्कृष्टी अवलोय ।
अन्तर महुरत स्थिति छे, छट्ठे बहु स्थित जोय।२६८।
छट्ठा गुणठाणा विषे, आखी च्यार कषाय ।
षट् लेश्या सज्ञा चिहु, अशुभ जोग पिण आय २६९
परिचय स्नेह अनुकम्प करि, अक्षीण राग पणेह ।
सराग भाव फुन लब्धि नु, फोडवु पिण लेह २७०

प्रथम छट्ठा गुणठाणा नों, प्रगट भाव ए पेख ।
निर्वंध किम कहिये तसुं, न्याय विचारी देख ।२७१।
जेह कार्य नों केवली, आज्ञा न दिये कोय ।
धर्म पुराय नाँहिं तेह में, हिये विमासी जोय ।२७२
जेह कार्य नी केवली, आज्ञा देवे आप ।
धर्म पुराय छे तेह में, तिहां नाँहिं किञ्चित पाप ।२७३।
केई जिन आज्ञा में पाप कहै, धर्म जिन आज्ञा बार ।
विहु विध अशुद्ध प्ररुपवे, किम पामें भव पार ।२७४।
जिनधर्म जिन आज्ञा दिये, जिन धर्म सिखावे आप ।
जे धर्म कहे आज्ञा विना, ते कँवण प्ररुप्यो थाप २७५
आज्ञा बारे धर्म रो, कँवण धर्णी अवलोय ।
हात जोडि पूछ्या थकां, कुण आज्ञा दे मोय ।२७६।
देव गुरू तो मौन रहै, नाँहिं अनुमोदे अंश मात्र ।
तो आज्ञा बाहिर धर्म री, उत्पतिरो कुण नाथ ।२७७।
संवर नैं वलि निरयरा, दोय प्रकारें धर्म ।
जिन आज्ञा मे ए बिहु, ते थी शिवसुख पर्म ।२७८।
दोय प्रकारे धर्म वलि, श्रुत फुन चरित पिछाणों ।
जिन आज्ञा ए विहु विषे, समर्भो सुगण सुजाण २७९
पंच महाव्रत साधुरा, श्रावक नों व्रत बार ।
जिन आज्ञा में ए विहु, आज्ञा बार असार ॥ २८० ॥

तिणसुं जिन आज्ञा तणी, राखो सुगण प्रतीत ।
धर्म जिन आज्ञा बारियो, ते गया जमारो जीत २८१

॥ अथ हितशिक्षा ॥

दुख बहु नरक निगोदनां, सह्या अनन्ती वार ।
धर्म जिन आज्ञा शिर धरे, हुवे तास निस्तार २८२
मनुष जन्म दोहिलो लह्यो, लही सामग्री सार ।
पंच महाव्रत आदरी, आराध्यां भव पार ॥२८३॥
जो चरित धर्म ग्रही नहिं सके, तो श्रावक ना व्रत बार।
निर अतिचारे पालिया, पामें भव दधि पार २८४
जो बार व्रत ग्रही नसकैं, तो समदृष्ट उदार ।
देव गुरू धर्म ओलख्यां, सुख पामें श्रीकार ।२८५।
जो पूरी समझ पडे नहीं, तो गुणवन्त रा गुण गाय ।
कोइक रसायण आवियां, पातिक दूर पुलाय २८६
पोते व्रत पाले नहीं, पाले ज्यासुं द्वेष ।
दोय मूर्ख तिण नें कह्या, प्रथम आचारङ्ग देख २८७
गुणवनरी निन्दा कियां, कर्म तणो बंध होय ।
तेह कर्म थी दुःख लहै, नरक निगोदे सोय ॥२८८॥
तिण सुं हित सिक्षा भली, धारे सुगण सुजाण ।
राग द्वेष छांडी करी आराधे जिन आण ।२८९।

॥ कलश ॥

॥ चाल गीतक छन्द ॥

जिन वयण गुण मणी रयण सार उदार देखी सग्रह्या, अवि तथ्य पथ्य सु अर्थ जे मुझ भ्यासना, मैं जिम कह्या। अति श्रिष्ट मिष्ट गरिष्ट प्रवर विशिष्ट जिन वच आयत। वच विरुद्ध को आयो हुवे मुझ तास मिच्छामि दुःकृत ॥ १ ॥ उगणीसे तेतीस वर्षे विद द्वादशी फागुण वही, वर शहर बीदासर विषे हद श्रमण एकावन सही। फुन अर्जका इक शय तिहां गणी आंण समति सोभती। वर समय सार उदार निर्णय कीध जय जश गणपती ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भिक्खू भारीमाल फुन, तृतीय पाट ऋषि राय।
तास पसाए सुगण वृद्धि, जय जश हर्ष सराय ॥१॥
तिण काले भिक्खू-गणे, मुनिवर सिरार दोय।
इक सह त्राणु अर्जका, गणी आणा अवलोय ॥२॥
उत्तर तुम्हे मगावियां, हमे लिखाव्या नॉय।
ते माटे ए प्रश्न नां, उत्तर दोहा वणाय ॥ ३ ॥
दोहा ग्रहस्थ कंठ करी, निज मति थकी लिखेह।
तिके खोट ज्यो को लिखी, तो मुझ दोपण मत देह ४

॥ इति ॥

॥ अथ छव्वीसमूं प्रतिमा वैराग नौ हेतु कहै तेह नु उत्तर ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वैराग्य नौं, हेतु प्रतिमा एह ।
जिन प्रतिमा देखी करी, पर वैराग लहेह ॥ १ ॥
ते माटै वन्दनीक है, जिन प्रतिमा जग मांय ।
हिव तेहनु उत्तर कहुं, सांभल जो चित्तल्याय ॥२॥
वृषभ देख प्रति बूझियो, कर कंडू नरराय ।
दुमुह इन्द्रध्वज स्थम्भ प्रति, देख सम्वेग सुपाय ।३।
चूडि सूं प्रति बूझियो, नमि नृपाति तिह काल ।
अम्ब देख प्रति बूझियो, नगई नाम भूपाल ।४।
उत्तराध्ययन इक वीसमैं, समुद्र पाल सम्वेग ।
पायो तस्कर देख नैं, देखो तज उद्वेग ॥ ५ ॥
सम्वेग पाठ तणों अर्थ, अविचूरि में ख्यात ।
सम्वेग ना हेतु भणी, सम्वेग चोर कहात ॥ ६ ॥

॥ सूत्र गाथा ॥

सं पत्ति ह्यं सम्वेगं, समुद्दपालो इणं मब्बवी, ग्रहो असुहाण कम्माणं; निज्जाणं पाविगं इमं, ॥ उत्तराध्ययन २१ वें गाथा ६ मीं ॥

॥ अत्र अविचूरी ॥

तामिति तथा विध द्रव्य दृष्ट्वा संवेग समार वैमुख्यतो मुक्त्य ऽभिलाषस्तद्धेतुत्वात्सोऽपि भवेत्स्व समुद्रपाल इव वध्यमान वधा प्रशुभानां पापकानां कर्म्मणां मनुष्ठानानां निर्धान मव सान पापक मशुभ इव मत्पद्य मसौवराकी वद्धार्थ मित्य नीय ते इति भावः ।

॥ वार्त्तिका ॥

इहां कहै, ते कहता ते, तथा विध द्रव्य देखी नें सम्वेग ते संसार विमुखपणो मुक्तिनी अभिलाषा ते सम्वेग नों हेतु पणा थकी, सोपि कहतां तिको चोर विषयपनेंग, जिम पापकारी कर्म ते अनुष्ठान ना छेहडे अशुभ ए मत्पक्ष राके वध नें अर्थे इह विधे लेजाय छै, एटले सम्वेग नों हेतु चोर ते देखी नें समुद्रपाल थोदयो अशुभ कर्म नो फल ए भोगवे छै।

॥ दोहा ॥

सम्वेग नों हेतु कह्यों, तशकर ने अवलोय ।
पिण गुण नहिं छै ते भणी, वन्दन योग न कोय ।७।
वृषभादिक देखी करी, करकण्डू आदेह ।
बूझ्या पिण वृषभादि ते, वन्दनीक न कहेह ॥८॥
मुनि वेसें जे पासत्थो, तसु देखी नें सोय ।
वैराग पावे पिण तिको, वन्दन योग न कोय ।९।
तिम जिन प्रतिमा देख नें, पावे जे वैराग ।
पिण ते वन्दन योग नहीं, देखो मत पक्ष त्याग ।१०।

ज्ञान दर्शन चारित तणा, गुण नहिं छै जे माँय ।
ते सम्वेग नों हेतु हुवै, पिण वन्दनीक नहिं थाय ।११।
मुनिवर प्रति देखी करी, द्वेष धरे मन कोय ।
द्वेष तणों हेतु मुनी, पिण निन्दनीक नहिं होय ।१२।
श्रवांनु भूत्ति मुनि तणा, वचन सुणी गोशाल ।
कोप्यो सिघ्र उतावलो, भस्म कियो तेह काल ।१३।
कोप तणो हेतु मुनी, पिण गुण सहित सु गत ।
ते माटे निन्दनीक नहीं, देखोजी बुद्धिवत ॥१४॥
सुनक्षत्र नां वचन सुणि, धर्यु गोशाले द्वेष ।
द्वेष तणो हेतु तिको, पिण निन्दनीक नांहि पेख ।१५।
बीर प्रभुना वचन सुणि, कोप्यो सिघ्र गोशाल ।
कोप तणा हेतु प्रभु, पिण निन्दनीक मत न्हाल ।१६।
छद्मबीर प्रति देखि नें, जन बहु द्वेष धरेह ।
दु:ख दीधा अति आकरा, आख्यो धुर अङ्गेह ॥१७॥
द्वेष तणा हेतु प्रभु, पिण ते गुणा सहीत ।
तिणसु ते निन्दनीक नहिं, देखोजी धरप्रीत ।१८।
वस्तु जे गुण सहित प्रति, देखी द्वेष लहेह ।
द्वेष तणो हेतु तिका, पिण निन्दनीक नहि जेह ।१९।
वस्तु जे गुण हीण अति, देखि सम्वेग लहेह ।
सम्वेग नो हेतु तिका, पिण निन्दनीक नहिं तेह ।२०।

॥अथ सत्तावीसमा ब्राह्मी लिपि अधिकार॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे अङ्ग पंच में, ब्राह्मी नीं लिपिसार ।
नमस्कार तेह नैं कन्यु, हिव तसु उत्तर धार ॥१॥
नमो बंभीए लिवी ए, लिपि कत्ता नाभेय ।
ब्राह्मी सहित जिन धुलिपिक, अर्थ धर्मसी एह ॥२॥
पाथा नां कर्त्ता भणीं, पाथो कहिए ताहि ।
एवं भूतनय नें मतं, अनुयोग द्वारे मांहि ॥ ३ ॥
अथवा लिपि जे भाव लिपि, जे मुनि नें आधार ।
नमस्कार छै तेह नें, एहवुं दीसे सार ॥ ४ ॥
तीर्थ नाम जिम सूत्र नु, ते सघ ने आधार ।
तिण सु सङ्घ ने तीर्थ कहुं, तिम भावे लिपि सार ।५।
वृत्तिकार द्रव्य लिपि कही, तेह लिपि गुण सुन्य ।
नमस्कार तेहनें करेइ, ते तो बात जघुन्य ॥ ६ ॥
द्रव्य निक्षेपो गुण रहित, वदन जोग्य न तांम ।
समवायङ्ग देखल्यो, द्रव्य भाव जिन नाम ॥ ७ ॥
भरत एरवत खेत्र नां, अनागते जिन नाम ।
समचै चौवीस नाम जिन, वन्दे पाठ न तांम ॥८॥

वले एरवत खेत्र नीं चउवीसी वर्त्तमान ।
ठाम ठाम वन्दे कह्यु, ए-गुन सहित सुजान ॥६॥
वर्त्तमान चउ वीस ए, भर्त्त खेत्र नी ताहि ।
ठाम ठामे वंदे कह्यों, जोवो लोगस्स माहि ॥१०॥
ते लेखे द्रव्य लिपि भणी, द्रव्य सुत्र नें सोय ।
नमस्कार किम किजीए, हिये विमासी जोय ॥११॥
वृत्तिकार द्रव्य लिपि भणी, थाप्यो छे नमस्कार ।
सुत्र थकी मिलतो नथी, एह अर्थ अवधार ॥१२॥
तथा पत्र में जे लिख्या, अत्तर ना आकार ।
वन्दनीक जो ते हुवे, तो लिपि अष्टा दश धार ॥१३॥
अष्टादश लिपि नें विषे, वेद पुराण सपेख ।
कुरान जोतिष पिण हुवे, वदनीक तुम्ह लेख ॥१४॥
अष्टादश लिपि नें विषे, वर्ण संज्ञा संपेख ।
सहु पुस्तक मे जे लिख्या, वंदनीक तुम्ह लेख ॥१५॥
वैदक निकथा वारता, मन्त्र जन्त्र फुन तन्त्र ।
कोक सामुद्रिक शास्त्र ए, लिपि में सहु आवंत ॥१६॥
पाप शास्त्र गुन तीश फुन, वर्ण स्थापना पेख ।
ए अठारे लिपि विषे, वन्दनीक तुम्ह लेख ॥१७॥
वीतराग तो तेह नें, पाप शास्त्र आख्यात ।
द्रव्य लिपि कहिए तेह नें, वन्दनीक किम थात ॥१८॥

जो वन्दनीक द्रव्य लिपि हुवे, द्रव्य लिपि कही अठार।
तेह विषे सहु आविया, किम वन्दे अणगार॥२९॥
ते माटे ते भाव लिपि, वा करता नाभेय।
ऋषभ चर्ण गुण युक्त नें, नमस्कार सुगुणेह॥३०॥

॥ वार्तिका ॥

कोई कहै भगवतीरे आदिमें णमोबंभीए लिविए । ए शब्द कही पछे कह्यो णमो सुयस्स ते लिपि नैं नमस्कार करी सूत्र नैं नमस्कार कर्यु ते भाव श्रुत नैं नमस्कार कर्यो छै ते भाव सूत्र नैं विषे भावलिपी पिण आयगइ तो पूर्वे भाव लिपि नैं नमस्कार कीधो तेहनु इस्युं कारण णमोबंभीए लिविए अनें नमो सुयस्स ए बेपद किमकह्या तेहनु उत्तर॥ दशवैकालिक अध्येन आठमें गाथा ४१ मीं में कह्यो "कुम्मुव्व" अल्लिण पल्लिण गुत्तो, काछवा नीपरे अल्लीण ते इन्द्रि गुप्त पल्लिण ते अत्यन्त लीन थको गुप्त इहां बेपद कह्या तथा दशवैकालिक अध्ययन चौथे कह्यो पृथिवी काय ऊपर न लिहज्जा कहितां थोड़ो सो अथवा एक वार लिखै नहीं, न विलिहेज्जा कहतां बहुवार लिखै नहीं इहां पिण बेपद कह्या, तथा उत्तराध्ययन पहले आसवये सद्दे वा न सिय इक्क कयाइवि गुरुई, आसव ते कहतां एकवार बोलाव्यो वा ते अथवा सबदे करतां वार वार बोलाव्यो थको शिष्य बैठो रहै नहीं कदाचित पिण इहां पिण बेपद कह्या, तथा उत्तराध्ययन इग्यारमें नासीले कहितां सर्वथा चारित्र नी विराधना नथी, विसीले कहतां देशथकी चारित्रनी विराधना नथी इहां पिण देश अनें सर्व ए बेपद कह्या, तथा वृहत्कल्प उदेशै तीसरे भातर घरनें विषे साधु नैं न कल्पै निद्रा इत्यपया कहितां थोड़ी नींद लेवी

पपला इत्तएवा काहितां विशेष ऊपनो इहां पिण बेपद कह्या, इत्यादिक अनेकठामे बेपद कह्या तिम इहा पिण बेपद जाणवा लिपि शब्दे भाव लिपि ते द्रव्यथकी श्रुत ज्ञान अने नमो सुयस्स ते सर्व श्रुत ज्ञान कह्यो तथा लिपिना करता ऋषभ देवनैं लिपिक कहिए त चारित्र युक्त मधम जिननै नमस्कार ।

॥ अत्र टीका ॥

अथ च माग् वाख्याता नमस्काराादिकाग्र प वृत्तिकृत्ता न व्याख्याता कुतोपि कारणा दिति, ए भगवती नी वृत्ति मैं अभय देव सूरे कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

नमस्कारादिक ताहिरे, रचना पूर्वं कही जिका ।
मूल वृत्तिगे माहिरे, न कही किण कारण तिका ॥१॥
इम कह्यो वृत्तिकाररे, ते माटे हिव तेहनुं ।
प्रवर न्याय जे साररे, बुद्धिवन्त हिये विचार ज्यो ॥२॥

॥इति॥ श्रीमज्जयाचार्य कृत हित शिक्षाऽस्सी प्रश्नोत्तर तत्वबोध॥

